विषय-सूची

1. लोक नृत्य
2. लोक नाट्य
3. लोक वाद्य
4. चित्रशैली
5. लोक कला
6. लोक गीत
7. लोक संगीत
8. शास्त्रीय संगीत
9. हस्तकला
10. लोक सम्प्रदाय
11. लोक संत
12. लोक देवता
13. लोक देवी
14. प्रमुख धर्म
15. दुर्ग
16. हवेलियाँ
17. मंदिर
18. मूर्तिकला
19. अन्य स्थापत्य
20. प्रमुख त्योहार
21. प्रमुख मेले
22. वेशभूषा
23. आभूषण
24. प्रथाऐं
25. रीति-रिवाज
26. बोलियाँ
27. साहित्य की विधाऐं

1. लोक नृत्य

राजस्थान के लोक नृत्यों को चार भागों में बांटा गया है –

1. जातीय लोक नृत्य
2. व्यावसायिक लोक नृत्य
3. क्षेत्रीय लोक नृत्य
4. सामाजिक/धार्मिक लोकनृत्य

जातीय नृत्य

- **भीलों के नृत्य :** गैर, गवरी, नेजा, द्विचकक्री, युद्ध
- **गरासियों के नृत्य:** बालर, लूट, कूद, गौर, जवारा, मोरिया
- **मेवों के नृत्य:** रणबाजा, रतबई
- **कालबेलियों के नृत्य:** इंडोडी, पणिहारी, शंकरिया, बागडिया
- **कथौडियों के नृत्य :** मावलिया, होली

अन्य जातीय नृत्य

सहारिया जाति	–	**शिकारी नृत्य**
गूजर जाति	–	**चरी नृत्य**
कंजर जाति	–	**चकरी नृत्य**
कामडिया जाति	–	**तेरहताली**

क्षेत्रीय नृत्य

शेखावाटी	–	**गींदड, चंग, कच्छी घोडी**
मारवाड	–	**घुडला, डांडिया**
बीकानेर	–	**अग्नि नृत्य**
भरतपुर, अलवर	–	**बम रसिया**
जालौर	–	**ढोल**
झालावाड	–	**बिंदोरी**
नाथद्वारा	–	**डांग नृत्य**
भीलवाडा	–	**नाहर नृत्य**

व्यावसायिक नृत्य

1. भंवाई नृत्य
2. तेरहताली
3. कालबेलियों के नृत्य
4. कंजरों का चकरी नृत्य

गैर या घोर नृत्य

- गैर **भीलों** का लोक नृत्य है।
- यह **होली के दूसरे दिन** से प्रारंभ होकर 15 दिनों तक चलता है।
- यह नृत्य **मेवाड व बाडमेर** क्षेत्र में किया जाता है।
- गैर नृत्य **केवल पुरूषों** का नृत्य है।

गीदड नृत्य

- शेखावाटी क्षेत्र में होली के अवसर पर ''**डांदा**'' रोपना रस्म (प्रहलाद स्थापना) के साथ यह नृत्य प्रारभ हो जाता है।
- गीदड नत्य **विशुद्ध पुरूषों** का नृत्य है।
- गीदड नृत्य में कुछ पुरूष स्त्रियों का स्वांग भरते हैं जिन्हें **गणगौर** कहा जाता है।
- इस नृत्य में **नगाडे की तान** पर युद्ध करते हुये नृत्य किया जाता है।

चंग नृत्य

- चंग नृत्य **शेखावाटी** का नृत्य है।
- यह नृत्य **होली के अवसर** पर किया जाता है।
- इस नृत्य में प्रत्येक पुरूष के पास एक **चंग** होती है जिसे बजाते हुये पुरूष नृत्य करते है।

डांडिया नृत्य

- यह **मारवाड** का प्रमुख लोक नृत्य है।
- इस नृत्य में 20-25 पुरूष हाथों में छडियां लिये हुये उनको टकराते हुये **गोल घेरे** में नृत्य करते है।
- यह नृत्य **होली** के बाद होता है।
- इस नृत्य में धमाल गीत एवं होली के गीत गाये जाते हैं जिनमें अक्सर **बडली के भैंरोजी** का गुणगान रहता है।

ढोल नृत्य

- यह नृत्य **जालौर** क्षेत्र में विभिन्न जातियों द्वारा **विवाह** आदि के उत्सव पर आयोजित किया जाता है।
- ढोल नृत्य पुरूष प्रधान चमत्कारिक नृत्य है जिसमें ढोल को छाकना शैली में बजाया जाता है।

अग्नि नृत्य

- यह **बीकानेर** का नृत्य है।
- पुरूष प्रधान इस नृत्य में जसनाथी सम्प्रदाय के लोग अग्नि के अंगारों पर **फतै-फतै** कहते हुये नृत्य करते हैं।
- इस नृत्य का उद्गम स्थल **कतरियासर, बीकानेर** है।

बम नृत्य

- यह **भरतपुर-अलवर** का नृत्य है। (मुख्यत: भरतपुर)
- बमरसियां नृत्य अलवर-भरतपुर में **नई फसल** के आगमन पर **फाल्गुन** माह में आयोजितकिया जाता है।
- यह पुरूषों का नृत्य है।

व्यावसायिक लोकनृत्य

भवाई

- **उदयपुर** संभाग की **भवाई** जाति क पेशेवर नृत्य है।
- भवाई नृत्य अपनी चमत्कारिता के लिये प्रसिद्ध है।

भवाई नृत्य की विशेषता :-

- **सिर पर मटके रखकर नृत्य करना, जमीन पर मुंह से रूमाल उठाना,**
- **कांच के टुकडों पर नृत्य करना, गिलास पर नाचना,**
- **थाली के किनारों पर नृत्य करना, तेज तलवार की धार पर नृत्य करना आदि ।**
- **भवाइ इसकी प्रमुख विशेषतायें है।**
- प्रमुख कलाकार-**रूपसिंह शेखावत, ताराशर्मा, अस्मिता काला।**

तेरहताली नृत्य

- यह नृत्य बाबा **रामदेव** की आराधना में **बामड** जाति की महिलाओं द्वारा किया जाता है।
- यह एक मात्र नृत्य है जो कि **बैठकर** किया जाता है।
- यह नृत्य **13 मजीरों** की सहायता से किया जाता है।
- तेरहताली नृत्य का उद्‌गम पादरला गांव पाली है।
- इस नृत्य में मुख्य रूप से तंदूरा/चौतारा वाद्य यंत्र का प्रयोग किया जाता है।
- प्रमुख कलाकार – **मांगी बाई और लक्ष्मण दास कामड**

सपेरा नृत्य / कालबेलिया नृत्य

- सपेरों की मित्र जाति – **कालबेलियों**
- **संकरिया नृत्य** –कालबेलियों का **युगल** नृत्य जो कि **प्रेमकथा** पर आधारित है।
- **पणिहारी नृत्य** – कालबेलियों का **पणिहारी गीतों** पर आधारित नृत्य।
- **बाडडिया नृत्य** – कालबेलियों **स्त्रियां भीख** मांगते समय करती हैं।
- **इंडोडी नृत्य** –कालबेलियों का **सजावटी नृत्य** जो मिश्रित रूप से गोल घेरे में किया जाता है।
- कालबेलिया नृत्य की प्रसिद्ध नृत्यांकना – **गुलाबो**

चकरी नृत्य

- यह नृत्य कंजर जाति की **अविवाहित युवतियों** के द्वारा किया जाता है।
- यह **हाडौती** क्षेत्र का प्रमुख नृत्य है।
- प्रसिद्ध नृत्यांगना – **शांति, फिल्मा, फुल्मा**

कच्छी घोडी नृत्य

- यह शेखावाटी क्षेत्र का **पुरूषों** का लोक नृत्य है जिसमें नृतक **बांस की घोडी** को कमर पर बांध कर **दुल्हे जैसा वेश** बनाकर **पंक्तिबद्ध** रूप से नृत्य करते हैं।
- यह शेखावाटी क्षेत्र में **विवाह** आदि के अवसर पर किया जाता है।
- यह नृत्य **ढोल बांकिया** व **थाली** के साथ पैटर्न प्रधान नृत्य है।

जातीय लोकनृत्य

भीलों के नृत्य

गैर नृत्य –यह नृत्य **केवल पुरूषों** द्वारा किया जाता है जिसमें पुरूष हाथों में छडियां लेकर **गोल घेरे** में नृत्य करते हैं।

- यह नृत्य **होली के अवसर** पर किया जाता है।
- इसे **घेर नृत्य** भी कहा जाता है।
- **गवरी नृत्य** – इसे **राई नृत्य** भी कहा जाता है।
- **उदयपुर संभाग** के **भीलों** का धार्मिक नृत्य जो मुख्यत: भाद्रपद या अश्विन माह में लगभग **40 दिनों** तक नृत्य नाटिका के रूप में मंचित किया जाता है।
- **गवरी की थाई**– नाटिका के विभिन्न प्रसंगों को जोडने के लिये किया जाने वाला सामूहिक नृत्य जिसे आदिवासी लोग **गवरी की थाई** के नाम से पुकारतें हैं।
- **नेजा नृत्य**–नेजा **भीलों** का **खेल** नृत्य है जो **होली** के तीसरे दिन किया जाता है।
- इसमें जमीन पर एक खम्भा रोपा जाता है जिसके ऊपरी सिरे पर नारियल रख दिया जाता है खेल के दौरान भील युवक नारियाल को उतारने का प्रयास करता है तथा खंम्भे के चारों ओर घेरे में खडी स्त्रियां कौडे एवं छडी मारकर पुरूष को रोकने का प्रयास करती है।
- **द्विचक्रीय नृत्य** – यह नृत्य विवाह के अवसर पर **भील** पुरूष एवं महिलाओं द्वारा दो चक्र (वृत्त)बनाकर किया जाने वाला नृत्य है।

गरासियों के नृत्य

- **वालर नृत्य** –वालर गरासिया **स्त्री पुरूषों** द्वारा **संयुक्त रूप** से किया जाने वाला नृत्य है।
- वालर नृत्य बिना किसी वाद्य यंत्र के किया जाता है।
- यह दो अर्द्ध वृत्ताकार पंक्तियों (अंदर की ओर स्त्रियां तथा बाहर की ओर पुरूष) में किया जाता है।
- **लूर नृत्य** गरासिया **महिलाओं** द्वारा मेले एवं शादी के अवसर पर किया जाने वाला नृत्य।
- **कूद नृत्य** –गरासिया स्त्री पुरूषों द्वारा बिना किसी वाद्य यंत्र के पंक्तिबद्ध रूप में किया जाने वाला नृत्य।
- **मॉदल नृत्य** –मांदल केवल गरासिया स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला नृत्य है जो गुजरात के गरबा से मिलता है।
- **गौर–नृत्य** – गौर गरासिया स्त्री पुरूषों द्वारा गणगौर के अवसर पर किया जाने वाला नृत्य है।
- **मोरिया नृत्य** – मोरिया विवाह के अवसर पर गणपति स्थापना के बाद रात्रि के समय पुरूषों द्वारा किया जाने वाला नृत्य है।

कथोडी जाति के नृत्य

- **मावलिया नृत्य :** मावलिया **नवरात्रों** में पुरूषों द्वारा किया जाने वाला नृत्य है।
- **होली नृत्य: होली** के अवसर पर महिलाओं द्वारा किया जाने वाला नृत्य है।

मेवों के नृत्य

- **रणबाजा** –मेवों में प्रचलित विशेष नृत्य जिसमें स्त्री पुरुष भाग लेते हैं।
- **रतबई** – रतबई **अलवर** क्षेत्र में केवल मेव महिलाओं द्वारा किया जाने वाला नृत्य है।

गुर्जरों के नृत्य –

- **चरी नृत्य** –चरी किशनगढ के आसपास गूजर जाति की महिलाओं द्वारा किया जाता है।
- इसमें महिलायें सिर पर चरी रखकर उसमें कंकडे (कपास) के बीज व तेल डालकर आग की लपटें निकालते हुये हाथ की कलाईयों को घुमाते हुये स्वच्छन्द रूप से नृत्य किया जाता है।
- प्रमुख नृत्यांगना – **फलकू बाई, सुनीता रावत**

सामाजिक व धार्मिक नृत्य

घूमर नृत्य

- घूमर **मांगलिक अवसरों** पर महिलाओं द्वारा किया जाने वाला नृत्य है।
- इसे राजस्थान के **राज्य नृत्य** की मान्यता दी गयी है।
- घूमर नृत्य को **राजस्थान के नृत्यों की आत्मा** कहा जाता है।
- **सवाई नृत्य** –घूमर नृत्य में मंद गति से कहवा बजता है जिसमें घूमर के साथ आठ मात्रा के कहरवे की विशेष चाल होती है जिसे सवाई कहा जाता है।
- **सवाई** घूमर की प्रमुख विशेषता है।
- **लहंगे के घेरे** को **घुम्म** कहा जाता है।

घुडला नृत्य

- घुडला **मारवाड** (जोधपुर) क्षेत्र का प्रमुख नृत्य है ।
- घुडला नृत्य **चैत्र माह** में स्त्रियों द्वारा सिर पर **छिद्र युक्त मटके** में जलता हुआ दीपक रखकर सामूहिक रूप से वृत्ताकार घेरे में किया जाता है।
- यह नृत्य रात्रि के समय किया जाता है।

कत्थक नृत्य

- कत्थक **शास्त्रीय** नृत्य है।
- कत्थक नृत्य का उद्‌गम **राजस्थान** से ही हुआ है।
- अवध के नवाब **वाजिद अली शाह** के आश्रय से यह नृत्य शैली पूर्ण रूप से विकसित हुयी है।
- **आमद, परण, अदा, सलामी, कसम, मशक** आदि कत्थक की विशेषतायें है।
- कत्थक के पुराने घराने–**जयपुर घराना, लखनऊ घराना, बनारस घराना रायगढ घराना।**

2. लोक नाट्य

ख्याल

- किन्हीं कवित्त रचनाओं पर मंच पर खेल तमाशे के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।
- ख्याल राजस्थानी लोक नाट्य की सबसे लोकप्रिय शैली है।
- ख्याल का प्रवर्तन 18वीं सदी में मनरंग (भूपत के द्वारा किया गया था।
- बोली एवं शैली के आधार पर ख्यालों के निम्न प्रकार हैं –
- **चिढावा की ख्याल** –इसे **शेखावाटी** की ख्याल भी कहा जाता है।
- चिढावा की ख्याल के प्रमुख कलाकार **नानूराम, दूलियाराणा**
- यह **झुंझुनूं** का प्रमुख लोक नाट्य है।
- **कुचामनी ख्याल** – यह **नागौर** का लोक नाट्य है।
- प्रमुख कलाकार – **लच्छीराम**
- कुचामनी ख्याल **ऑपेरा शैली** (इटली) से मिलती जुलती लोक विद्या है।
- **तुर्रा कलंगी ख्याल** – यह मेवाड क्षेत्र की लगभग 500 वर्ष पुरानी लोक विद्या है।
- मेवाड के **तुकनगीर** एवं **शाहअली** ने इसका प्रवर्तन किया।
- इसमें तुर्रा को **महादेव** तथा कलंगी को **पार्वती** का प्रतीक माना जाता है।
- यह एक मात्र अपवाद लोकनाट्य है जिसके मंच की सज्जा की जाती है।
- इसके प्रमुख कलाकार **जयदयाल सोनी** हैं।
- इसमें प्रमुख रूप से **चंग** नामक वाद्य यंत्र का प्रयोग किय जाता है।
- **अली वक्शी ख्याल**– यह **अलवर** क्षेत्र की लोक विद्या है।
- **हैला ख्याल** – यह **दौसा** एवं **सवाई** माधोपुर की लोक विद्या है।
- इस नाट्य कला में **नौबत नामक वाद्य यंत्र** का प्रयोग किया जाता है।
- **जयपुर ख्याल** – **जयपुर** के आस पास का क्षेत्र
- जयपुरी ख्याल के प्रमुख प्रयोग वादी नाटककार – **हमीदुल्ला**
- इस नाट्य कला में **स्त्री पात्रों की भूमिका स्त्रियां ही निभाती है।**

रम्मतें

- **जैसलमेर** एवं **बीकानेर** के ख्यालों को **रम्मतों** के नाम से जाना जाता है।
- रम्मतें **पाटों** (तख्तों) पर खेली जाती है जिस कारण इसे **पाटा संस्कृति** कहा जाता है।
- पाटा संस्कृति **बीकानेर** क्षेत्र की देन है।
- इस विद्या का प्रारंभ लगभग 100 वर्ष पूर्व बीकानेर में होली एवं सावन के अवसर पर प्रतियोगिताओं से हुआ।
- रम्मतों के प्रमुख कलाकार तेज **कवि जैसलमेरी** रहे हैं ।
- रम्मतों के अन्य प्रमुख रचनाकार –**तेजकवि जैसलमेरी, फागू महाराज, सूआ महाराज, मनीराम व्यास एवं तुलसीराम।**
- रम्मतों के प्रमुख खिलाडी या खेलार – **सांई सेवग, गंगदास सेवग, एवं रामगोपाल मेहता।**

तमाशा

- यह लोक नाट्य शैली जयपुर क्षेत्र की प्रमुख विद्या है।
- इस विद्या को जयपुर नरेश **सवाई प्रतापसिंह** ने **आश्रय** दिया था।
- तमाशा विद्या से संबंधित प्रमुख परिवार – **भट्ट परिवार**
- तमाशा के वर्तमान में प्रमुख कलाकार **गोपी जी भट्ट।**

नौटंकी

- नोटंकी मुख्यत**: भरतपुर, अलवर, करौली एवं सवाई माधोपुर** के क्षेत्रों में खेली जाती है।
- नोटंकी की **ब्रज क्षेत्र** की प्रमुख लोक कला है।
- राजस्थान में नोटंकी के प्रवर्तक – **श्री भूरीलाल (डीग)**
- नौटंकी के प्रमुख कलाकार – **पंडित गिर्राज प्रसाद (कामा)**

गबरी नाट्य

- गवरी लोक नाट्य **शिव भस्मासुर** कथानक पर आधारित है।
- गबरी नाट्य राजस्थान के दक्षिणी क्षेत्र या आदिवासी क्षेत्र में खेला जाता है।
  यह नाट्य **भीलों** का लोक नाट्य है।
- यह लोकनाट्य **रक्षाबन्धन** के दूसरे दिन से प्रारंभ होकर **40 दिनों** तक चलता है।
- इसका मुख्य पात्र **बूढिया** कहलाता है।
- अन्य पात्र – **राया**
- गबरी लोक नाट्य के **अंतिम दो पर्व (दिनो)** को कहा जाता है – **घडावत एवं बलावड**
- गबरी लोक नाट्य से संबंधित दो कलाकार – **झामट्या** व **खडकट्या** है जिसमें **झामट्या** क्षेत्रीय भाषा में **कविता** कहता रहता है तथा **खडकट्या** उसे दोहराता रहता है।
- गबरी नाट्य के मुख्य प्रसंग – **देवी अम्बड, बादशाह की सवारी, भिन्यावड बंजारा, खडलिया भूत** व **शेर-सूअर की लडाई।**
- गबरी लोक नाट्य पर **भानूभारती का पशु गायत्री** नामक प्रसिद्ध लोकनाट्य रचा गया है।

स्वांग

- स्वांग कला में किसी भी एतिहासिक, पौराणिक एवं लोक प्रसिद्ध महापुरूष का वेश धारण कर एवं मेकअप कर उसके चरित्र का अभिनय किया जाता है।
- किसी भी महापुरूष के चरित्र को कलाकार स्वयं पर आरोपित कर उसका अभिनय करता है तो यह स्वांग कला कहलाती है।
- यह कला मुख्य रूप से नकलची कला है – **बहरूपिया**
- इस कला के प्रमुख कलाकार –**जानकी लाल भांड** (मंकी मेन), **केलवा का परशुराम**।

भंवाई

- राजस्थान के गुजरात वाले सीमावर्ती क्षेत्रों में यह लोकनाट्य प्रचलित हैं।
- यह एक **व्यावसायिक** लोक नाट्य है।
- भंवाई शैली पर **सांतागांधी** द्वारा लिखा गया लोकनाट्य **जस्मा ओढन**
- जस्मा ओढन **जर्मनी व लंदन** में खेला जाता है।

फड़ नाट्य

- लोक देवी देवताओं के **जीवन चरित्र** को **कपडे** पर चित्रित कर उसको बांचने की परंपरा **फड़ वाचन** कहलती है।
- फड बांचने वाला कलाकार कहलाता है – **भोपा**
- फड पेंटिंग के लिये प्रसिद्ध केन्द्र – **शाहपुरा (भीलवाडा)**
- फड पेंटिंग के प्रमुख कलाकार – **श्री लाल जोशी शाहपुरा**
- राजस्थान में मुख्यत**: देवनारायणजी एवं पाबूजी की फड** प्रसिद्ध है।
- **पाबूजी की फड** बांचते समय भोपा **रावण हत्था** नामक वाद्य यंत्र का प्रयोग करता है।
- **देवनारायण जी की फड** पर भारत सरकार द्वारा **डाक टिकट** जारी किया जा चुका है।
- **देवनारायण जी की फड** बांचते समय **जंतर नामक वाद्य यंत्र** का प्रयोग किया जाता है।
- फड वांचन में कपडे की फड को किसी **चौपाल** पर टांग दिया जाता है जिसमें भोपा किसी वाद्य यंत्र को लेकर वाचन करता है तथा भोपिन **हाथ में लालटेन** लिये हुये फड को इंगित करते हुये नृत्य करती है।

चार बेंत

- चार बेंत, **टोंक** का प्रमुख लोक नाट्य है जो कि **संगीत दंगल** के रूप में प्रचलित है।
- इसमें कब्वालों की भांति घुटने के बल बैठकर एवं उछल कर **संगीत** दिया जाता है।
- इसकी नींव **टोंक** के नवाब **फैजुल्ला** के सयम **करीम खां** ने रखी थी।

कन्हैया लोक नाट्य

- यह लोक नाट्य मुख्यत**: करौली एवं दौसा** में खेला जाता है।
- यह लोक नाट्य **हेला ख्याल** से मिलती जुलती लोक विद्या है।

सवारी नाट्य

- **न्हाण** – सांगोद (कोटा)
- **गीजगढ (दौसा)** का **कादरा-भूतरा** का खेल
- गीजगढ दौसा में **नृसिंह की सवारी** निकाली जाती है।
- पारसी थियेटर (वर्तमान सिनेमा) के प्रमुख कलाकार –**माणिक लाल डांगी, कन्हैया लाल पवार, अलवर के महबूब हसन**

3. लोक वाद्य

राजस्थान में लोक संस्कृति की अभिव्यक्ति के लिये लोक वाद्यों की मदद ली जाती है।

लोक वाद्य यंत्रों को चार भागों में बांटा गया है।

1. **तत् वाद्य यंत्र** 2. **सुषिर वाद्य यंत्र**
3. **अवनद्ध वाद्य यंत्र** 4. **घन वाद्य यंत्र**

तत् वाद्य यंत्र

- **वे सभी वाद्य यंत्र जिनमें तार लगे होते हैं तत् या तार वाद्य यत्र कहलाते हैं।**

सारंगी

- सांरगी के दो प्रकार होते हैं-**सिंधी सारंगी** और **गुजरातन सारंगी** (7 तार)
- मूल सारंगी में **तारों** की संख्या **27** होती है।
- सारंगी अधिकाशत: **सागवान** व **कैर** की लकडी से बनायी जाती है।
- सारंगी के तार **बकरे की आंत** से निर्मित होते हैं।
- सारंगी को बजाने में प्रयुक्त गज में **घोडे की पूंछ के बालों** का प्रयोग किया जाता है।
- सारंगी **जैसलमेर** की **लंगा जाति** का प्रमुख वाद्य यंत्र है।

एकतारा

- एकतारा में तारों की संख्या **दो** होती है।
- यह वाद्ययंत्र **एक हाथ से** ही बजाया जाता है जिसमें **उंगलियों** द्वारा तारों से टकरा कर लय उत्पन्न की जाती है।
- एकतारा का संबंध **नारद जी** से है।

कामायचा

- कामायचा सारंगी जैसा ही वाद्य यंत्र है जो मुख्यत: **जैसलमेर-बाडमेर** में **मांगणियार** जाति का प्रमुख वाद्य यंत्र है।
- कामायचा के प्रमुख कलाकार **साकर खां** हैं।

रावणहत्था

- यह वाद्य यंत्र आधे नारियल की कटोरी पर खाल चढा कर बनाया जाता है।
- रावण हत्था वायलिन की तरह गज से बजाया जाता है।
- रावणहत्था में तारों की संख्या 9 होती है।
- पावूजी की फड वांचते समय भोपे द्वारा रावण हत्था का ही प्रयोग किया जाता है।

जंतर

- जंतर वाद्य यंत्र में **दो तुम्बे** होते हैं।
- जंतर वाद्य यंत्र में तुम्बों पर **मगरमच्छ की खाल** के **22 परदे** लगे होते हैं।
- **बगडावतों के गूजर,** भोपे देवनारायण जी की फड वांचते समय **जंतर** का प्रयोग करते हैं।

रवाज

- यह **कामायचा** की तरह होता है।
- **रवाज** को बजाते समय **उंगली के नाखूनों** का प्रयोग किया जाता है।
- **रवाज** में तारों की संख्या **12** होती है।

तम्बूरा

- तम्बूरा के अन्य नाम - **तन्दूरा, चौंतारा, निशान आदि।**
- इस वाद्य यंत्र में **चार तार** लगे होते हैं।
- विशेष तौर पर यह वाद्य यंत्र **एक ही लकडी** द्वारा निर्मित होता है।
- कामड जाति के लोग इसे **बाबा रामदेव** के **भजन** गाते समय गाते हैं।

भपंग

- भपंग **आल के तुम्बे** का बना होता है।
- यह **डमरूनुमा** आकृति का होता है जिसमें एक तरफ **खाल** से अवनद्य रहती है तथा दूसरी तरफ लकडी से एक डोरी बांध दी जाती है।
- भपंग मुख्यत: **मेवात** क्षेत्र का वाद्य यंत्र हैं।
- प्रसिद्ध कलाकार -**जहूर खां मेवाती**

चिकारा

- चिकारा **सारंगीनुमा** वाद्य यंत्र है।
- चिकारा **अलवर** व **भरतपुर** में जोगियों द्वारा लोक गाथाओं के गायन के समय बजाया जाता है।

अन्य तत् वाद्य यंत्र -सुरिंदा, बुकाको, गूजरी।

- **मोहन वीणा** का आविष्कार **पं. विश्वमोहन भट्ट** द्वारा किया गया।
- यह सरोद सितार व गिटार का मिश्रित रूप है।
- पंडित विश्वमोहन भट्ट को संगीत के अन्तर्राष्ट्रीय अवार्ड **ग्रेमी अवार्ड** से नवाजा गया है।

सुषिर वाद्य यंत्र

- **फूंक से बजाये जाने वाले वाद्य सुषिर वाद्य कहलाते हैं।**

बांसूरी

- बांसूरी में कुल 7 छेद होते हैं जिनमें से **6 छेद** स्वर निकालने के लिये प्रयोग में लिये जाते हैं।
- प्रसिद्ध बांसुरी वादक - **हरिप्रसाद चौरसिया।**

अलगोजा

- यह वाद्य दो छोटी बांसुरियों का संयुक्त जोडा होता है।
- इसमें दो अलगोजों को मुंह में रखकर बजाया जाता है जिसमें एक अलगोजा मधुर ध्वनि उत्पन्न करता है तथा दूसरे अलगोजे से स्वर निकाले जाते हैं।
- प्रसिद्ध कलाकार - **तगाराम भील**।

शहनाई

- **इसे नफीरी भी कहा जाता है।**
- शहनाई सुषिर वाद्य यंत्रों में **सर्वश्रेष्ठ व सुरीला** है।
- शहनाई **चिलम की आकृति** की होती है जिसमें **8 छेद** होते हैं।
- **शहनाई शीशम, सागवान या ताली** लकडी से बनायी जाती है। शहनाई को भी **अलगोजे** की तरह दो को एक साथ बजाया जाता है लेकिन बजाने वाले व्यक्ति अलग -अलग होते हैं।
- **प्रसिद्ध वादक - उस्ताद बिस्मिल्लाह खां (भारत), चांद मोहम्मद खां (जयपुर)**
- **चांद मौहम्मद खां** को **राजस्थान का बिस्मिल्लाह** भी कहा जाता है।

सतारा

- **सतारा अलगोजा, बांसुरी व शहनाई** की संयुक्त विशेषताओं वाला वाद्य यंत्र है।

बीन

- इसे **पुंगी** भी कहा जाता है।
- इसे मुख्यत**: सपेरों** द्वारा बजाया जाता है।
- पुंगी मुख्यत**: घीया के तुम्बे** से बनी होती है।
- पुंगी **कालबेलिया** जाति का प्रमुख वाद्य यंत्र है।

मशक

- मशक **चमडे** का बना हुआ वाद्य है जिसमें **मुंह से हवा भरी** जाती है बाद में कलाकार उसे **कांख में दबाकर** बजाता है।
- **मशक** वाद्य यंत्र का प्रयोग **भेंरोजी के भोपे** करते हैं।

मोरचंग

- लोहे या किसी अन्य धातु का बना हुआ यह वाद्य यंत्र जिसे **होठों के बीच रखकर** बजाया जाता है।

बांकिया

- बांकिया **पीतल** का बना हुआ तथा **बिगुल की शक्ल** का होता है।

नड़

- नड **मरूप्रदेश** का अत्यंत दुर्लभ वाद्य यंत्र है।
- नड वाद्य **कगौर की एक मीटर लम्बी लकडी** से बनाया जाता है।
- भैरव का गुणगान करने वाले **भोपे** प्रमुख रूप से इसे बजाते हैं।
- नड वाद्य को **मुंह पर टेडा रखकर** बजाया जाता है।
- **करणा भील** इसके प्रमुख कलाकार हैं।
- **मुरला** मुरला पुंगी का परिष्कृत रूप है।

सिंगी/सिंगा

- पीतल का बना यह वाद्य यंत्र धनुषाकार का होता है जो अधिकांशत: साधु सन्यासियों के पास पाया जाता है।
- **अन्य वाद्य यंत्र -सुरनाई, तुरही, नागफणी, बरगू** आदि।

अवनद्ध वाद्य यंत्र

- **इस श्रेणी के वाद्य यंत्रों में चमडे से मढे हुये वाद्य यंत्र आते हैं।**
- **इन्हें ताल वाद्य यंत्र भी कहा जाता है।**
- **पखावज** -इसे मृदंग भी कहा जाता है।
- मृदंग **ढोलक की आकृति** का वाद्य यंत्र है जो कि सुपारी या वट वृक्ष की **लकडीको खोखला** करके बनाया जाता है।
- प्रसिद्ध कलाकार -**पंडित पुरूषोत्तम दास, मंगलाराम भील**

मांदल

- मृदंग की आकृति का यह वाद्य यंत्र लकडी के स्थान पर **मिट्‌टी का** बना हुआ होता है।
- मांदल मुख्यत**: मोलेला गांव** में बनाया जाता है।

नगाडा

- नगाडा एक बडी कुण्डी पर **भेंस की खाल मढकर** बनाया जाता है।
- नगाडा मुख्यत: **नौटंकी, रामलीला, युद्ध** आदि में बजाया जाता है।
- कलाकार – **रामकिशन सोलंकी।**

नौबत

- नौबत **नगाडे की आकृति** का होता है इसकी आवाज अत्यंत गम्भीर होती है।
- नौवत का प्रयोग **मंदिर या महलों के मुख्य द्वार** पर किया जाता है।
- **चंग या ढप**- चंग लकडी के गोल घेरे पर **बकरे की खाल मढकर** बनाया जाता है।
- **खंजरी - आम की लकडी** का बना वाद्य यंत्र जो ढप का लघुरूप है।
- **मांठ** – पाबूजी के पवाडे गाते समय मांठ वाद्य यंत्र का प्रयोग किया जाता है।
- **ढांक** – बडा डमरू
- **अन्य अवनद्ध वाद्य यंत्र -धोंसा, ताशा, दमामा, कुण्डी आदि।**

घन वाद्य

- **जिन वाद्यों में चोट या आघात से स्वर उत्पन्न होते हैं वे घन वाद्य कहलाते हैं। ये धातु निर्मित वाद्ययंत्र होते हैं।**

मंजीरा

- यह पीतल और कांसे का गोलाकार वाद्य होता है। इनके मध्य भाग में छेद करके दो मंजीरों को रस्सी से बांध दिया जाता है। तेरहताली नृत्य में या भजन-कीर्तन में मंजीरे बहुतायत से प्रयुक्त होते हैं।

झांझ

- यह मंजीरे का बडा रूप है। इसका व्यास लगभग एक फुट होता है। शेखावाटी क्षेत्र में कच्छी घोडी नृत्य में इसका प्रयोग होता है।

खडताल (करताल)

- इस वाद्य यंत्र दो लकडी के टुकडों के मध्य में पीतल की छोटी-छोटी गोल तश्तरियां लगी रहती हैं, जो लकडी के टुकडों को परस्पर टकराने से बजती है।

थाली -

- यह कांसे की बनी होती है। इसे प्राय: कालबेलिया, भील एवं बाहेती बजाते है। इसका प्रयोग मुख्यत: चरी नृत्य में होती है।

घण्टा (घडियाल)

- यह पीतल या अन्य धातु का गोलाकार वाद्य है। इसका प्रयोग मन्दिरों में किया जाता है।इसी का छोटा रूप घण्टी कहलाता है।

चिमटा

- इसे बायें हाथ में पकडकर दांये हाथ की अंगुलियों से भजन-कीर्तन के समय बजाया जाता है।

भरनी

- इसे अलवर-भरतपुर क्षेत्र में सर्प के काटे हुये का लोकदेवताओं के यहां इलाज करते समय बजाया जाता है।

झालर

- मन्दिरों में सुबह शाम आरती के समय लकडी के डंडों से बजायी जाने वाली कांसे या तांबे की गोल तश्तरी **झालर** कहलाती है।

गरसियों की लेजिम

- बांस से निर्मित इस वाद्य को गरसिया लोकनृत्य के साथ प्रयोग करते हैं।

घुरलियौ

- बांस की खपच्ची से निर्मित इस ताल का प्रयोग कालबेलिया व गरासिया लोग करते हैं।

रमझोल

- चमडे की पट्टी पर बहुत सारे छोटे-छोटे घुंघरू सिलकर इसे बनाया जाता है।
- होली के गैर नृत्य व भीलों के चन्द्राकार नृत्य में इसका प्रयोग किया जाता है।

4. चित्रशैली

- राजस्थान में चित्रकला के लिये आदि मानव द्वारा उकेरे गये प्राचीनतम साक्ष्य - **दर (भरतपुर) दर्रा (कोटा), मालठियां (कोटा)**।
- राजस्थान में तिब्बती इतिहासकार **लामा तारानाथ** ने 16वीं शताब्दी में श्री सारंगधर या श्री **श्रंगधर** नामक चित्रकार का वर्णन किया है।
- श्री **श्रंगधर** चित्रकार राजस्थान के मरू प्रदेश में 7वीं शताब्दी का प्रसिद्ध चित्रकार था।
- राजस्थानी या राजपूत चित्रशैली का उद्भव **अपभ्रंश शैली,जैनशैली और गुजरात शैली** के मिश्रण से हुआ है।
- राजपूत शैली का उद्‌गम - **15वीं-16वीं शताब्दी**
- राजपूत चित्र शैली के चित्र का प्राचीनतम साक्ष्य -**1260 ईस्वी में चित्रित ग्रंथ श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चर्णी (तेजसिंह के समय)**
- राजपूत चित्रशैली का दूसरा प्राचीनतम साक्ष्य -**सुपासनाह चरितम्** (सुपार्श्नाथ चरितम्/सुपाषानाचर्यम)
- **राजस्थानी चित्र शैली को चार स्कूलों में विभाजित किया जा सकता है।**

मेवाड स्कूल	**मारवाड स्कूल**	**ढूंडाण स्कूल**	**हाडौती स्कूल**
चावण्ड	जोधपुर	आमेर	बूंदी
उदयपुर	बीकानेर	जयपुर	कोटा
नाथद्वारा	किशनगढ	अलवर	झालावाड
		शेखावाटी	

मेवाड चित्र शैली

- राजस्थानी चित्रकला का प्रारंभिक व **मौलिक रूप** मेवाड शैली में दिखाई देता है।

इसकी निम्न उपशैलियां हैं -

चावण्ड शैली

- राजस्थान की शैलियों में विकसित **सबसे प्राचीनतम** शैली।
- इस शैली को विकसित करने में **अमरसिंह प्रथम** का योगदान है।

रागमाला-नासुरूद्दीन द्वारा चित्रित ग्रंथ।,

- मेवाड का यह प्रसिद्ध चित्र **अमरसिंह** के समय चित्रित किया गया।

उदयपुर शैली

- मेवाड स्कूल में चावण्ड शैली के बाद विकसित यह दूसरी शैली है।
- उदयपुर शैली का स्वर्णकाल -**जगतसिंह प्रथम का शासनकाल चितेरों की आंवेरी** क्या है - **कला विद्यालय**
- (उदयपुर में जगतसिंह ने चित्रकला के विकास के लिये **चितेरों की आंवरी** (कला विद्यालय) नामक संगठन का गठन किया था)

नाथद्वारा शैली

- नाथद्वारा शैली का विकास - उदयपुर शैली और ब्रज शैली से नाथद्वारा शैली का उदगम राजसिंह के समय श्रीनाथ जी की मूर्ति स्थापना के साथ हुआ।

नाथद्वारा शैली के प्रमुख विषय-पिछवाई, कृष्ण की बाल लीलायें

मेवाड शैली के प्रमुख चित्र :-

रसिक प्रिया	-	**केशव**
रागमाला	-	**नासुरूद्दीन**
भगवत पुराण	-	**शाहबुद्दीन**

मारवाड चित्र शैली

- मारवाड शैली का प्रारंभ जोधपुर शैली से माना जाता है।
- जोधपुर शैली का स्वतंत्र रूप से विकास **मालदेव** के समय हुआ था परन्तु **तारानाथ** के अनुसार 7 वीं शताब्दी में श्री **श्रंगधर** नाम चित्रकार मरूप्रदेश में प्रसिद्ध था।

जोधपुर शैली

- जोधपुर शैली का विकास **मालदेव** के शासनकाल में हुआ।
- जोधपुर शैली का स्वर्णकाल माना जाता है -**मानसिंह**
- जोधपुर शैली मुगल व स्थानीय शैली के **मिश्रित प्रभाव** से उत्पन्न हुयी है।
- जोधपुर शैली में मुख्यत**: प्रेमकथाओं** के चित्रों का चित्रांकन है - **ढोलामारू, सोनी महिवाल, मूमलदे, निहालदे** आदि।
- प्रमुख कलाकार - **शिवदास भाटी, किशनदास भाटी, देवदास भाटी**

बीकानेर शैली

- बीकानेर शैली का उद्भव 16वीं सदी के अंत में हुआ है।
- बीकानेर शैली पर **दो परिवारो** का स्पष्ट रूप से प्रभाव है।
  1. मथैरणा परिवार   2. उस्तांद परिवार
- ये परिवार बीकानेर में मुगल दरबार से आये थे।
- बीकानेर शैली के कलाकार अपने चित्रों पर अपना **नाम एवं तारीख** लिखते हैं।
- बीकानेर शैली का चर्मोत्कर्ष - **अनूपसिंह का शासनकाल**
- **किशनगढ शैली** - किशनगढ शैली को प्रकाश में लाने का श्रेय-**एरिक डिक्सन** और किशनगढ शैली प्रमुख रूप से **सावंत सिंह** के समय विकसित हुयी।
- **सावंतसिंह** के शासनकाल को **किशनगढ शैली** का **स्वर्णकाल** माना जाता है।
- सावंतसिंह किस उपनाम से ग्रंथो की रचना करते थे - **नागरी दास**
- सावंतसिंह के शासन काल मे किशनगढ शैली के प्रसिद्ध चित्र।
- **बणीं-ठणीं** का चित्रांकन किसके शासनकाल में हुआ - **सावंतसिंह**
- बणी-ठणी चित्र के चित्रकार - **मोरध्वज निहालचंद**
- **निहालचंद** ने बणी-ठणी को सावंतसिंह की **प्रेयसी** के रूप में चित्रित किया है।
- प्रमुख विशेषतायें -**लम्बी, सुरहीदार गर्दन, गौर वर्ण, नुकीली चुबुक,पतलीकमर, खंजर सी आंखे** आदि।
- किशनगढ शैली के प्रमुख चित्र - **बणी-ठणी, राधाकृष्ण**

ढूंढाड चित्रशैली

आमेर शैली - इस शैली का प्राचीनतम उदाहरण 16वीं शताब्दी के आसपास **आमेर की छतरियों** में मिलता है।

आमेर शैली में **जयसिंह प्रथम** के दरबारी कवि **बिहारी** ने शब्द चित्र बनाकर चित्रकला को प्रभावित किया है।

शब्द चित्र आमेर शैली की प्रमुख विशेषता है।

जयपुर शैली

- जयपुर शैली का विकास **आमेर शैली** से हुआ है।
- जयपुर शैली की प्रमुख विशेषता **पोर्ट्रेट चित्रण (आदमकद चित्र) है।**
- जयपुर शैली के प्रमुख कलाकार **साहिबराम ने ईश्वरीसिंह का आदम कद** चित्र बनाया है।
- **सवाई प्रतापसिंह** का शासनकाल जयपुर शैली का **स्वर्णकाल** कहा जाता है।

अलवर शैली

- अलवर शैली का विकास **दिल्ली व जयपुर** शैली के मिश्रण से हुआ है।
- अलवर शैली की प्रमुख विशेषतायें - **अंग्रेजी जीवन पद्धति वेश्या जीवन, पान खाते हुये स्त्री के पतले होठ, पारदर्शी वस्त्र।**
- **बख्तारसिंह** ने अलवर शैली की नींव डाली तथा **विनयसिंह** का शासनकाल अलवर शैली का चर्मोत्कर्ष काल था।
- प्रसिद्ध कलाकार -**गुलाम अली, बलदेव।**

शेखावाटी शैली

- 19वीं सदी के मध्य से 20वीं सदी तक शेखावाटी क्षेत्र में बनायी गयी हवेलियों में शेखावाटी शैली के चित्रों को देखा जा सकता है। शेखावाटी शैली की प्रमुख विशेषतायें -**भित्ति चित्र**

हाडौती चित्र शैली

- **बूंदी शैली** -बूंदी शैली पर **दक्षिण भारत** की चित्र शैली का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।
- **उम्मेदसिंह** के शासनकाल में **बूंदी** शैली अपने शिखर पर थी।
- प्रमुख विशेषता-प्राकृतिक विविधता, **पशु-पक्षी चित्रण, सतरंगे बादल एवं चित्रशाला।**
- बूंदी शैली के प्रमुख विषय -**ऋतु वर्णन, बारहमास, हाथियों की लडाई, रागरागिनी।**
- **कोटा शैली** -कोटा शैली **महारावल रामसिंह** के शासनकाल में अस्तित्व में आयी।
- कोटा शैली का प्रमुख विशेषता - **शिकार, युद्ध, दरबारी दृश्य।**

झालावाड शैली

विभिन्न चित्र शैलियों में प्रयुक्त रंग एवं वृक्ष चित्रांकन

शैली का नाम	**प्रयुक्त रंग**	**वृक्ष चित्रांकन**
जयपुर और अलवर	हरा रंग	पीपल
जोधपुर एवं बीकानेर	पीला रंग	आम
उदयपुर शैली	लाल रंग	कदम्ब
कोटा शैली	नीला रंग	खजूर
किशनगढ शैली	सफेद व गुलाबी	केले
नाथद्वारा शैली		केला
बूंदी शैली	सुनहरी	

शैली	पशु-पक्षी चित्रांकन
जयपुर	मोर
जोधपुर	ऊँट, कौआ, चील
उदयपुर	हाथी, चकौर
नाथद्वारा	गाय
कोटा बूंदी	हिरण-शेर (शिकार) आदि का चित्रण है।

चित्र शैली	आंखों का चित्रांकन
जयपुर	मछली के समान
जोधपुर	बादाम के समान
नाथद्वारा	हिरण के समान
बूंदीशैली	आम के पत्ते के समान
किशनगढ	खंजरनुमा या कमल पंखुडी

प्रमुख चित्रकार एवं उनके चित्र :-

- रामगोपाल विजय वर्गीय - प्यासा
- भूरीसिंह शेखावत - यथार्थवादी चित्रण
- गोवर्धन लाल बाबा - भीलों के चितेरे, बारात का चित्रण
- मांगी लाल मिस्त्री - कावड़ के चितेरे
- ज्योति स्वरूप - इनर जंगल
- कृपालसिंह शेखावत (सीकर) - **ब्लू पॉटरी के मास्टर**

राजस्थान में आधुनिक चित्रकला का जनक -**कुन्दन लाल मिस्त्री**

राज. के महत्वपूर्ण तथ्य

- बरसात का देवता - मामादेव
- बरसात की देवी - रूपा दे (नाकोड़ा, बाड़मेर)
- राजस्थान का खजुराहो - किराडू (बीकानेर)
- मेवाड़ का खजुराहो - जगत (उदयपुर)
- हाड़ौती का खजुराहो व मिनी खजुराहो - भंडदेवरा (बारां)
- राजस्थान की वैष्णोदेवी - अर्बुदा देवी (सिरोही)
- थार की वैष्णोदेवी - तनोटिया माता (तनोट, जैसलमेर)
- राजस्थान का हरिद्वार - पुष्कर (अजमेर)
- मेवाड़ का हरिद्वार - मातृकुंडिया (चित्तौडगढ)
- कनफटे नाथो का तीर्थ - राजा भर्तृहरि
- नाथों का दुर्ग - कोट-कास्तां (जालौर)
- जलमहलों की नगरी - डीग (भरतपुर)
- दूसरा हवामहल - खेतड़ी महल (झुंझुनूं)
- मांगीबाई - मांड गायिका (उदयपुर)
- नवलखा दरवाजा - रणथम्भौर दुर्ग
- नाथों की तीर्थ - महामंदिर (जोधपुर)
- महलों की नगरी - उदयपुर
- हवामहल - जयपुर
- शेखावाटी का हवामहल - खेतड़ी महल (झुंझुनूं)
- मांगीबाई - तेरहताली नृत्यांगना, पादरला (पाली)
- नो खंडा भवन - चित्तौडगढ दुर्ग

5.लोक कला

- **दीवारों या भूमि पर बने चित्र। ये कई प्रकार के होते हैं -**
- **पथवारी**-गावों मे पथ की रक्षक देवी के रूप में पूजा जाने वाला स्थान।
- **सांझी** - सांझी नवरात्रों में अविवाहित लडकियों द्वारा पुती **दीवरों पर गोबर** से बनायी जाती है।
- **मछंदर नाथ मंदिर (उदयपुर)-सांझियों के लिये प्रसिद्ध स्थान।**
- **मांडना** -मांगलिक अवसरों पर दीवारों चौक व आंगन आदि में माडने माडे जाते हैं।
- मीणा जाति के मोरनी से अधिक लगाव के कारण उनमें **दीवारों पर मोरनी मांडने** का विशेष प्रचलन है।
- **देवरा** -खुले चबूतरे पर बनी मंदिरनुमा आकृति **देवरा** कहलाती है।
- प्राचीन समय में निम्न जातियों को मंदिर प्रवेश पर रोक लगी थी इस कारण उनमें देवरा का अधिक प्रचलन है।
- **शेखावाटी की हवेलियों में सर्वाधिक सुन्दर भित्ति चित्रों का चित्रण हुआ है।**
- **मेवाड शैली के भित्ति चित्रों के लिये प्रसिद्ध स्थान -चितेरों की ओवरी (उदयपुर)**

कपडे पर बने चित्र

पड़ (फड)

- राजस्थान में शाहपुरा (भीलवाडा) पड़ चित्रण के लिये प्रसिद्ध है।
- यहां पर **छीपा जाति** के जोशी चितरे पड़ चित्रांकन का कार्य करते हैं।
- पड़ चित्रण के प्रसिद्ध कलाकार - **श्री लाल जोशी**
- पड़ मुख्य रूप से दो देवताओं की प्रमुख है - **पाबूजी, देवनारायणजी**
- पाबूजी की पड वांचते समय भोपा **रावणहत्था** नामक वाद्य यंत्र का प्रयोग करता है।
- देवनारायण जी की पड़ पर भारत सरकार द्वारा **डाक टिकट** जारी किया जा चुका है।
- देवनारायण जी की पड़ को मुख्य रूप से **गूजर जाति** के भोपे वांचते हैं।
- देवनारायणजी की पड़ वांचते समय **भोपा जंतर** नामक वाद्य यंत्र का प्रयोग करता है।
- यह एक 20-25 मी. लम्बे कपडे पर किसी लोक देवता की जीवन गाथा चित्रों के माध्यम से अंकित रहती है जिसे भोपा चित्रों को देखकर उस **जीवन गाथा** को सुना सकता है।

पिछवाई

- यह एक अलंकृत कपडा है जिसमें मुख्य रूप से **श्री कृष्ण की लीलाऐं** चित्रित रहती है, जिसको **वल्लभ संप्रदाय** में मूर्ति के पीछे लगाया जाता है।

पिछवाईयों के लिये प्रसिद्ध स्थान - **नाथद्वारा**

वातिक

- कपडे पर मोम की परत चढाकर जो चित्रकारी की जाती है उसे वातिक कहते हैं।

कागज पर बने चित्र –

पाने – कागज पर बने चित्र पाने कहलाते हैं। राजस्थान में विभिन्न देवी, देवताओं एवं महापुरूषों के पाने प्रसिद्ध है।

लकडी पर बने चित्र –

कावाड

- यह एक मंदिरनुमा लकडी आकृति है जिसमें सभी दीवारों पर चित्र बने होते हैं।
- सभी द्वार खुलने पर अंत में **राम–सीता और लक्ष्मण** के दर्शन होते हैं।
- कावड के प्रसिद्ध चित्रकार – **मांगीलाल मिस्त्री (बस्सी)**
- **काष्ठ कला** (कांवर कला) का प्रमुख स्थान –**बस्सी (चित्तौडगढ)**

शरीर पर बने चित्र

- **गोदना** –**गोदना** में **सुई** या **कांटे से शरीर पर अंकन** किया जाता है जिसमें मुख्य रूप से **कोयले** या **खेजडली** की राख भर दी जाती है जिससे अंकन स्थायी हो जाता है।
- आदिवासियों में **गोदना अंध विश्वास एवं सौन्दर्य** का प्रतीक है।
- **मराड़ी** –आदिवासियों में बनाये जाने वाले भित्ति चित्र।
- **मोड़** मेड़ता सिटी (नागौर) में बनाये जाने वाले मिट्टी के बडे–बडे मटके।

राज. के राजवंशों के संस्थापक

चौहान शाकंभरी / अजमेर	– वासुदेव (551 ई.)
गुहिल (मेवाड़)	– बप्पा रावल (728 ई.)
कछवाहा (ढूंढाड़)	– दुलहराय (1137 ई.)
गुहिल (बागड़)	– समर सिंह (1177 ई.)
यादव (करौली)	– अर्जुनपाल (1348 ई.)
गुहिल (बांसवाडा)	– जगमाल सिंह (1518 ई.)
राठौड़ (किशनगढ़)	– किशन सिंह (1609 ई.)
कछवाहा (अलवर)	– प्रताप सिंह (1771 ई.)
गुहिल (मेवाड़)	– गुहिल (566 ई.)
कछवाहा (आमेर)	– धौलाराय (967 ई.)
भाटी (जैसलमेर)	– राव जैसल (1155 ई.)
राठौड़ (मारवाड़)	– राव सीहा (13वीं सदी)
राठौड़ (बीकानेर)	– राव बीका (1465 ई.)
गुहिल (डूँगरपुर)	– सीहड़ (16वीं शताब्दी)
गुहिल (शाहपुरा)	– सुजान सिंह (1631 ई.)

6.लोक गीत

वैवाहिक आयोजनों के लोक गीत –

सगाई, बधावा,
चाक –भात, रतजगा,
हल्दी, घोडी,
बना–बनी, तोरण,
हतलेवा, कमर कलेवा,
जीमणवार, कांकनडोरा, जला।

होली पर गाये जाने वाले लोक गीत –

रसिया, होरी, धमार

बसन्त और वर्षा ऋतु में बाये जाने वाले लोक गीत

हींदा, झूला हिंडोला
सावण, वर्षा, तीज और गणगौर।

पर्वतीय क्षेत्र के लोक गीत

पटेल्या, बीछियों , लालर

मरू प्रदेश के लोक गीत

कुंरजा दीपली रतनराणो
मूमल घूघरी केवडा।

- कलाली लोक गीत – **शराब बनाने व बेचने वाली कलाल जातियों के लोक गीत।**

महफिलों के लोकगीत –

रतनराणो, जला, पणिहारी,
बायरियो, घूसो, राणेशूमरो,
मूमल झालो पांखियो।

प्रमुख श्रंगार गीत

मांड, देस सोरठे

प्रमुख लोक गीत

ईडोणी, पणिहारी, गोरबन्द तांगासियों,
सुपणा, लूर, ओलूं, हिचकी,
मूमल, कुरजां काजलिया व कागा।

प्रमुख लोकगीत

- **घूमर** – घूमर नृत्य के साथ गाया जाने वाला प्रमुख लोकगीत।
- **पणिहारी** – पानी भरने जाते समय स्त्रियों द्वारा गाया जाने वाला लोकगीत।
- **गणगौर** – गणगौर त्यौहार पर गाया जाने वाला लोकगीत।
- **गौरबन्द** – गोरबन्द ऊंट के गले के आभूषण को कहा जाता है।
- **हरजस** – राम–कृष्ण की लीलाओं से संबंधित लोकगीत।
- **बना–बनी** – विवाह के अवसर पर गाये जाने वाला लोकगीत।
- **कागा** – इस लोकगीत के माध्यम से गृहणी नायिका अपने प्रियतम के आने का शगुन मानती है।
- **कुरजा** – गृहणी नायिका कुंरजा पक्षी के माध्यम से अपने पति को संदेश भेजती है।

- **लांगुरिया** –कैला देवी के मेले के दौरान भक्तों द्वारा गाये जाने वाले लोक गीत।
- **ओल्यू** बेटी की विदाई के समय गाया जाने वाला लोकगीत।
- **घोडी** – वर निकासी के समय घुडचडी रश्म के दौरान गाया जाने वाला लोकगीत।
- **जलालुद्दीन** वधु के घर की स्त्रियों द्वारा एवं वधु द्वारा वर की बारात का डेरा देखने जाने के प्रसंग का लोकगीत।
- **चिरमी** चिरमी पौधे को संबोधित कर ग्राम वधु द्वारा इंगित कर अपने भाई तथा पिता के इंतजार की मनोस्थिति का चित्रण।
- **मोरिया** इस लोकगीत में ऐसी बालिका की मनोदशा का वर्णन होता है जिसका रिश्ता तय हो चुका है तथा विवाह नहीं हुआ है।
- **जीरो** महिला द्वारा इस लोकगीत के माध्यम से अपने पति से जीरा न बोने की विनती की जाती है।
- **घुडला** होली के अवसर पर (पश्चात) घुडला नृत्य के साथ मारवाड में गाये जाने वाले लोकगीत।
- **सीठडे** – विवाह के अवसर पर वधु पक्ष की महिलाओं द्वारा बारात का मनोरम गालियों से स्वागत किया जाता है।
- **ढोला–मारू :–** सिरोही क्षेत्र में ढोला–मारू की प्रेम कथा से संबंधित गाये जाने वाले लोकगीत।
- **हिचकी** –किसी को याद किये जाने पर हिचकी आती है इनसे संबंधित लोकगीत हिचकी लोकगीत कहलाते हैं।
- **हिंडोला (हींदा)** –सावन के महीने में झूला झूलते समय गाये जाने वाले लोकगीत।
- **कामणः** वर को जादू टोना से बचाने के लिये गाये जाने वाले लोकगीत।
- **कांगसियो** कंघी या कंघे पर आधारित लोकगीत।

पावडाः नये दामाद के ससुराल में आने पर पावडा लोकगीत गाये जाते हैं।

सुगठिया – भील स्त्री द्वारा परदेश गये पति को संदेश भेजने के लिये यह लोकगीत गाया जाता है।

रसिया – भरतपुर व अलवर के ब्रज क्षेत्र का लोकगीत।

केसरिया बालम –इस लोकगीत में पति की प्रतिक्षा करती हुयी स्त्री की विरह व्यथा का वर्णन है।

यह एक रजवाडे की तरह है।

अन्य प्रमुख लोक गीत

हमसीठो, बीछूडो, झारोणा, पीपली, पंक्षीडा।

7. लोक संगीत

राजस्थान के लोक संगीत को चार भागों में बांटा गया है –

1. मांड गायकी
2. मांगण्यिार गायकी
3. लॅगा गायकी
4. तालबंदी

मांड गायकी :– मांड गायिकी के प्रमुख क्षेत्र – **जैसलमेर, बीकानेर**

यह शास्त्रीय गायन की लोक शैली है।

राजस्थान में **जैसलमेरी मॉड, बीकानेरी मॉड, जोधपुरी मॉड एवं जयपुर की मॉड** प्रसिद्ध है।

प्रमुख मॉड गायिकायें –

- स्वर्गीय गवरी देवी – बीकानेर
- स्वर्गीय अल्लाह जिलाह बाई – बीकानेर
- मांगी बाई – उदयपुर
- बन्नो बेगम – जयपुर
- जमीला बानो – जोधपुर
- गवरी देवी – पाली

मांगणियार गायिकी

- मांगडियार गायिकी का प्रमुख क्षेत्र राजस्थान का पश्चिमी सीमावर्तीक्षेत्र (जैलसमेर, बाडमेर, जोधपुर आदि) है।
- मांगडियार गायिकी मांगडियार जाति के लोगों द्वारा अपने यजमानों के यहां मांगलिक अवसरों पर गायी जाने वाली लोक गायन शैली है।
- इस गायिकी में प्रमुख रूप से **कामायचा** और **खडताल, वाद्य यंत्र** प्रयोग किये जाते हैं।
- प्रमुख मांगडियार गायक – **शाकर खां, गफूर खां, रमजान खां, सागर खां, रूक्मादेवी, अकला देवी**

लंगा गायिकी

- लंगा गायिकी भी पश्चिमी राजस्थान की लोक गायन शैली है।
- लंगा गायिकी में प्रयुक्त होने वाले प्रमुख वाद्य यंत्र – **सारंगी एवं कामायचा**
- लंगा गायिकी के प्रमुख गायक – **फूसे खां, महरदीन लंगा, अलादीन खां**
- **तालबंदी**– तालबंदी राजस्थान के **पूर्वी अंचल** की लोक गायन शैली है।
- औरंगजेब ने अपने शासन काल में संगीत पर पाबंदी लगा दी थी।
- ब्रज क्षेत्र के संगीत को जीवित रखने के लिये यहां के साधु संतों ने सामूहिक रूप से गायी जाने वाली संगीत को राजस्थान में जारी रखा इसी को **तालबंदी गायिकी** कहा जाता है।
- राजस्थान में यह **सवाई माधोपुर** सर्वाधिक विकसित हुई
- तालबंदी में **गायन** सामूहिक रूप से होता है।

तालबंदी में गायन में प्रयुक्त प्रमुख वाद्य यंत्र, **सारंगी, हारमोनियम, ढोलक, तबला, झांझ मजीरा** आदि।

8. शास्त्रीय संगीत

जयपुर घराना

- प्रवर्तक – **मनरंग** (भूपत खां)
- यह शैली ख्याल गायन से संबंधित है।
- जयपुर घराने की प्रमुख उपशाखायें – **अतरौली घराना, पटियाला घराना**।
- जयपुर घराने के अन्य प्रसिद्ध गायक **मोहम्मद अली खां** जो कि महाराजा **रामसिंह** के दरबारी कवि थे जो कि **कोठी वाले** के नाम से प्रसिद्ध हुये।

बीनकार घराना (जयपुर)

- इस घराने के प्रवर्तक **रज्जब अली खां** बीनकार थे।
- रज्जब अली खां **रामसिंह** के दरबारी संगीतज्ञ थे।

अतरौली घराना

प्रवर्तक – **साहब खां**
- यह जयपुर घराने की उपशाखा है।
- अतरौली घराने के प्रमख गायक –**मानतौल खां**
- मानतौल को **राजस्थान में रूलाने वाला फकीर** कहा जाता है।

अल्लादीया खां घराना

प्रवर्तक –**अल्लादीया खां**
- प्रसिद्ध गायिका – **किशोरी अमोडकर**

सैनियां घराना (जयपुर)

प्रवर्तक– **तानसेन के पुत्र सूरत सेन**
- इस घराने को **सितारिया** घराना भी कहा जाता है।
- प्रसिद्ध सितारिया – **अमृत सेन**

रंगीला घराना

प्रवर्तक – **रमजान खां**
- रमजान खां को **मियां रंगीले** के नाम से भी जाना जाता है।
- मियां रंगीले जोधपुर के प्रसिद्ध गायक **इमाम बक्श** के शिष्य थे।
- यह जोधपुर से संबंधित घराना है।

पटियाला घराना

प्रवर्तक – **फतेह अली खां व अली बक्श**
- यह जयपुर घराने की उपशाखा है।
- जयपुर से शिक्षा ग्रहण करके **फतेह अली खां** व **अली बक्श** पटियाला आ गये थे।
- फतेह अली खां व अली बक्श को **आलिया फत्तू** भी कहा जाता है।

डागर घराना

प्रवर्तक – **बहराम खां डागर।**
- **बहराम खां** महाराज **रामसिंह** के दरबारी गायक थे।
- जयपुर में **रामगंज चौखट** के पास डागर घराने की प्रसिद्ध पुस्तैनी हवेली को **बहराम खां चौखट** कहा जाता है।
- इस घराने का वास्तविक रूप में प्रसिद्ध करने का श्रेय **बहराम खां** को है लेकिन इसका आदि पुरूष **बाबा गोपालदास** (इमामबक्श) को माना जाता है।

मेवाती घराना

प्रवर्तक – **उस्ताद घग्घे नजीर खां**
- यह जयपुर घराने से ही विकसित हुआ है।
- मेवाती घराने के प्रसिद्ध कलाकार –**पं. जसराज एवं मोतीराम**

किराना घराना

प्रवर्तक – **बंदे अली खां**
- यह घराना महाराष्ट्र में विकसित हुआ
- प्रमुख कलाकार –**पं. भीमसेन जोशी, किशन महाराज**

हवेली संगीत

- इसे **हिन्दुस्तानी संगीत** भी कहा जाता है।
- हवेली संगीत परंपरा का प्रमुख आश्रय स्थल – **नाथद्वारा**
- इसकी सभी विशेषतायें शास्त्रीय संगीत घरानों के जैसी है किन्तु इसे घराने की संज्ञा नहीं दी गयी है।
- हवेली संगीत का प्रस्तुतीकरण **ध्रुपद गायिकी** के ही समान है।

कत्थक घराना (शास्त्रीय नृत्य का घराना)

प्रवर्तक – **भानू जी**
- उत्तर भारत के प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्य कत्थक का उद्भव राजस्थान में 13वी सदी में हुआ।
- कत्थक घराने में सबसे प्राचीन घराना **जयपुर का कत्थक** घराना ही है।
- कत्थक के प्रसिद्ध कलाकार – **बिरजू महाराज**

अन्य तथ्य

- जयपुर के शासक प्रतापसिंह के शासन काल में संगीत के **22** कलाकार थे जिनको कहा जाता था–**गुणीजन की खान**
- राजस्थान में संगीत पर सर्वाधिक ग्रंथ लिखने वाला– **पंडित भाव भट्ट** (बीकानेर के **अनूपसिंह** का दरबारी)
- महाराणा कुंभा द्वारा लिखे गये ग्रंथ संगीत राज में कुल श्लोक थे– **16000**
- रागचन्द्रिका नामक संगीत ग्रंथ के लेखक – **द्वारिका नाथ भट्ट**
- दक्षिणी राजस्थान में युद्ध प्रस्थान के समय वीरों के लिये बजाये जाने वाले संगीत का नाम –**सिरोही राग**
- सिरोही राग को विकसित करने वाली जनजाति–**गरासिया**
- संगीत का संक्षिप्त व्याकरण कहा जाता है – **राग रत्नाकर (राधा कृष्ण)**
- स्वर सागर नामक ग्रंथ के लेखक – **चांद खां**
- राजस्थान में ख्याल गायन शैली को प्रारंभ करने का श्रेय : **अमीर खुसरो**
- अमीर खुसरो को **तूतिये का हिन्द** कहा जाता है।
- सितार और कब्बाली का जनक – **अमीर खुसरो**
- हिन्दू मुस्लिम शैली के मिश्रण सेबना वाद्य यंत्र – **सितार**
- अलवर का रसखान कहा जाता है – **अली बख्सी**
- **लोक रंग क्या है** – मांगणियार गायक एवं खडग ताल वादक **सद्दीक खां** की स्मृति में
  जयपुर में सद्दीक खां मांगणियार लोकरंग कहा जाता है।
- ध्रुपद गायिकी में जुगलबंदी की परंपरा का प्रारंभ किया – **जहरउद्दीन और फैयाजुद्दीन डागर**
- राजस्थान में संगीत का आधार ग्रंथ माना जाता है – संगीत रत्नाकर (सारंग देव)
- ध्रुपद गायिकी की चार शाखायें मानी गयी हैं जिन्हें वाणी कहा जाता है

(1) गौर हार वाणी **(2) डागर वाणी**
(3) मोहर वाणी **(4) खण्डहार वाणी**

9.हस्तकला

थेवा कला

- कांच की वस्तुओं पर सूक्ष्म रूप से चित्रांगन (सोना, चांदी,रंग आदि।)
- **थेवा काला** प्रतापगढ की प्रसिद्ध है।
- थेवा कला में सर्वाधिक **हरे रंग** का प्रयोग किया जाता है।

मीनाकारी

- धातुओं तथा आभूषणों में रंगों का संयोजन मीनाकारी कहलाता है।
- मीनाकारी की कला को जयपुर के शासक **मानसिंह** लाहौर से लाये थे।
- मीनाकारी **जयपुर की प्रसिद्ध** है।

कॉफ्तागिरी

- धातुओं में सोने के **पतले तारों की जडाई** द्वारा डिजाइन तैयार करना **कॉफ्तगिरी** कहलाता है।
  कॉफ्तगिरी **जयपुर** एवं **अलवर** की प्रसिद्ध है।

तहनिशां

- यह कॉफ्तगिरी का ही रूप होता है इसमें डिजाइन बनाकर सोने के पतले तारों को उसमें भरा जाता है।
- तहनिंशा **अलवर** एवं **उदयपुर** की प्रसिद्ध है।
- इस कला का सर्वाधिक प्रयोग **तलवार की मूंठ** बनाने में होता है।

पेचवर्क

- शेखावाटी क्षेत्र में कपडे को विविध डिजाइनों में काटकर सिलाई करना पेचवर्क कहलाता है।

कुन्दन

- स्वर्णाभूषणों में कीमती पत्थर जडने को कला **कुन्दन** कहलाती है।
  कुन्दन कला **जयपुर की प्रसिद्ध** है।

पिछवाई

- मंदिरों में मूर्ति के पीछे दीवारों पर लगाये जाने वाले कपडे पर भगवान श्री कृष्ण की लीलाओं का चित्रण पिछवाई कहलाता है। पिछवईयां **नाथद्वारा की प्रसिद्ध** है।

पट चित्रण

- कपडे पर लोक देवी देवताओं के पौराणिक आख्यानों का चित्रण करना।
  शाहपुरा **भीलवाडा** के फड/पत प्रसिद्ध है।

पॉटरी कला

- चीनी मिट्टी के बर्तनों पर कलात्मक चित्रण पॉटरी कहलाता है।

ब्लू पॉटरी - **जयपुर**
ब्लैक पॉटरी- **कोटा**
सुनहरी पॉटरी - **बीकानेर**
कागजी पॉटरी- **अलवर**

कपडे पर कला

- **मिरर वर्क** - जैसलमेर :- कपडे पर शीशे के टुकडों से सजावट करना।
- **वातिक -खण्डेला** (सीकर) :- सूती या सिल्क के कपडे पर मोम का लेप लगकार मार्कर द्वारा डिजाइन तैयार किये जाते हैं और रंग भरे जाते हैं।
- **मुकेश-जयपुर** :- सूती व रेशमी कपडों पर बादले का प्रयोग करके छोटी-छोटी बिंदकी बनायी जाती है, जिसे मुकेश कहा जाता है।
- **बादले** - चांदी के तार को पीट-पीटकर पतला करके धागे का रूप दिया जाता है।
- **कशीदारी -जयपुर** :- कपडों पर विभिन्न रंगों के रेशमी धागों से कढाई की जाती है।

प्रिंट

बंधेज

- कपडे पर डिजाइन बनाने के लिये जिस स्थान पर रंग नहीं चढाना हो उसे धागे से कसकर बांध दिया जाता है।
- यह कपडे की रंगाई, छपाई की कला है
- जोधपुर की बंधेज सर्वाधिक प्रसिद्ध है।

दाबू प्रिंट

- इसके अन्तर्गत कपडे को जिस स्थान पर रंग नहीं चढाना हो उस स्थान पर लेई या लुगदी लगा दी जाती है और कपडे को रंग में डूबा देते हैं, यह लेई या लुगदी जैसा पदार्थ **दाबू** कहलाता है। तथा कपडे को रंगने की यह कला **दाबू प्रिंट** कहलाती है।
- दाबू प्रिंट के लिये प्रसिद्ध है -**अकोला (चित्तौडगढ)**
- मोम का दाबू - सवाई माधोपुर
- मिट्टी का दाबू - बालोतरा (बाडमेर)
- गेंहूं या लेई का दाबू - बगरू, सांगानेर (जयपुर)

  अजरक प्रिंट - बाडमेर (प्रमुख रंग - नीला और लाल)
  आजम प्रिंट - अकोला (चित्तौडगढ)(प्रमुख रंग - लाल व हरा)
  बगरू प्रिंट) -बगरू (जयपुर)(प्रमुख रंग - काला और लाल)
  सांगानेरी प्रिंट - सांगानेर (जयपुर)(प्रमुख रंग - काला और लाल)
  सांगानेर के छीपों को कहा जाता है - **नामदेवी छीपे**
  सांगानेर में बहने वाला प्रमुख नाला - **अमानी शाह का नाला**

दरी

- मोटे धागों का ताना बाना बना के विभिन्न रंगों से बुनाई की जाती है।

नमदे

- टोंक :- ऊन को कूट कूट कर पतले या मोटे कपडे तैयार किये जाते हैं, उनको नमदे कहते है।

जट पट्टियां

- जसोल (बाडमेर) :- भेड या बकरी क बालों स बनी पट्टियां।

खेस (चौमूं, जयपुर)

- मोटे सूत से बनाये गये दरी नुमा कपडे।

टेराकोटा/मोलेला

- मिट्टी के बर्तन व मूर्तिया बनाने की कला या चित्रण

- मिट्टी की मूर्तियां – **मोलेला (राजसमन्द)**
- मिट्टी के खिलौने – **बस्सी (चित्तौडगढ)**
- मटके एवं सुराही – **रामसर (बीकानेर)**
- बील – **मश्चिमी राजस्थान**

मोलेला – मिट्टी की मूर्तिकला

बील – मिट्टी की महलनुमा छोटी आकृतियां जो रोजमर्रा की वस्तु रखने के काम आती है।

काष्ठ कला –

कावड – **बस्सी चित्तौडगढ**
(लकडी की कावड)
लकडी के झूले – **जोधपुर**
लकडी के खिलौने – **उदयपुर**
लकडी का नक्काशीदार फर्नीचर – **बाडमेर**
शीशम का फर्नीचर – **हनुमानगढ, गंगानगर**

- **मुनब्बत – बीकानेर :–** पहले काष्ठ पर सोने की नक्काशी का चित्रांकन **मुनब्बत** कहलाता है।
- **उस्तांकला–बीकानेर :–**ऊंट की खाल पर सोने व चांदी की नक्काशी का चित्रांकन उस्तांकला कहलाता है।
- **मथैरणा – बीकानेर :–** धार्मिक स्थलों पर पौराणिक कथाओं के आधार पर देवी देवताओं के भित्ति चित्र।

पेट्राडोरा

- सफेद संगमरमर फर की इमारतों में नक्काशी करके रंगीन संगमरमर की जडाई।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य :–

- हाथी दांत का सर्वाधिक काम होता है – **जयपुर**
- हाथी दांत की चूडियां सर्वाधिक बनती है – **जोधपुर**
- लाख के कलात्मक कार्य के लिये प्रसिद्ध स्थान – **जयपुर**
- लाख की चूडियों को कहा जाता है – **मोखडी**
- लाख के बर्तन (पॉटरी) – **बीकानेर**
- चमडे की जूतियों को जोधपुर में कहा जाता है – **मोजडी**
- जयपुर में चमडे की जूतियों को कहा जाता है – **नागरी**
- चमडे के हस्तशिल्प के लिये प्रसिद्ध स्थान – **जोधपुर**
- कठपुतलियां सर्वाधिक बनती है – **उदयपुर**
- रत्नाभूषण या हीरे जवाहरात के कार्य के लिये प्रसिद्ध स्थान – **जयपुर**
- चंदन काष्ठ कला – **जयपुर**
- रमकडा उद्योग – **गलियाकोट (डूंगरपुर) एवं बांसवाडा**
- सोप स्टोन के तराशे हुये खिलौनों का काम **रमकडा उद्योग** कहलाता है।
- **चटापटी का काम** –कपडे के छोटे टुकडों को बडे कपडों पर लगाना। इसका सर्वाधिक प्रयोग तम्बूओं में किया जाता है। चटापटी का काम प्रसिद्ध है – **शेखावाटी**
- आलागीला/कारीगरी – **शेखावाटी**
- पत्थर एवं चूने की दीवारों पर आकर्षक चित्रकारी को **आलागीला कारीगरी** कहा जाता है।
- आलागीला कारीगरी करने वाले कारीगर **चूनगर** कहलाते हैं।
- आलागीला के सर्वाधिक कारीगर – **बीकानेर**
- नांदडे सर्वाधिक बनाये जाते हैं – **भीलवाडा**
- चूनरी सर्वाधिक बनायी जाती है – **जोधपुर**
- मलमल उद्योग – **मथानिया जोधपुर**
- तारकशी का सर्वाधिक कार्य किया जाता है – **नाथद्वारा**
- मुरादाबादी कार्य (पीतल के बर्तन) –**जयपुर**
- ऊनी बरडी के लिये प्रसिद्ध स्थान – **जैसलमेर**
- पाव रजाई – **जयपुर**

  गोटा –सूती ताने पर बादले के बाने से बनी बेल को गोटा कहते हैं।
- गोटा उद्योग का प्रमुख केन्द्र – **खण्डेला (सीकर), जयपुर**
- खण्डेला के गोटा बुनकर सूरत (गुजरात) से जरी मंगाते हैं।
- गोटा के प्रकार – **गोटा, लप्पा–लप्पी,** बांकडी आदि।
- चौडाई के आधार पर गोटा के प्रकार –**चौमास्या, अठमास्या।**
- छीपों की गली – आहड **(उदयपुर)**
- अकोला को छीपों का **अकोला** भी कहा जाता है।
- प्रतापशाही एवं राजाशाही –**लहरिया के प्रकार**
- थिरमा कहा जाता है – **ऊनी चादर को**
- **पाहुना** (उदयपुर) – **बुनाई केन्द्र**
- गलीचे के काम के लिये प्रसिद्ध शहर – **जयपुर**
- बीकानेर जेल का गलीचो का काम सर्वाधिक सुन्दर माना जाता है।
- लाख के काम के लिये प्रसिद्ध व्यक्ति – **अयाज अहमद (जयपुर)**
- ब्लूपॉटरी का काम मुगल बादशाह आगरा एवं दिल्ली से जयपुर लाये।
- **दिल्ली राष्ट्रपति भवन** धौलपुर के लाल पत्थर से बना है।
- **बादामी पत्थर** – **जोधपुर**
- **सफेद संगमरमर** – **मकराना**
- लोहयुक्त सफेद संगमरमर – **राजनगर**
- काला संगमरमर – **भेंसलाना**
- **ग्रेनाइट** – **जालौर**
- कड़ा पत्थर सफेद – **थमोतर**
- लाल पत्थर – **धौलपुर**
- गुलाबी पत्थर – **संगमरमर**
- **कोफ्तगिरी** का काम पंजाब से राजस्थान लाया गया।
- मीना की कारीगरी जयपुर के महाराज **मानसिंह प्रथम** लाहौर से लाये।
- सोतन, हजारा, लटक, डोडे, धनियां, इलायची – **बूटों के नाम**
- महादेव, लक्ष्मीनारायण, सत्यनारायण, हनुमान सहाय, धनेपिया – **बगरू के द्वीपो के नाम**
- जरी का काम सूरत से महाराजा **सवाई जयसिंह** के समय जयपुर लाया गया था।
- लाल रंग की ओढनियों पर गोंद मिश्रित मिट्टी की छपाई की जाती है – **जयपुर व उदयपुर**

10. लोक सम्प्रदाय

सम्प्रदाय को दो भागों में बांटा जा सकता है –

1. **सगुण :** कापालिक, पाशुपति, लिंगायत, काश्मीरिक
2. **वैष्णव सम्प्रदाय:** रामानुज (राम के उपासक)
   रामानंदी (राम के उपासक)
   निम्बार्क (कृष्ण के उपासक)
   वल्लभ (कृष्ण के उपासक)
   गौडीय (कृष्ण के उपासक)
3. **शाक्त सम्प्रदाय:** देवी के उपासक
4. **नाथ सम्प्रदाय**

1. शैव सम्प्रदाय

- भगवान शिव की उपासना करने वालों को **शैव** कहा जाता है।
- **शिव भक्ति** के विषय में प्रारंभिक जानकारी सिंधु घाटी से प्राप्त होती है।
- ऋग्वेद में शिव से साम्य रखने वाले देवता – **रूद्र**
- शैव धर्म का प्रारंभ एक सम्प्रदाय के रूप में माना जाता है –**शुंगकाल से**
- अर्द्ध नारीश्वर तथा त्रिमुर्ति की पूजा आरंभ हुई – **गुप्त काल में**
- **लिंग पूजा** का प्रथम स्पष्ट उल्लेख मिलता है – **मत्स्य पुराण से**
- शिव की प्राचीनतम मूर्ति **'गुडीमल्लम लिंग रेनगुटा'** से मिली है।
- शैव मत का सबसे प्राचीन उप सम्प्रदाय – **पाशुपात**
- शैव धर्म (पाशुपति) के प्रवर्तक – **लकुलीश**
- कापालिक उपसम्प्रदाय के इष्ट देव – **भैरव**
- भैरव को **शिव का अवतार** माना जाता है ।
- शिव लिंग की पूजा करने वाला उप सम्प्रदाय – **लिंगायत**

2. वैष्णव सम्प्रदाय

- प्रमुख आराध्य देव – **विष्णु**
- बैष्णव सम्प्रदाय या भागवत धर्म के संस्थापक–**वासुदेव कृष्ण**
- श्री कृष्ण का सर्वप्रथम उल्लेख मिलता है–**छान्दोग्यम उपनिषद्**
- ब्राह्मण धर्म के जटिल कर्मकाण्ड एवं यज्ञीय व्यवस्था के विरूद्ध प्रतिक्रिया के स्वरूप उदय होने वाला प्रथम सम्प्रदाय – **बैष्णव या भागवत सम्प्रदाय।**

वैष्णव सम्पद्राय के उपसम्प्रदाय

(1) रामानुज सम्प्रदाय –

- प्रवर्तक – **रामानुजाचार्य**
- रामानुजाचार्य की प्रमुख पुस्तक – **श्री भाष्य**
- रामानुजाचार्य द्वारा प्रतिपादित प्रमुख सिद्धान्त – **विशिष्टा द्वैतावाद**
- भारत में भक्ति आंदोलन शुरू करने का श्रेय – **रामानुजाचार्य**
- रामानुज सम्प्रदाय की प्रमुख गद्दी – **गलता जी (आमेर) जयपुर**
- गलता जी को **'उत्तर तोताद्रि'** भी कहा जाता है।

(2) रामानंदी सम्प्रदाय –

- प्रवर्तक – **रामानन्द**
- रामानन्द रामानुजाचार्य के शिष्य थे।
- रामानन्द **भक्ति आंदोलन** को उत्तर भारत में लाये।
- रामानन्दी सम्प्रदाय के अनुयायी आडम्बर और ऊँच–नीच के विरोधी हैं।
- रामानन्द के प्रमुख शिष्य –**कबीर, धन्ना, पीपा, रैदास** आदि।
- राजस्थान में रामानंदी सम्प्रदाय के प्रवर्तक –**कृष्णदास, पयहारि**
- जयपुर नरेश **सवाई जयसिंह** ने रामानंदी सम्प्रदाय को प्रश्रय दिया तथा अपने राजकवि
- रामानंदी सम्प्रदाय का उपसम्प्रदाय जिसने निर्गुण विचारधारा अपनाई –**रामस्नेही**
- प्रमुख ग्रन्थ – **रामरासा**
- रामानंदी सम्प्रदाय की प्रमुख विशेषता –**राम की भक्ति और पूजा**
- प्रमुख पीठ – **गलता जी (जयपुर) , रैवासा (सीकर)**

(3) निम्बार्क सम्प्रदाय (हंस सम्प्रदाय)

- प्रवर्तक – **आचार्य निम्बार्क**
- आचार्य निम्बार्क की प्रमुख पुस्तक – **वेदान्त परिजात**
- प्रमुख सिद्धान्त – **द्वैताद्वैतवाद**
- प्रमुख पीठ – **सलेमाबाद (अजमेर)**
- निम्बार्क सम्प्रदाय की पुरानी पीठ मथुरा में थी जहां से **परशुराम देवाचार्य** (नारनौल, जयपुर) इस पीठ को **पुष्कर के पास सलेमाबाद** (अजमेर) ले आये।
- इस सम्प्रदाय में राधा को कृष्ण की रचकीया (परिणीता) मानते हुये उनके युगल स्वरूप की पूजा की जाती है।
- इस सम्प्रदाय में **राधा की भक्ति** पर जोर दिया जाता है।

(4) बल्लभ सम्प्रदाय (पुष्टिमार्ग)

- प्रवर्तक – **वल्लभाचार्य** , प्रमुख पुस्तक – **अणुभाष्य**
- प्रमुख सिद्धांत – **शुद्धाद्वैतवाद**
- वल्लभाचार्य में वृंदावन के श्रीनाथ जी के मंदिर में **पुष्टि मार्ग** की स्थापना की।
- वल्लभाचार्य के पुत्र **विठ्ठलदास** जी ने **अष्ट छाप मंडली** तैयार की।
- मुगल शासक औरंगजेब द्वारा जब हिन्दु देवी देवताओं के मंदिर एवं मूर्तियों को तोडा जा रहा था तो मेवाड के महाराणा **राजसिंह श्रीनाथ जी की मूर्ति को जतीपुरा (गोवर्धन)** से राजस्थान लेकर आये तथा **सिंहाड गांव (नाथद्वारा)** में स्थापित की।
- राजस्थान का ब्रज – **नाथद्वारा**
- वल्लभ सम्पद्राय की प्रमुख पीठ – **नाथद्वारा (राजसमंद)**
- किशनगढ के शासक जिन्होंने वल्लभ सम्प्रदाय अपनाया तथा राज त्यागकर वृंदावन चले गये और अपना नाम **नागरीदास** रखा – **सावंतसिंह**
- वल्लभ सम्प्रदाय के मंदिरों को कहा जाता है – **हवेली**
- वल्लभ सम्प्रदाय द्वारा कृष्ण के बाल रूप की पूजा **'सेवा'** के रूप में की जाती है तथा इनके दर्शन को **'झांकी'** कहा जाता है।
- वह शिलालेख जिससे राजस्थान में संकर्षण **वासुदेव की पूजा** का उल्लेख मिलता है – चित्तौड के निकट **धोंसुंडी गांव** के द्वितीय शती ई. पू. के शिलालेख
- जोधपुर के निकट मंडोर में भी गुप्तकालीन शिलाफलकों में **कृष्ण लीला** चित्रित मिली है।

वल्लभ सम्प्रदाय की अन्य पीठें

प्रथम पीठ – **मथुरेश (बडे मथुरेशजी) , कोटा**
द्वितीय पीठ – **विठ्ठलदास जी, नाथद्वारा (राजसमंद)**
तृतीय पीठ – **द्वारिकाधीश, कांकरौली (नाथद्वारा)**
चतुर्थ पीठ – **गोकुलनाथजी, गोकुल (उत्तरप्रदेश)**
पंचम एवं सप्तम पीठ – **गोकुल चन्द्र जी, कामवन, कामां (भरतपुर)**
छठी पीठ – **बालकृष्ण जी, सूरत (गुजरात)**
अष्ठम पीठ – **मदनमोहन जी, कामवन (कांमा)**

वर्तमान में 41 प्रमुख पूष्टिमार्गीय मंदिर राजस्थान में है।

5. गौडीय सम्प्रदाय :-

- प्रवर्तक – **चैतन्य महाप्रभु**
  आमेर के राजा मानसिंह प्रथम द्वारा बनवाये गये मंदिर –
  1. गोविन्द देव जी का मंदिर – **वृंदावन**
  2. राधा गोविंद जी का मंदिर – **जयपुर**
- करौली स्थित मदन मोहन जी मंदिर **गौडीय सम्प्रदाय** का मंदिर है।
- किस राजवंश के शासक गोविन्दजी को राजा एवं स्वयं को उनका दीवान मानकर राज्य संचालन करते थे – **जयपुर**

3. शाक्त सम्प्रदाय

- इस सम्प्रदाय में शक्ति (दुर्गा) की पूजा विभिन्न रूपों में की जाती है।

4. नाथ सम्प्रदाय –

- नाथ सम्प्रदाय के प्रवर्तक – **नाथमुनि**
- प्रमुख पीठ – **महामंदिर (जोधपुर)**

नाथ सम्प्रदाय की दो शाखायें हैं –

1. बैरागनाथ – इसका केन्द्र **राता डूंगा** (अजमेर) है।
2. माननाथी – इसका केन्द्र **जोधपुर** है।

- जोधपुर के **महामन्दिर** का निर्माण **मानसिंह** ने करवाया।

वैष्णव सम्प्रदाय के विभिन्न मत –

1. विशिष्ट द्वैतवाद – **रामानुजाचार्य**
2. अद्वैतवाद – **शंकराचार्य**
3. द्वैतवाद – **माधवाचार्य)**
4. द्वैताद्वैतवाद – **निम्बकाचार्य**
5. शुद्वाद्वैतावाद – **बल्लभाचार्य**

निर्गुण सम्प्रदाय

1. जसनाथी सम्प्रदाय

- प्रवर्तक – **जसनाथ**
- जसनाथ जी का जन्म – **कतरियासर ग्राम** (बीकानेर) में
- जसनाथजी का जन्म – **संवत् 1539 में जाट परिवार में हुआ।**
- जासनाथ जी के गुरू – **गोरखनाथ**
- जसनाथी सम्प्रदाय की प्रमुख पीठ – **कतरियासर (बीकानेर)**
- जसनाथ जी ने 24 वर्ष की अवस्था में **जीवित समाधि** ली थी।
- इनके अनुयायी गले में **काली ऊन का धागा** बांधते हैं, साधु **भगवा वस्त्र** पहनते हैं ।
- इस सम्प्रदाय की विशिष्ट पहचान है-**रात्रि जागरण, अग्निनृत्य**
- जसनाथी सम्प्रदाय के प्रमुख अनुयायी – **जाट जाति के लोग**
- इस सम्प्रदाय के अनुयायी **36 नियमों** को मानने वाले होते हैं।
- संसार से विरक्त होने वाले अनुयायी को **परमहंस** कहा जाता है।
- भगवा वस्त्र धारण करने वालों को **सिद्ध** कहा जाता है।
- जसनाथ जी के उपदेश **सिमूंधडा** और **कोडां** ग्रंथों में संग्रिहित है।

2. विश्नोई समाज

- प्रवर्तक – **जाम्भोजी/ जाम्भेश्वर/ जम्भनाथ**
- जांभोजी का जन्म **पीपासर (नागौर)** में विक्रम संवत् 1508 को हुआ।
- जाम्भोजी को इनके अनुयायी **विष्णु का अवतार** मानते हैं।
- विश्नोई सम्प्रदाय के लोग 20 + 9 = **29 नियमो** का पालन करने के कारण विश्नोई कहलाये।
- यह सम्प्रदाय **वन एवं वन्य जीवों** की रक्षा के लिये समर्पित है।
- प्रमुख पीठ एवं मृत्यु – **मुकाम तालवा (नोखा, बीकानेर)**
- प्रमुख ग्रंथ – **जम्भसागर**
- जाम्भोजी की समाधि पर फाल्गुन तथा **आषाढ अमावस्या** को मेला लगता है।
- इस सम्प्रदाय में **शव को गाडने की, सिर मूंडने की, दाढी रखने की** प्रथायें हैं जो हिन्दु-मुस्लिम समन्वय का संकेत देती है।
- जाम्भोजी **गोरखनाथ** जी के शिष्य थे।

3. रामस्नेही सम्प्रदाय

- प्रवर्तक – **रामचरण जी**
- जन्म – **सोडा ग्राम जयपुर**
- मृत्यु – **शाहपुरा, भीलवाडा**
- रामस्नेही सम्प्रदाय की प्रमुख पीठ – **शाहपुरा, भीलवाडा**
- **अन्य पीठें** –
  (1) खेडापा (जोधपुर) – **रामदास जी**
  (2) सिंहथल (बीकानेर)– **हरिदास जी**
  (3) रैण (नागौर) – **दर्याब जी**
- रामस्नेही सम्प्रदाय के लोग **विवाह नहीं करते** तथा **गोद लेकर** अपना शिष्य बनाते हैं।
- हिन्दु मुस्लिम एकता को बढावा देने वाले संत – **दर्याब जी**
- रामस्नेही सम्प्रदाय के आदि संत – **रामदास जी**

4. दादू सम्प्रदाय

- प्रवर्तक – **दादू दयाल जी**
- जन्म – **अहमदाबाद में ब्राह्मण परिवार**
- कार्य क्षेत्र – **राजस्थान**
- प्रमुख पीठ – **नारायणा सांभर (जयपुर)**
- दादू दयाल जी को **राजस्थान का कबीर** कहा जाता है।
- दादूजी द्वारा रचित ग्रंथ – **दादू जी री वाणी और दादू जी रा दूहा।**
- 'दादू खोल' नामक गुफा जिसमें दादू जी ने समाधि ली – **बहराणा पहाडी (नारायणा)**
- दादू पंथ मं सत्संग को **अलख-दरीबा** कहा जाता है।
- दादू जी के उपदेशों की भाषा **सधुक्कडी** है।
- दादू जीने गृहस्थ जीवन व्यतीत किया तथा **गरीब दास** और **मिसकीन दास** इनके दो पुत्र हुये।

- दादूजी के प्रमुख शिष्य -**बखनाजी, रज्जबजी, सुंदरदास, संतदास, गरीबदास, मिसकीन दास।**
- **रज्जब जी** जाति से **पठान** थे तथा इनका जन्म **सांगानेर** में हुआ, ये **जीवन भर दूल्हे के वेश** में रहे।
- दादूजी के गुरू - **वृद्धानंद जी** थे।
- दादू सम्प्रदाय के प्रमुख उप सम्प्रदाय :-
  1. खाकी 2. नागा 3. खालसा 4. उत्तराणी 5. विरक्त
- दादू पंथी अपने शवों को जंगलों में खुला छोड देते हैं।

5. लालदासी सम्प्रदाय

- **प्रवर्तक :- लालदास जी**
  जन्म - **धौलीधूब (अलवर) में मेव परिवार में।**
  प्रमुख पीठ - **नगला गांव (भरतपुर), शेरपुर (अलवर)**
  लालदास जी जाति से **मेव** थे तथा **लकडहारे** का काम करते थे।

6. चरणदासी सम्प्रदाय

- प्रवर्तक - **चरणदास जी**
  जन्म - **डेहरा (अलवर)**
  प्रमुख पीठ - **दिल्ली**
  प्रमुख ग्रंथ - **ब्रह्म ज्ञान सागर, बह्यचरित्र, भक्ति सागर, ज्ञान स्वरोदय** चारणदासी सम्प्रदाय के लोग **पीले वस्त्र** पहनते हैं।
  प्रमुख विशेषता - **सगुण एवं निर्गुण का मिश्रण।**
  चरणदासी सम्प्रदाय के नियम - **42**

7. निरंजनी सम्प्रदाय

- प्रवर्तक - **हरिदास जी**
  जन्म -**कापडोद गांव डीडवाना (नागौर)**
  प्रमुख पीठ - **गाढा, डीडवाना नागौर**
  मूलनाम - **हरिसिंह सांखला, ये पहले डाकू थे।**
  उपदेशात्मक ग्रंथ - **मंत्रराज प्रकाश, हरि पुरूष जी की वाणी**
  उपसम्प्रदाय - **निहंगा, घरवारी**

राज. में प्रमुख व्यक्तियों के उपनाम

- अफीम मुक्ति आंदोलन के प्रणेता - नारायण सिंह माणकलाव
- मीनाकारी का जादूगर - सरदार कुदरत सिंह
- भपंग का साथी - जहूर खां
- खड़ताल का जादूगर - सद्दीक खां
- सुरणाई का जादूगर - पेपे खां
- नगाड़े का जादूगर - रामकिशन सोलंकी
- पखावज के पंडित - पुरुषोत्तम दास

राज. में हनुमान मंदिर

- दाढी मूंछो वाले हनुमान - सालासर (चूरू)
- बाल प्रतिमा वाले हनुमान - मेंहदीपुर बालाजी (दौसा)
- वृद्ध प्रतिमा वाले हनुमान - वीर हनुमान, (सामोद चौमूं, जयपुर)
- शयन मुद्रा या लेटे हुए हनुमान - पाण्डुपोल (अलवर)
- इच्छा पूर्ण हनुमान - सरदारशहर (चूरू)

11.लोक संत

1. **संत पीपा** -
   जन्म - **गागरौन खींची राजवंश झालावाड में।**
   माता का नाम - **लक्ष्मीवती**
   पीपा का बचपन का नाम - **प्रताप**
   गुरू का नाम - **रामानंद**
   संत पीपा जी का मंदिर - **समदडी (बाडमेर)**
   राजस्थान में भक्ति आदोंलन का जनक - **संत पीपा**
2. **संत धन्ना जी**-
   जन्म - **धुवन गांव टोंक (जाट परिवार में)**
   संत धन्ना ने रामानंद से **दीक्षा** ली।
   राजस्थान में धार्मिक आंदोलन का श्री गणेश- **संत धन्ना जी**
3. **संत रज्जब जी** -जन्म - **सांगानेर (जयपुर)**
   इन्होंने जीवन भर **दूल्हे के वेश में** दादू के उपदेशों का बखान किया।
   ग्रंथ - **रज्जब वाणी, सर्वगी**
4. **रैदास** - ये जाति से **चमार (जाटव)** थे तथा **रामानंद के शिष्य** थे।
   ये महाराष्ट्र के थे।
   रैदास **मीरा के गुरू** थे तथा इनकी छतरी **चित्तौड के कुंभश्याम मंदिर** में स्थित है।
   ग्रंथ - **रैदास की परची**
5. **संत शिरोमणि मीरा** - जन्म - **बाजौली (पाली)**
   पालन पोषण - **कुडकी मेडता सिटी (नागौर)**
   पिता - **रतनसिंह राठौड**
   बचपन का नाम - **पेमल**
   पति - **मेवाड के महाराणा सांगा के पुत्र भोजराज**
   मीरा ने **दासी सम्प्रदाय** की स्थापना की। मृत्यु - **रणछोड मंदिर, डाकोर (गुजरात)** में **श्री कृष्ण जी की प्रतिमा** में विलीन हो गयी।
   राजस्थान की राधा - **मीरा**
6. **गवरी बाई** - जन्म - **डूंगरपुर**
   गवरी बाई ने आदिवासी क्षेत्र में **कृष्णभक्ति** का प्रसार किया
   गवरी बाई को बागड की मीरा कहा जाता है।
7. **संत मावजी** - जन्म स्थल -**सांवला गांव डूंगरपुर**
   वेणेश्वर धाम के संस्थापक - **संत माव जी**
   इनकी वाणी को **चौपडा** कहा जाता है।
8. **संत दुर्लभ जी** -कार्य क्षेत्र - **डूंगरपुर, बांसवाडा**
   इन्हें **राजस्थान का नृसिंह** कहा जाता है।

12. लोक देवता

1. गोगाजी

- जन्म – **ददरेवा (चूरू)** पिता – **जेवर**
  माता – **बाछल** पत्नि – **कमलदे**
- वंश – **नागवंशीय चौहान**
  समाधि – **नोहर, गोगामेडी (हनुमानगढ)**
- प्रतीक चिन्ह – **अश्वारोही भाला लिये योद्धा रूप में।**
- गोगाजी का **महमूद गजनबी** के साथ युद्ध हुआ (1025 में)
- गोगाजी को **जाहरवीर** के नाम से जाना जाता है।
- गोगाजी की सवारी – **नीली घोडी**
- गोगाजी को **सर्पों का देवता** कहते हैं, सर्प के काटने पर इनके नाम का **डोरा** बांधा जाता है।
- गोगाजी के नाम की **राखी** भी विसर्जित की जाती है।
- मेले का आयोजन – **भाद्रपद कृष्ण पक्ष नवमी (गोगानवमी)**
- पूजा स्थल – **खेजडी वृक्ष के नीचे चबूतरे बने होते हैं।**

2. तेजाजी

- जन्म – **खडनाल नागौर**
  पिता – **ताहड़ जी**
- माता – **राजकंवर**
  पत्नी – **पैमल**
- लाखा गूजरी की गायों को छुडाने के लिये मेर जाति से लडते हुये प्राणोत्सर्ग।
- सर्प दंश का इलाज करने वाले तेजाजी के भोपों को **'घोडला'** कहा जाता है।
- तेजाजी को **नागों का देवता** के रूप में पूजा है।
- मृत्यु – **गोरक्षार्थ सैदरिया व्यावर (अजमेर) में।**
- तेजाजी **तलवार धारी अश्वारोही** के रूप में चित्रित है। (सर्प दंशित जिह्वा)
- तेजाजी के चबूतरे को **थान** कहा जाता है।
- तेजाजी की घोडी का नाम – **लीलण (सिणगारी)**
- तेजाजी पशु मेला –**परबतसर नागौर भाद्र शुक्ल दसवीं**
- तेजाजी को **कृषि कार्यों** का **उपकारक देवता** भी माना जाता है।

3. पाबूजी

- वंश – **राठौड वंश**
  जन्म – **कोलूमण्ड गांव फलौदी (जोधपुर)**
- पिता – **धांधलजी राठौड** माता – **कमलादे**
- पत्नी – **फूलमदे** घोडी का नाम – **केसर कालमी**
- गौरक्षार्थ **प्राणों का उत्सर्ग**
- पाबूजी को **ऊँटों के देवता** के रूप में पूजा जाता है।
- इनको **लक्ष्मण का अवतार** माना जाता है।
- प्रतीक चिन्ह – **भाला लिये अश्वारोही, बांयी झुकी पाग**
- ऊँट पालक जाति **रेवारी (राइका) 'पाबूजी के पवाडे'** माठ वाद्य यंत्र के साथ गाते हैं।
- पाबूजी की फड गायी जाती है – **रावण हत्थे के साथ**

4. रामदेवजी

- वंश – **तवंर वंशीय**
  जन्म – **रूणेचा (जैसलमेर), ऊंड्कासमेर (बाडमेर)**
- पिता – **अजमाल** माता – **मेणादे**
- रामदेव के यात्रियों को **जातरू** कहा जाता है।
- रामदेव जी द्वारा चलाया गया पंथ – **कामडिया पंथ**
- मुस्लिम लोग रामदेवजी को **'रामसा पीर'** के नाम से पूजते हैं।
- मेला – **रूणेचा, रामदेवरा (जैसलमेर) भाद्र शुक्ल 2-11 तक**
- रामदेव पशु मेला – **नागौर**
- रूणेचा का मेला **हिन्दु मुस्लिम एकता** का प्रतीक माना जाता है।
- मेला स्थल पर **कामड जाति** की स्त्रियों द्वारा **तेरहताली नृत्य** किया जाता है।
- रामदेव मंदिर में **कपडे के घोडे** चढाये जाते हैं।
- रामदेव जी के गुरू का नाम – **बालीनाथ जी**
- रामदेव जी के **मेघवाल** भक्तों को **'रिखिया'** कहा जाता है।
- मंदिर पर फहराई जाने वाली ध्वजा को **नेजा** कहा जाता है।
- नेजा **पांच रंगों** का होता है।
- इनके मंदिरों को **देवरा** कहा जाता है।
- रामदेव जी की प्रसिद्ध कृति –**चौबीस वाणियां (ये कवि भी थे)**
- रामदेव जी ने **जीवित समाधि** ली थी।
- छोटा रामदेवरा स्थित है – **गुजरात**
- रामदेव जी के नाम पर किये जाने वाले रात्रि जागरण को कहा जाता है – **जम्भा**
- प्रतीक चिन्ह –**चबूतरे पर ताख और ताख और पगल्ये (चरण चिन्ह)**

5. देवनारायण/ देव जी – गुर्जर

- जन्म – **आसींद (भीलवाडा)** पिता – **सवाई भोज**
- माता – **साडू** पूर्व नाम – **उदयसिंह**
- गुर्जर जाति के लोग इन्हें विष्णु का अवतार मानते हैं।
- प्रमुख मेला – **देवमाली (भीलवाडा) माघ शुक्ल सप्तमी**
- देवनारायणजी की फड गुर्जर भोपों द्वारा गायी जाती है।
- देवनारायणजी की फड पर **डाक टिकिट** जारी हुआ है।

6. मल्लीनाथ

- पिता – **तीडाजी** • माता – **जाणींद**
- **मल्लीनाथ जी** कान्हडदेव के भतीजे थे।
- मल्लीनाथ जी के नाम पर बाडमेर का नाम **मालाणी** किया।
- मंदिर – **तिलवाडा (बाडमेर)**
- मेला – **चैत्र कृष्ण एकादशी से 15 दिन**
- पशु के बीमार होने पर इनके नाम का **धागा** बांधा जाता है।

7. वीर कल्ला जी

- जन्म –**मेडता सिटी नागौर**
- कल्लाजी को **'चार हाथों वाले देवता'** के रूप में पूजा जाता है।
- कल्लाजी को **औषधि विज्ञान** (जडी बूटियों) के बारे में ज्ञान था।
- कल्लाजी पर **केसर व अफीम** चढाई जाती है।
- कल्लाजी **मीराबाई के भतीजे** थे।
- कल्लाजी को **शेष नाग का अवतार** माना जाता है।

- चित्तौड के तीसरे शाके में **अकबर** के विरूद्ध लडते हुये **वीरगति** को प्राप्त हुये।
- सामलियां डूंगरपुर में **कल्ला जी** की **काले रंग की प्रतिमा** स्थापित है।

8. तल्लीनाथ जी -

- मूल नाम - **गांगदेव राठौड**
- तल्लीनाथ जी **जालौर** के प्रसिद्ध देवता है।
- वृक्षों के प्रेमी के रूप में प्रमुख देवता - **तल्लीनाथ जी।**
- जहरीले कीटों द्वारा काटे जाने पर उस स्थान पर **तल्लीनाथ के नाम का डोरा** बांधते हैं।

9. हडबू जी

- जन्म - **झूडौल गांव नागौर**
- हडबू जी **रामदेव** जी के **मौसेरे भाई**
- प्रमुख मंदिर - **बेंगटी गांव फलौदी (जोधपुर)**
- इनेक मंदिर में **हडबू जी की गाडी** को पूजा जाता है।

10. देव बाबा

- प्रमुख मंदिर -**नगला जहाज वैर तहसील (भरतपुर)**
- मेला -**भाद्र शुक्ल 5वीं एवं चैत्र शुक्ल 5वीं (वर्ष में 2 बार)**
- देवबाबा गुर्जरों के पालनहार एवं कष्ट निवारक देवता के रूप में पूजे जाते हैं, ये चिकित्सा ज्ञान के ज्ञाता थे।
- पशुओं के बीमार होने पर देव बाबा की जात की जाती है तथा ग्वालों को भोजन कराया जाता है।

11. बाबा झुंझार जी

- जन्म - **इमलोहा गांव (सीकर)**
- प्रमुख पूजा स्थल -**स्यालोदडा गांव (सीकर)**
- **नवदम्पत्ती** इनका **आशीर्वाद** लेने जाते है।
- पूजा स्थान - **खेजडी के वृक्ष के नीचे**।

12. भूरिया बाबा

- गोमतेश्वर का मेला - **शिवगंज सिरोही**
- भूरिया बाबा मीणा जाति के **ईष्ट देव** है।
- मीणा जाति **गोमतेश्वर की झूठी कसम** नहीं खाती।

13. डूंगजी जवाहरजी

- ये दोनों भाई **शेखावाटी के लोकप्रिय देवता** है तथा धनी लोगों को लूटकर गरीबों में बांट दिया करते थे।

14. मेहा जी मांगलिया

- प्रसिद्ध मंदिर - **बापणी**
- प्रिय घोडा - **किरड काबरा**
- मांगलियों के **ईष्ट देव** के रूप में पूजे जाते हैं।
- मेहा जी को **पंचपीर** कहा जाता है।

15. वीर बग्गा जी

- जन्म - **रीडी गांव जांगल प्रदेश (बीकानेर)**
- मुस्लिमों से गायों को मुक्त कराते हुये प्राणोत्सर्ग किया।
- जाखड समाज इनको अपना **कुल देवता** मानता है।

राजस्थान के पंच पीर -

''पाबू हरबू रामदे मांगलिया मेहा''
पांचू पीर पधारिया गोगाजी गेहा।''

1. पाबूजी 2. हडबू जी 3. रामदेव जी
4. मेहा मांगलिया 5. गोगाजी

13. लोक देवियाँ

1. करणी माता - बीकानेर

- करणी माता **राठौडों** एवं **चारणों** की कुल देवी मानी जाती है।
- करणी माता का मंदिर - **देशनोक बीकानेर**
- करणी माता को **चूहों की देवी** भी कहा जाता है।
- मंदिर में पाये जाने वाले **सफेद चूहों को काबा** कहा जाता है।
- बीकानेर और जोधपुर रियासत की स्थापना **करणी माता** के आशीर्वाद से हुई
- मेहरानगढ का किला की नींव करणी माता द्वारा रखी गयी है - **राव जोधा के समय**
- करणी माता का मंदिर **मठ** कहलाता है।

2. कैलादेवी - करौली

- करौली यदुवंश/ **यादवों की कुल देवी** है।
- कैलादेवी का मंदिर **त्रिकुट पर्वत** की घाटी में स्थित है।
- मेले का आयोजन - **चैत्र शुक्ल अष्टमी**
- इस मेले को **लक्खी मेला** भी कहते हैं।
- कैला देवी के भक्तों द्वारा गाए जाने वाले गीत - **लांगुरिया**
- कैलादेवी के सामने स्थित छतरी - **भौरा/बौहरा की छतरी**
- कैलादेवी ने **नरकासुर राक्षस** का वध किया था।
- किवंदती के अनुसार कैलादेवी की प्रतिमा का निर्माण **राजा राघवदास** ने करवाया।
- कंस द्वारा देवकी कन्या का वध करने पर जो कन्या योगमाया थी वही कैलादेवी के रूप में त्रिकुट पर्वत पर अवतरित है।

3. जींण माता - सीकर

- जींण माता **चौहानों की कुल देवी** है।
- **रैवासा (सीकर)** में **हर्ष की पहाडियों** पर जींणमाता का मंदिर स्थित है।
- इन्हीं पहाडियों पर रैवासा सीकर में हर्ष (जींण का भाई)का मंदिर स्थित है -**हर्षनाथ**
- **हर्षनाथ** को भैरव (भैंरो) के रूप में पूजा जाता है।
- मेले का आयोजन **आश्विन** और **चैत्र नवरात्रा** के किया जाता है।
- जींणमाता **ढाई प्याला मदिरा** के लिये प्रसिद्ध है।
- मंदिर का निर्माण पृथ्वीराज - प्रथम के समय राजा **हटड** ने करवाया।
- जींणमाता की मंदिर में **अष्ट भुजी प्रतिमा** है।

4. शिलादेवी/ अन्नपूर्णा - आमेर (जयपुर)

- शिलादेवी आमेर के **कछवाह वंश की कुल देवी** है।
- इस प्रतिमा को आमेर के शासक **राजा मानसिंह प्रथम** बंगाल से लेकर आये थे।
- शिलादेवी के मंदिर पर **चांदी के किवाड** चढे हैं।
- शिलादेवी को **महिसासुर मर्दिनी** भी कहा जाता है।
- यहां **तुलसी** और **मदिरा** का भोग लगाया जाता है जिसे **कच्चा पक्का** कहा जाता है।
- शिलादेवी की प्रतिमा **अष्ट भुजी** है।
- यहां नवरात्रा **षष्टमी** को **मेला** लगता है।

5. शीतलामाता – चाकसू (जयपुर)

- शीतलामाता की **खण्डित** रूप में पूजा की जाती है।
- अन्य नाम – **चेचक की देवी, महामाया, सेढमाता**
- निर्माता – **माधोसिंह**
- सवारी – **गधा**
- पुजारी – **कुम्हार**
- चाकसू में प्रतिवर्ष शीतलाष्टमी को **गधों के मेले** का आयोजन होता है।
- इसी दिन **बास्योडा** मनाया जाता है।

6. नारायणी माता – राजगढ (अलवर)

- नारायणी माता **नाई जाति** की कुल देवी है।
- इसके पुजारी **मीणा** जाति के लोग हैं।
- यह प्रतिहार शैली का मंदिर है।

7. राणी सती माता – झुंझुनूं

- यह **अग्रवाल** जाति की कुल देवी है।
- यहां **त्रिशूल की पूजा** की जाती है।
- **भाद्रपद अमावस्या** को मेले का आयोजन होता है।
- इन्हें **नारायणी देवी/ दादी जी** भी कहा जाता है।

8. सकराय माता – उदयपुरवाटी (झुंझुनू)

- सकराय माता **खण्डेलवालों** की कुल देवी है।
- इनका अन्य नाम **शाकम्भरी** देवी है।
- यहां **चैत्र** व **अश्विन** माह क नवरात्रों में मेला भरता है।

9. शाकम्भरी माता – सांभर (जयपुर)

- यह **चौहानों** की कुल देवी है।
- शाकम्भरी माता का दूसरा मंदिर **सहारनपुर** उत्तरप्रदेश में स्थित है।

10. आई माता – बिलाडा (जोधपुर)

- आई माता सिरवी जाति के **क्षत्रियों की कुल देवी** है।
- बिलाडा स्थित मंदिर के **दीपक की ज्योति से केसर** टपकता है।
- आई माता का थान **बडेर** कहलाता है।
- सिख लोग इनके मंदिर को **दरगाह** कहते हैं।

11. स्वांगिया माता/ आवड़ माता – (जैसलमेर)

- स्वांगिया माता भाटी **राजवंश की कुल देवी** है।
- अन्य नाम – **सुगन चिडी (सौन चिरैया)**

12. पथवारी माता

- तीर्थ यात्रा की सफलता हेतु **'पथ की रक्षक देवी'** के रूप में पूजी जाती है।
- यह **गांव के बाहर स्थापित** की जाती है।
- इनके चित्रों में नीचे **काला-गोरा भैरू** तथा ऊपर **कावडिया वीर व गंगोज का कलश** बनाया जाता है।

13. ब्राह्मणी माता – सोरगन गांव, अंता (बांरा)

- यहां देवी की **पीठ का श्रृंगार** एवं **पूजा** की जाती है।
- विश्व में एक मात्र मंदिर जहां देवी की पीठ की पूजा की जाती है।

14. तन्नोट/ तनोटिया देवी – जैसलमेर

- राजस्थान में **सेना के जवान** इस देवी की पूजा करते हैं।

राजस्थान की अन्य लोक देवियां

लोक देवी	विवरण
बाणमाता	उदयपुर। सिसोदिया राजवंश की कुल देवी
नागणेची	जोधपुर। जोधपुर के राठौडों की कुल देवी
शाकम्भरी देवी	सांभर। यह चौहानों की कुल देवी है।
सकराय माता	उदयपुरवाटी(झुंझनू) खण्डेलवालों की कुल देवी
ज्वाला माता	जोबनेर । खंगारोतों की कुल देवी
सच्चियां माता	ओसियां (जोधपुर) ओसवालों की कुल देवी
घेवर माता	राजसमंद की पाल पर इनका मंदिर है।
आशापुरी या महोदरो	मोदरां (जालौर)। जालौर की सोनगरा चौहानों की कुल देवी
भदाणा माता	भदाणा (कोटा)। यहां मूठ से पीडित व्यक्ति का इलाज होता है।
आवरी माता	निकुम्भ (चित्तौडगढ)। यहां लकवे का इलाज होता है।
तनोटिया माता	तनोट (जैसलमेर)। राज्य के सेना के जवान इस देवी की पूजा करते हैं।
महामाया माता	मावली। शिशु रक्षक देवी
बडली माता	आकोला (चित्तौडगढ)। बेड़च नदी के किनारे इनका मंदिर है।
दधिमति माता	गोठ-मंगलोद (नागौर)। यह दाधीच ब्राह्मणों की आराध्य देवी है।
इंदर माता	इन्द्रगढ (बूंदी)।
त्रिपुर सुंदरी (तुरताई)	तलवाडा (बांसवाडा)
पीपाड माता	ओसियां (जोधपुर)
अम्बा माता	उदयपुर व अम्बानगर (आबूरोड)
आसपुरी माता	आसपुर (डूंगरपुर)
चौथ माता	चौथ का बरवाडा (सवाई माधोपुर)
अम्बिका माता	जगत (उदयपुर)
छिंछ माता	बांसवाडा।
सुंडा देवी	सुंडा पर्वत।
बिरवड़ी माता	चित्तौडगढ दुर्ग एवं उदयपुर।
चारभुजा देवी	खमनौर (हल्दीघाटी)
जोगणिया माता	भीलवाडा।
हिंगलाज माता	नारलाई (जोधपुर), लोद्रवा जैसलमेर)
भांवल माता	भांवल ग्राम (मेडता, नागौर)

NEW INDIA

14.धर्म

1. हिन्दु धर्म

- हिन्दु धर्म की प्राचीनता **शिव** से जुडी है।
- हिन्दुओं में मूर्ति पूजा और मंदिर निर्माण प्रारंभ हुआ – **गुप्तकाल में**
- प्राचीन ऐतिहासिक स्त्रोतों से राजस्थान में किसकी पूजा के साक्ष्य मिले हैं –**ब्रह्मा, सूर्य**
- मेवाड के शासक स्वयं को **एकलिंग जी का दीवान** मानते थे।
- हिन्दु धर्म वर्तमान में दो प्रमुख धर्मो में विभाजित है – **सनातनी व आर्य समाज**
- हिन्दु धर्म की सर्वाधिक जनसंख्या – **जयपुर**
- हिन्दु धर्म का सर्वाधिक प्रतिशत – **डूंगरपुर , दौसा**

2. इस्लाम धर्म या मुस्लिम धर्म

- इस्लाम धर्म के प्रवर्तक – **मोहम्मद साहब (सउदी अरब)**
- विश्व में इस्लाम का प्रमुख तीर्थ स्थल – **मक्का और मदीना**
- राजस्थान और भारत का सबसे बडा तीर्थ स्थल – **ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह (अजमेर)**
- ख्वाजा मुइनुद्दीन को **गरीब नबाज** भी कहा जाता है।
- राजस्थान में जबरन हिन्दु से मुस्लिम बनी जातियां – **कायमखानी (शेखावत) मेव (अलवर व भरतपुर)**
- मुस्लिम धर्म की प्रमुख जातियां – **मांगणियार, मेर, लंगा, मीरासी**
- राजस्थान में मुइनुद्दीन चिश्ती का आगमन समय – **पृथ्वीराज चौहान-तृतीय**
- इस्लाम के प्रमुख धर्म ग्रंथ – **कुरान, हदीस**
- इस्लाम धर्मावालाम्बियों का पूजा स्थल –**मस्जिद**
- इस्लाम धर्म का प्रथम खलीफा –**अबू बर्क (तुर्की का शासक)**
- राजस्थान में सर्वाधिक मुस्लिम पाये जाते हैं –**जयपुर**
- सर्वाधिक मुस्लिम प्रतिशत – **जैसलमेर**
- इस्लाम धर्म के प्रमुख सम्प्रदाय – **शिया व सुन्नी**

3. सिक्ख धर्म

- संस्थापक – **गुरू नानक देव**
- अंतिम गुरू – **गुरू गोविंद सिंह**
- प्रमुख धर्म ग्रंथ – **गुरू ग्रंथ साहिब**
- कुल गुरू – **10**
- पूजा स्थल – **गुरूद्वारा**
- खालसा पंथ की स्थापना – **गुरू गोविंद सिंह**
- डेरा सच्चा सौदा – **सिक्ख धर्म का उपभाग**
- डेरा सच्चा सौदा के मुखिया – **गुरू राम रहीम सिंह**
- मुख्यालय – **सिरसा हरियाणा**
- सर्वाधिक सिक्ख जनसंख्या (राजस्थान) में – **गंगानगर**
- सर्वाधिक जनसंख्या प्रतिशत – **गंगानगर**
- सिक्खों का प्रमुख केन्द्र – **हनुमानगढ**

4. जैन धर्म

- प्रवर्तक – **महावीर स्वामी**
- राजस्थान में विकसित जैन धर्म की नई शाखा – **तेरहपंथी**
- तेरहपंथी सम्प्रदाय के प्रवर्तक – **भीकम जी औसवाल**
- तेरहपंथी सम्प्रदाय के सबसे चर्चित आचार्य – **आचार्य तुलसी**
- अणुव्रत सिद्धांत के प्रतिपादक – **आचार्य तुलसी**
- राजस्थान में जैन धर्म के प्रमुख केन्द्र – **भीनमाल (जालौर), महावीरजी (करौली)**
- राजस्थान में सर्वाधिक जनसंख्या – **उदयपुर**
- सर्वाधिक जैनियों का प्रतिशत – **उदयपुर**

5. ईसाई धर्म

- प्रवर्तक – **ईसा मसीह**
- ईसाई धर्म दो भागों में बंटा है – **कैथोलिक, प्रोटेस्टेट**
- राजस्थान में ईसाईयों का प्रमुख केन्द्र – **अजमेर**
- राजस्थान में सर्वाधिक ईसाई जनसंख्या – **अजमेर**
- सर्वाधिक प्रतिशत – **बांसवाडा**

6. बौद्ध धर्म

- प्रवर्तक – **महात्मा बुद्ध,**
- धर्म ग्रंथ- **दीपवंश, महावंश – जातक**
- बौद्ध पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं।
- पूजा स्थल – **मठ/ बौद्ध बिहार**
- साहित्यिक भाषा – **पालि**
- प्रमुख सिद्धांत – **अष्टांगिक मार्ग, चार आर्य सत्य हैं**
- सर्वाधिक जनसंख्या व प्रतिशत –**अलवर**

7. पारसी धर्म

- संस्थापक – **जरूथुस्ट (ईरान)**
- प्रमुख ग्रंथ – **जेंद अवेस्ता (ऋग्वेद का समकालीन)**
- पूजा स्थल – **अग्नि मंदिर**
- पारसी धर्म के लोग **सूर्य की पूजा** करते हैं तथा ये शवों को जलाने व दफनाने के स्थान पर **पक्षियों के लिये खाने को** खुले में छोड देते हैं।

8. यहूदी धर्म

- प्रवर्तक – **मूंसा (फिलीस्तीन)**
- प्रमुख ग्रंथ – **तोरा**
- पूजा स्थल – **सिनागोग**
- यहूदी धर्म की भाषा – **हिब्रू**
- वर्तमान में यहूदियों का सबसे चर्चित देश – **इजराइल**

15. दुर्ग

- राजस्थान में स्थापत्य कला का जनक – **राणा कुंभा**
- राजस्थान में **84 दुर्गों** में से **32 दुर्गों** का निर्माण **राणा कुंभा** ने करवाया था।
- **शुक्र नीति** के अनुसार राज्य के **सात अंग** माने गये है जिनमें दुर्ग भी एक प्रमुख अंग है।
- राज्य को **मानव शरीर** का रूप मानते हुये शुक्रनीति में **दुर्ग को** शरीर के प्रमुख अंग **हाथ की संज्ञा** दी गयी है।

चाणक्य के अनुसार दुर्ग के प्रकार :-

☞ **औदक दुर्ग** – उदक जल को कहते है अतः औदक का अर्थ है जल दुर्ग। अर्थात जिसके चारों ओर अथाह जल राशि फैली हो।

☞ **धान्व दुर्ग** – 'धन्व' संस्कृत में मरूस्थला को कहते हैं। अतः धान्व दुर्ग वह होता है जो मरूस्थल में बना हो तथा उसके चारों ओर झाडियां तथा ऊवड खाबड भूमि हो।

☞ **पार्वत दुर्ग** – जो दुर्ग किसी ऊँचे पर्वत पर स्थित होता है या जिसके चारों तरफ पर्वत हो वह पार्वत दुर्ग कहलाता है।

☞ **वन दुर्ग** – वन दुर्ग वह होता है जो सघन बीहड वन में बना हो तथा जिसके चारों ओर दलदल या सघन कांटेदार झांडियां हों।

शुक्र नीति के अनुसार दुर्गों के प्रकार –

1. पारिख दुर्ग	**2. जल दुर्ग**	**3. धान्व दुर्ग**
4. पारिध दुर्ग	**5. गिरी दुर्ग**	**6. सैन्य दुर्ग**
7. एरण दुर्ग	**8. वन दुर्ग**	**9. सहाय दुर्ग**

मेहरान गढ –जोधपुर

- मेहरानगढ **गिरी दुर्ग** है।
- मेहरान गढ का निर्माण **राव जोधा** ने सन् **1458** (1515 विक्रम संवत) में करवाया।
- मेहरानगढ किले की नींव **मेहर** नामक व्यक्ति को बलि देकर रखी गयी इस कारण इसे **मेहरानगढ** कहा जाता है।
- **मयूर जैसी आकृति** होने के कारण इसे **मयूरध्वज गढ** भी कहा जाता है।
- इस किले को गढ **चिंतामणि** भी कहते हैं।
- इस किले के संबंध में **किपलिंग** ने कहा है कि –
  इस किले का निर्माण फरिश्ते, परियों तथा देवताओं की करामात है।
- मेहरानगढ का किला **चिडिया टूक पहाडी** पर बना हुआ है।
  प्रमुख दर्शनीय स्थल–मोती महल, चौमुण्डा माता का मंदिर, मेहरानगढ संग्रहालय, भूरे खां की मजार, शेरशाह द्वारा निर्मित मस्जिद।

गागरौन का किला –झालावाड

- गागरौन का किला **जल दुर्ग** का **सर्वश्रेष्ठ उदाहरण** माना जाता है।
- गागरौन के किले का निर्माण **डोडा राजा बीसल देव** ने करवाया था अतः इसे **डोडगढ** भी कहते हैं (परमार वंश)
- इस किले को **धूलरगढ** भी कहा जाता है।
- **खींची वंश** के शासक **देवल सिंह** ने इस किले का नाम गागरौन रखा।
- **गागरौन** का किला **मुकन्दरा पहाडियों** पर बना हुआ है।
- यह किला **बिना नींव का किला** हैं।
- गागरौन के शासक **राजा प्रताप राव** आगे चलकर **संत पीपा जी** के नाम से विख्यात हुये थे।
- **ढोला मारू** कथा के नायक का संबंध **गागरौन** से है।
  प्रमुख दर्शनीय स्थल – जौहरकुण्ड, मधुसूदन मंदिर, बुलंद दरबाजा (औरंगजेब द्वारा निर्मित)
  जालिम कोट (कोटा के झाला जालिम सिंह द्वारा निर्मित) कोटा रियासत की टकसाल संत पीपा जी की छतरी, मीठे शाह की दरगाह, हमीदुद्दीन की समाधि।
- गागरौन के किले में दो शाके हुये –
  1. 1423 – **मांडू के सुल्तान होशंगशाह व भोज के पुत्र अचलदास खींची**
  2. 1444 – **मांडु के सुल्तान महमूद खिलजी प्रथम व पाल्हणसी**
- **महमूद खिलजी** प्रथम ने गागरौन का नाम बदलकर **मुस्तफाबाद** रख दिया।
- गागरौन का किला **आहू** व **काली सिंध** नदियों के संगम पर बना है।
  अचल दास री खींचीं वचनिका – प्रसिद्ध कवि **शिवदास गाडण** द्वारा लिखित ग्रन्थ जिसमें **खींचीं वंश** का इतिहास वर्णित है।

सौनार किला–जैसलमेर

- यह **धान्व दुर्ग** है।
- इसे **सोनगढ** तथा **त्रिकुट गढ** भी कहते हैं।
- सौनार गढ को **उत्तरी सीमा का प्रहरी** कहा जाता है।
- सौनार गढ के संबंध में कहा जाता है **''यहां सिर्फ लोहे की टांगे ही ले जा सकती है।''**
- जैसलमेर का किला **बिना चूने के** पत्थर पर पत्थर रख कर बना है तथा इसमें **पीले पत्थरों का प्रयोग** किया गया है।
- जैसलमेर का किला **ढाई शाके** के लिये प्रसिद्ध है।
  1. **अलाउद्दीन खिलजी व भाटी शासक मूलराज के मध्य युद्ध**
  2. **दिल्ली के सुल्तान फिरोजशाह व रावल दूदा के मध्य युद्ध**
  3. **तीसरा अर्द्धशाका राव लूणकरण व कंधार शासक अमीर अली।**
- सौनार गढ राजस्थान का एक मात्र किला है जिसे **विश्व धरोहर सूची** में शामिल किया गया है।
  प्रमुख आकर्षक – जिन मद्रसूरी ग्रंथ भण्डार, 99 बुर्ज, हस्तलिखित ग्रंथों का दुर्लभ भण्डार।

अजयमेरू - अजमेर

- यह **गिरी दुर्ग** है।
- इसे **अजयमेरू, गढ बीठली तथा तारागढ दुर्ग** भी कहा जाता है।
- इसका निर्माण अजय राजा ने **1113** में करवाया था।
- **विशप हेवर** ने इसे **''पूरब का जिब्राल्टर''** कहा है।
- शाहजहां के सेनापति **विठ्ठल दास** ने इसका पुनर्निर्माण करवाया। यह किला **बीठली नामक पहाडी** पर बना है।
- मेवाड के शासक सांगा के भाई **पृथ्वीराज** की पत्नी **ताराबाई** इसी किले में रही।
- मालदेव की पत्नी **रूठी रानी उन्मादे** जीवन भर यहीं रहीं।
- इस दुर्ग के अंदर **पीर मीरान शाह की दरगाह** बनी हुयी है।
- तारागढ पहाडी के नीचे **शीशाखान गुफा** स्थित है।

जालौर का किला -जालौर

- यह **गिरि दुर्ग** है।
- जालौर का किला **सुण्डा पर्वत** पर बना है।
- इस किले का निर्माण **परमार वंश** के शासकों ने करवाया था।
- इस किले को **सुवर्ण गिरी** तथा **सोनलगढ** भी कहते हैं।
- यह किला मारवाड में **सूकडी नदी** के किनारे स्थित है।
- इस किले में **शाहपीर की दरगाह** बनी हुयी है।
- **इल्तुतमिश** के आक्रमण के समय प्रसिद्ध इतिहासकार **हसन निजामी** ने कहा था -

  ''ऐसा किला जिसका दरबाजा कोई आक्रमणकारी नहीं खोल सका''

  प्रमुख आकर्षण - परमार कालीन कीर्ति स्तंभ तोपखाना।

जूनागढ - बीकानेर

- यह **धान्व दुर्ग** है।
- जूनागढ किले का निर्माण **रायसिंह** ने **1594 ईस्वी** करवाया था।
- यह किला **हिन्दु मुस्लिम शैली** का सर्वोत्तम उदारहण है।
- इसके निर्माण में पूर्णत: **लाल पत्थर** का प्रयोग किया गया है।
- राजस्थान का सबसे **प्रसिद्ध शस्त्रागार** जूनागढ किले में स्थित है।
- तेंतीस करोड देवी देवताओं का मंदिर - **जूनागढ**
- जूनागढ किले में **जयमल और पत्ता की गजारूढ** प्रतिमा है।
- जूनागढ में **फारसी व संस्कृत** में हस्त लिखित ग्रंथ उपलब्ध है।
- जूनागढ दुर्ग की आकृति **चतुष्कोणीय** हैं।

चित्तौडगढ दुर्ग -चित्तौडगढ

- यह **गिरि** दुर्ग है।
- यह किला **मेशा की पठार** पर बना हुआ है।
- चित्तौड दुर्ग का निर्माण राजा **चित्रांगद मौर्य** ने करवाया था
- इसे गुहिल वंशीय **बप्पा रावल** ने मौर्य शासक **मानमोरी** से 734 ई. में जीता था
- इसे **राजस्थान का गौरव, किलों का सिरमौर** कहा जाता है।
- चित्तौड दुर्ग **बेडच एवं गंभीरी** नदियों के संगम के समीप अरावली पर्वत माला पर बना है।
- चित्तौडगढ दुर्ग में तीन प्रसिद्ध शाके हैं -

1. **प्रथम शाका**	1303	रतन सिंह-अलाउद्दीन खिलजी
2. **द्वितीय शाका**	1534	विक्रमादित्य-बहादुरशाह
3. **तीसरा शाका**	1567	उदयसिंह-अकबर

- अलाउद्दीन ने इस दुर्ग का नाम बदलकर **खिज्राबाद** रख दिया
- **महाराणा कुंभा** ने इस दुर्ग का जीर्णोद्वार करवाकर इसे **विचित्र कूट** नाम दिया

प्रमुख आकर्षण

- जयमल और पत्ता एवं कल्ला की छतरियां, कीर्ति स्तंभ कुंभश्याम मंदिर, मीराबाई मंदिर, जैन कीर्ति स्तंभ, गोरा बादल महल, नवलक्खा बुर्ज, भीमतल कुण्ड, चित्रांगमोरी तालाब आदि

कुम्भलगढ दुर्ग - राजसमंद

- यह **गिरि** दुर्ग है।
- यह किला **हेमकूट पहाडी** पर बना हुआ है।
- यह **सादडी गांव** के पास स्थित है।
- इस दुर्ग का निर्माण **महाराणा कुंभा** ने शिल्पी **मंडन** की देख रेख में करवाया था।
- यह **मेवाड एवं मारवाड** की सीमा पर स्थित है।
- कुंभलगढ दुर्ग में एक लघु दुर्ग **'कटारगढ'** बना है। इस किले में **'झाली रानी का मालिया''** महल स्थित है।
- **कर्नल जेम्स टॉड** ने इसकी तुलना **'एट्रुस्कन** से की हैं
- **अबुल फजल** ने इस दुर्ग के संबंध में लिखा है ' -
  यह दुर्ग इतनी बुलंदी पर बना है कि नीचे से ऊपर देखने पर सिर से पगडी गिर जाती है।
- कुम्भलगढ का दुर्ग **सैनिक अभियानों** के **संचालन** एवं **विपत्ति** के समय **शरण स्थली** के लिये विख्यात है।
- **कटार गढ** के पास **झालीबाव बावडी** तथा **मामादेव का कुण्ड** है जहां **ऊदा** ने **कुंभा** की हत्या की थी

  प्रमुख आकर्षण - हाथिया गुदा की नाम, कुभास्वामी विष्णु मंदिर **महाराणा रायमल** के पुत्र कुंवर पृथ्वीराज की छतरी।

रणथम्भौर का दुर्ग -सवाई माधोपुर

- यह **गिरि** दुर्ग एवं **वन दुर्ग** है।
- रणथम्भौर का दुर्ग **राणा हम्मीर** की **आन-वान का प्रतीक** है। **प्रमुख विशेषता** - यह दुर्ग एक विशाल पर्वत पर बना है फिर भी यह किला दूर से दिखाई नहीं देता जबकि इसके ऊपर से शत्रु सेना आसानी से देखी जा सकती है।
- रणथम्भौर की नैसर्गिक **सुदृढ सुरक्षा** व्यवस्था से प्रभावित होकर **अबुल-फजल** ने लिखा है **'अन्य सब दुर्ग नंगे हैं जबकि यह दुर्ग बख्तर बंद है।'**
- 1301 में इस दुर्ग को **हम्मीर देव चौहान** से **अलाउद्दीन खिलजी** ने जीत लिया।

  1301 में **रंगदेवी** के नेतृत्व में **रणथम्भौर का शाका** हुआ।

  प्रमुख आकर्षण-गणेश जी का मंदिर, पीर सदरूद्दीन की दरगाह, सुपारी महल, जोंरा-भोंरा, नानीहाड़ तालाब आदि।

सोजत दुर्ग -पाली

- यह **गिरि** दुर्ग है।
- इस दुर्ग का निर्माण **राव जोधा** के पुत्र **नीमा** ने करवाया था
- यह दुर्ग **जोधपुर** और **मेवाड** के बीच **''नानी सीरडी''** नामक पहाडी पर बना हुआ है।

भटनेर का दुर्ग - हनुमानगढ

- यह **धान्व** दुर्ग है।
- इस दुर्ग का निर्माण **भाटी राजा भूपत** ने करवाया था।
- इसे **उत्तरी प्रवेश द्वार का रक्षक** कहा जाता है।
- बीकानेर के शासक **सूरजसिंह** ने इसका नाम **हनुमानगढ** रखा।
- इस दुर्ग पर सर्वाधिक **विदेशी आक्रमण** हुये हैं।
- इस दुर्ग में बलवन के भतीजे **शेख खां की कब्र** है।

भैंसोरोडगढ दुर्ग -चित्तौड

- यह **जल** दुर्ग है।
- यह दुर्ग **चम्बल** और **बामनी** नदियों के संगम पर बना है।
- इसे राजस्थान का **वैल्लोर** कहा जाता है।

बूंदी का किला -बूंदी

- यह **गिरि** दुर्ग है।
- इसे **राजस्थान का दूसरा तारागढ** कहते हैं।
- इस किले की आकृति **तारे** जैसी है।
- बूंदी का दुर्ग अपनी **चित्र शाला** के लिये प्रसिद्ध है।
- इस दुर्ग का निर्माण महाराजा **उम्मेदसिंह** के शासन काल मे हुआ था।
- **कर्नल टॉड** ने बूंदी के किले के **महलों को सौन्दर्य** का **सर्वश्रेष्ठ उदाहरण** बताया है।

लोहागढ -भरतपुर

- यह **धान्व एवं पारिख** दुर्ग है।
- इस किले का निर्माण **महाराजा सूरजमल** ने करवाया था
- इसको **मिट्टी का किला** एवं **अभेद्य दुर्ग** के नाम से भी जाना जाता था
- इस किले के **चारो ओर खाई** है जिसमें **मोतीझील** से **सुजान गंगा नहर** द्वारा पानी लाया जाता था
- **रणजीतसिंह** के शासन काल के समय **लार्ड लेक** ने **1805** में इस किले पर घेरा डाले रखा
- इस किले का प्रमुख आकर्षण **जवाहर बुर्ज** माना जाता है।

जयगढ - जयपुर

- यह **गिरि** दुर्ग है।
- इस किले का निर्माण **मिर्जा राजा जयसिंह** ने प्रारंभ किया तथा **सवाई जयसिंह** ने पूर्ण किया
- जयगढ दुर्ग सम्पूर्ण भारत का एकमात्र किला है जहां **तोप बनाने का कारखाना** है।
- जयगढ किले के अंदर **विजयगढी** नामक **अन्तः दुर्ग** बना हुआ है।
- **जयबाण तोप** का निर्माण **सवाई जयसिंह** ने करवाया
- जयगढ दुर्ग के **तीन** मुख्य प्रवेश द्वार है - **डूंगर दरवाजा, अवनि, भैंरू**

नाहरगढ -जयपुर

- यह **गिरि** दुर्ग है ।
- नाहरगढ को **सुदर्शन गढ** भी कहा जाता है।
- इस दुर्ग का निर्माण **सवाई जयसिंह** ने मराठों के आक्रमण से बचने के लिये करवाया।
- लोक देवता **नाहरसिंह भोंमिया** के नाम पर इस किले का नाम नाहरगढ किला रखा गया
- नाहरगढ दुर्ग में **सवाई माधोसिंह** ने **एक जैसे 9 महलों** का निर्माण करवाया।

  ये 9 महल **विक्टोरिया शैली** में बने हुये हैं।
- नाहरगढ किले में **गैटोर** नामक स्थान पर **कछवाह राजपूतों की छतरियां** बनी हुयी है।

आमेर दुर्ग -जयपुर

- आमेर दुर्ग की नींव कछवाह शासक **भारमल** ने रखी थी
- इस दुर्ग का अधिकांश निर्माण **राजा मानसिंह** ने करवाया

  प्रमुख आकर्षण - शीशमहल, शिलामाता का मंदिर, सौभाग्य मंदिर, जगत शिरोमणि का मंदिर, हाथी की सफारी।
- हाल ही में रियासत कालीन रास्तों का एक जाल आमेर किले में मिला है जिसे **भूल भुलैया** नाम दिया गया है।

नागौर दुर्ग -नागौर

- यह **धान्व** दुर्ग है।
- इस दुर्ग को **नाग दुर्ग** तथा **नागाडा दुर्ग** भी कहा जाता है।
- नागौर को प्राचीन समय में **अहिछत्रपुर** कहा जाता था
- इस किले में अकबर ने **नागैर दरबार** (1570) का आयोजन किया।

  अकबर ने **नागौर** किले मे **शुक्र तालाब** बनवाया।
- इस किले के **6 दरवाजे** प्रसिद्ध है।

मांडलगढ - भीलवाडा

- यह **गिरि** दुर्ग है।
- यह दुर्ग **बनास-बेडच-मेनाल** नदियों के **संगम** पर बना है।
- यहां **जालेश्वर** नामक **जलाशय** स्थित है।

अचलगढ दुर्ग - सिरोही

- यह **गिरि** दुर्ग है।
- इसे **परमार** शासकों ने बनवाया था
- **कुभा** ने गुजरात आक्रमणों से बचने के लिये **अचलगढ** का उपयोग किया

  प्रमुख आकर्षण -अचलेश्वर महादेव मंदिर, सावन भादों झील, ओखा रानी का महल और भंवरायल मंदाकिनी कुण्ड आदि।

अन्य प्रमुख किले

कोटडे का किला	–	**बाडमेर**
इन्दौर का किला	–	**अलवर**
कैसरोली का किला	–	**अलवर**
राजा का किला	–	**नागौर**
मालकोट	–	**मेडता (नागौर)**
मनोहर थाना	–	**झालावाड**
सिलेह गढ	–	**झालावाड**
कोट कास्तां	–	**जालौर**
कन्नौज	–	**चित्तौडगढ**
तिमनगढ (त्रिभुवन)	–	**करौली**
कांकनवाडी	–	**अलवर**
किला अफगान	–	**बाडी (धौलपुर)**
आमानेरी	–	**दौसा**
लोहारगल	–	**झुंझुनूं**
लोहा का गढ	–	**चूरू**
कोषवर्धन	–	**शेरगढ (बारां)**
शेरगढ का किला	–	**धौलपुर**
बनेडा	–	**भीलवाडा**
टॉटगढ	–	**अजमेर**
बाला किला	–	**अलवर**

- **शेरगढ किले** को **दाक्खिन द्वार का गढ** भी कहा जाता है।
- **धारा गढ/ रघुनाथगढ/ चौमुंहा गढ -चौंमूं (जयपुर)**
- **चौबुर्जा** किला (पचेवर का किला)-**टोंक**
- बयाना का किला/ बादशाह दुर्ग/ बाणासुर दुर्ग - **बयाना**
- राजस्थान का सबसे प्राचीन **विजय स्तंभ बयाना** के किले में है।
- इसी में **ऊषा मंदिर**, **ऊषा मस्जिद** और **भीमलाट स्तंभ** बना है।

राजस्थान से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य

- हवेलियों की नगरी- **जैसलमेर**
- हजार हवेलियों का नगर-बीकानेर
- तीर्थो का मामा- पुष्कर
- तीर्थो का भांजा- मंचकुण्ड (धौलपुर)
- तीर्थो की नानी- देवयानी (सांभर, जयपुर)
- पूर्व का पेरिस- जयपुर
- पूर्व को वेनिस- उदयपुर
- 84 कोसी परिक्रमा- कामां (भरतपुर)
- 24 कोसी परिक्रमा- लोहागर्ल (झुंझुनूं)
- 8 खंभों की छतरी- बांडोली (उदयपुर)
- 32 खंभों की छतरी- सवाईमाधोपुर
- 80 खंभों की छतरी- अलवर
- 84 खंभों की छतरी- बूंदी
- क्रोकोडाइल मैन- रामचरण मीणा (कोटा)
- भूतानाडी- जोधपुर
- नगरों की पटरानी- जयपुर
- कबूतरी नृत्य- चूरू
- हरामखोड बावडी- चित्तौडगढ
- ऊँट राज्य पशु बना
- पहली स्मार्ट सिटी- अजमेर
- टेस्ट ट्यूब सिटी- जयपुर
- पहली महिला कुली- मंजू देवी
- अमृत महोत्सव- अजमेर
- हाथी महोत्सव- जयपुर
- हाथी गाँव- कुंडा ग्राम, आमेर
- गाली समारोह- जयपुर (होली पर)
- चौपडा मंदिर- धौलपुर
- चौपड़ा वाचन- भूंगडा गांव (बांसवाडा)
- धौरों का चीता- गोडावण
- कमरकोट- सोनारगढ (जैसलमेर)
- पत्थरों का मंदिर- स्थानक (डूंगरपुर)
- जाहर पीर- गोगाजी
- जिन्दा पीर- गोगाजी
- कलह पीर-कल्याणजी
- बादशाह मला- ब्यावर
- पीरों का पीर- रामदेव जी
- बादशाह होली -नाथद्वारा
- बादशाह सवारी- कोटा
- 84 किले- मेवाड़ में
- 250 किले- राजस्थान में
- 3 विश्व धरोहर-राज. में
- 3 राष्ट्रीय अभयारण्य-राज. में
- 5 जन्तुआलय-राज. में
- 5 कृषि विश्वविद्यालय-राज. में
- ऊँटगिरी का किला- करौली
- भूतों का भानगढ- अलवर
- कोसी मीनार- जयपुर
- रूमाल मंदिर- तनोट (जैसलमेर)
- चैत्र मेला- जयपुर, सिंधी समाज
- पहली स्लम फ्री सिटी-अजमेर
- वाई-फाई सिटी- जयपुर
- ट्यूरिस्ट सिटी- जयपुर
- पहली हाइटेक पंचायत-बुडानिया
- मेट्रो सिटी- जयपुर
- हाथिमना- भील पुरुषों का नृत्य
- गाली गीत- विवाह पर गाये जाते
- गवरी नृत्य- भीलों द्वारा
- घूमर- स्त्रियों द्वारा
- गवरी लोकनाट्य- भीलों द्वारा
- कूमठ दुर्ग- सिवाणा (बाडमेर)
- किसान का अकाल मित्र-खेजडी
- मचान दुर्ग- रणथम्भौर
- पक्षी मेला- मानसागर झील (जलमहल, जयपुर) व आनासागर (अजमेर)

16. हवेलियाँ

जैसलमेर की हवेलियां – पटवों की हवेली
सालिम सिंह की हवेली
दीवान नाथमल की हवेली

बीकानेर की हवेलियां – बछावतों की हवेली
मोहता की हवेली
डागा की हवेली
रामपुरिया की हवेली

जोधपुर की हवेलियां – पाल हवेली
बडे मियां की हवेली
राखी हवेली
पोकरण की हवेली
लालचंद डड्डा की हवेली

शेखावाटी की हवेलियां –

- ☞ पौद्दारों की हवेली – नवलगढ (झुंझुनूं)
- ☞ बघेरियों की हवेली – नवलगढ
- ☞ भगतों की हवेली – नवलगढ
- ☞ ईसर दास मोदी की हवेली – नवलगढ
- ☞ मेहनसर की हवेली – झुंझुनूं
- ☞ टीवढे वाली की हवेली – झुंझुनूं
- ☞ नाथूराम पौद्दार की हवेली– विशाऊ (झुंझुनूं)
- ☞ पंसारी की हवेली – श्री माधोपुर (सीकर)
- ☞ सहजा राम पौद्दार की हवेली – फतेहपुर (सीकर)

अन्य हवेलियां हवामहल हवेली – चूरू
सुनहरी कोठी – टोंक
सोनी जी की नसियां– अजमेर
बागोर की हवेली– उदयपुर
बडे देवता की हवेली– कोटा

महत्वपूर्ण तथ्य–

- **हवेलियों का नगर – जैसलमेर**
- **हवेलियों के मुख्य द्वार** को कहा जाता है– **पोल या ड्योडी**
- **गवाक्ष** –हवेलियों के मुख्य द्वार के दोंनों ओर स्थित चबूतरों को गवाक्ष कहा जाता है।
- पत्थरों की कटाई एवं जालियों के लिये प्रसिद्ध हवेली–**जैसलमेर**
- **सतखण्डा हवेली** – जैसलमेर में पटवों की हवेलियों को सतखण्डा हवेली कहा जाता है।
- **नौखण्डा हवेली**– जैसलमेर में सालिमसिंह की हवेली
- **जहाज महल** –**सालिम सिंह की हवेली** को दो ऊपरी मंजिले लकडी से बनी हुयी थीं इन दो मंजिलों को **जहाज महल** कहा जाता था।
- **हाथी व लालू** दो सगे भाईयों द्वारा बनवाई गई हवेली – **दीवान नथमल की हवेली (जैसलमेर)**
- **लाल पत्थरों** से निर्मित हवेलियां – **बीकानेर**
- जिन हवेलियों में **हिन्दु मुस्लिम यूरोपीय** कला का मिश्रण है– **रामपुरिया हवेली (बीकानेर)**
- **स्थापथ्य कला** की बारीकियों का प्रयोग जिन हवेलियों में हुआ है – **जोधपुर की हवेली**
- **चित्रकारी** के लिये प्रसिद्ध हवेलियां – **शेखावाटी**
- **ओपन आर्ट गैलरी** कहा जाता है – **शेखावाटी**
- **सोने चांदी की चित्रकारी** के लिये प्रसिद्ध हवेली – **मेहनसर (झुंझुनू)**
- **सोने की चित्रकारी** के लिये विख्यात हवेली – **नवलगढ**
- **शेखावाटी की स्वर्ण नगरी** कहा जाता है – **नवलगढ**
- **कृष्णलीला के भित्ति चित्रों** के लिये प्रसिद्ध हवेली – **सहजाराम पौद्दार की हवेली**

देश में राजस्थान

- पहली जैतून रिफाइनरी– लूणकरणसर (बीकानेर)
- पहली गौ–मूत्र रिफाइनरी– पथमेड़ा (जालौर)
- पहला अल्पसंख्यक साइबर गाँव– चांदोली (अलवर)
- सर्वश्रेष्ठ ग्रामीण थाना– कालवाड़ थाना (जयपुर)
- बालिका नीति को लागू करने वाला पहला राज्य– राजस्थान
- युवा नीति को लागू करने वाला पहला राज्य– राजस्थान
- भारत का हॉलैण्ड– राजस्थान
- पहली सबसे बडी खजूर पौध प्रयोगशाला– चौपासनी (जोधपुर)
- बेस्ट लग्जरी ट्रेन – पैलेस ऑन व्हील्स
- प्रथम महाराजा प्रमुख– महाराणा भूपाल सिंह (उदयपुर)
- प्रथम राजप्रमुख– सवाई मानसिंह द्वितीय (जयपुर)
- प्रथम एफ.आर.एस– प्रो. एम.एल. रूनवाल
- प्रथम राज्यपाल– सरदार गुरुमुख निहाल सिंह
- प्रथम विधानसभा अध्यक्ष– नरोत्तम लाल जोशी
- प्रथम विधानसभा उपाध्यक्ष– लालसिंह शक्तावत
- प्रथम विधानसभा में विपक्ष के नेता– जसवंत सिंह

17. मंदिर

राजस्थान में मंदिर स्थापत्य

- राजस्थान में मंदिर होने का सबसे प्राचीन साक्ष्य पुराणों में **पुष्करारण्य** और **अर्बुदालय** का उल्लेख मिला है।
- राजस्थान में सबसे प्राचीन मंदिर में जिनका कि एतिहासिक साक्ष्य है – **गुप्तकाल में**
- **हूण शासकों** द्वारा राजस्थान मे **देवालय** बनवाये गये –**दर्रा अभ्यारण्य**
- इन देवालयों का निर्माण हूण शासक **तोरमाण** व **मिहिर कुल** ने करवाया है जिनमें –
  1. **चार चौमा स्थित भीमचोरी का मंदिर (झालावाड)**
  2. **बाडोली का शिवमंदिर (चित्तौडगढ)**
  3. **कंसुआ का शिव मंदिर (कोटा)**
- राजस्थान का सबसे प्राचीन **समयांकित** मंदिर –**शीतलेश्वर महादेव मंदिर(झालरापाटन)**

शुंग कालीन मंदिर – राजस्थान में शुंग कालीन मंदिर के साक्ष्य भरतपुर स्थित नोंह ग्राम में पाये गये हैं जिसमें **जाखम बाबा या यक्ष की मूर्ति** महत्वपूर्ण है।

गुर्जर प्रतिहार कालीन मंदिर

औसियां (जोधपुर)

- ☞ औसियां प्रतिहार वंश का प्रमुख स्थल रहा है जिसमें प्रमुख मंदिर **हरी हर मंदिर** है।
- ☞ औसिंया में **हरी हर मंदिर** राजस्थान में पंचायतन शैली का सर्व प्राचीन मंदिर है।

आभानेरी –दौसा

- ☞ यह स्थान प्रतिहार वंश से संबंधित रहा है। यहां पर प्रतिहार वंश से संबंधित **रावडानुग्रह** मुख्य है।
- ☞ **रावडानुग्रह** में **रावण** को **कैलाश पर्वत** को उठाते हुये दिखाया है।

बापी	–	**डीडवाना**
बुचकला	–	**जोधपुर**
घटियाला	–	**जोधपुर**
भीनमाल	–	**जालौर**

राजस्थान में मंदिर स्थापत्य शैलियां

1. **पंचायतन शैली**
2. **भूमिज शैली**
3. **कच्छपघात शैली**
4. **महामारू (चालुक्य) शैली**

पंचायतन शैली

- ☞ पंचायतन शैली के मंदिरों में बीच में एक मुख्य मंदिर होता है तथा उस मंदिर के चारों कोंनों पर चार छोटे–छोटे मंदिर होते हैं। इस प्रकार इस शैली में कुल **5 मंदिर** बनाये जाते हैं।
- ☞ पंचायतन शैली का राजस्थान में सबसे प्राचीन मंदिर, **औंसिया स्थित हरिहर मंदिर** है।
- ☞ **दर्रा अभ्यारण्य** स्थित **बाडोली**, **कंसुआ** आदि स्थानों के मंदिर भी **पंच रथ** (पंचायतन) शैली से संबंधित ही हैं।

भूमिज शैली

- ☞ इस शैली के मंदिरों में शिखर के चारों ओर जाल की लतायें तथा पट्टियां पाई जाती हैं एवं चारों कोंनों (शिखर) पर ऊपर से नीचे की ओर घटते आकार में छोटे–छोटे शिखर पाये जाते हैं।
- ☞ भूमिज शैली की प्रमुख विशेषता **शेखरी शिखर** का होना या अनेकाण्डक शिखर का होना है।

भूमिज शैली के प्रमुख मंदिर –

सेवाणी मंदिर	–	**पाली**
कुण्डेश्वर मंदिर	–	**बिजौलिया**
भण्डदेवरा मंदिर	–	**बांरा**

- ☞ **भण्डदेवरा** की अधिकांश मूर्तियां **खजुराहो** (मध्यप्रदेश, छत्तरपुर) की मूर्तियों से समानता रखती हैं। इसलिये **भण्डदेवरा** को **राजस्थान का मिनी खजुराहो** या **हाडौती का खजुराहो** कहा जाता है।

कच्छपघात शैली

- ☞ इस शैली के मंदिरों में प्रमुख विशेषता मंदिर का बीच का पृष्ठ भाग कछुआ की आकृति की भांति बीच में से ऊपर उठा हुआ तथा ऊंचे परकोटे वाला होता है।

कच्छपघात शैली के प्रमुख मंदिर –

सूर्य मंदिर	–	**झालरापाटन**
शांतिनाथ मंदिर	–	**झालरापाटन**
देव सोमनाथ का मंदिर	–	**डूंगरपुर**

महामारू शैली

- ☞ इस शैली को **चालुक्य/ सोलंकी/ प्रतिहार** शैली भी कहा जाता है।
- ☞ महामारू की प्रमुख विशेषता मंदिर के स्तंभ व दीवारों में नक्काशी के द्वारा दर्शायी गयी है।

महामारू शैली के प्रमुख मंदिर –

सोमदेव मंदिर	–	किराडू
समधेश्वर	–	चित्तौडगढ
रणछोड मंदिर	–	खेड़ (बाडमेर)
कामेश्वर	–	आउवा (पाली)
नगर मण्डी माता का मंदिर	–	निमाज (पाली)

- ☞ **मद्यमारू शैली से संबंधित प्रमुख स्थान** – मण्डौर, मेडता सिटी, किराडु, खेड (बाडमेर), आउवा (पाली), निमाज (पाली)
- किराडु को **राजस्थान का खजुराहो** कहा जाता है।
- जगत (उदयपुर) स्थित **अम्बिका माता के मंदिर** को भी **राजस्थान का खजुराहो** कहा जाता है।

प्रमुख मंदिर

दिलवाडा के जैन मंदिर- माउण्ट आबू

(1) विमलशाही का मंदिर-

- इस मंदिर का निर्माण लगभग **1031** में गुजरात के **चालुक्य एवं सोलंकी** वंश के राजाओं के सेनापति एवं जैन व्यापारी **विमलशाह** द्वारा करवाया गया।
- इस मंदिर में जैन तीर्थकार **आदिनाथ** की मूर्ति स्थापित है।
- इस मंदिर के बारे में इतिहास कार **कर्नल जेम्स टॉड** ने कहा है कि -

  ''भारत में अगर ताजमहल के बाद कोई इमारत हैतो वह है विमलशाही का मंदिर''।

(2) लूणवशही का मंदिर-

इस मंदिर का निर्माण गुजरात के सोलंकी राजाओं के सेनापति **वास्तुपाल** एवं **तेजपाल** के द्वारा 1231 में करवाया गया।

☞ इसमें **नैमीनाथ की मूर्ति** स्थापित है।

☞ लूणवशही के मंदिर में **देवरानी-जेठानी के दो गोखडे** स्थापित हैं

ऋषभदेव जी का मंदिर -उदयपुर

☞ इस मंदिर में भगवान **ऋषभ देव** जी की मूर्ति स्थापित है।

☞ **काला जी** - इस मंदिर में काले संगमरमर की मूर्ति स्थापित है जिसे भील लोग पूजते समय आदिवासियों के काला जी नाम से पुकारते हैं।

☞ इस मूर्ति पर **केसर** चढाई जाती है जिस कारण इसका अन्य नाम **केसरयिा नाथ** भी है।

☞ हाल ही में यह मंदिर **आदिवासी** और **जैनियों** में हुये विवाद के कारण चर्चित रहा है।

श्री नाथ जी का मंदिर - नाथद्वारा

- इसे **सातध्वजा के स्वामी का मंदिर** भी कहा जाता है।
- यह मंदिर **वैष्णव सम्प्रदाय** का प्रमुख मंदिर है तथा इस मंदिर को **पुष्टि मार्गीय** (वैष्णव सम्प्रदाय का उपभाग) सम्प्रदाय का प्रमुख मंदिर माना जाता है।
- **श्रीनाथ जी की मूर्ति** को **गोवर्धन** (गांव जतीपुरा) से **सिहाड गांव** (राजसमंद) में स्थापित किया गया था।
- उस समय राजसमंद क्षेत्र के **राजा राजसिंह** थे जिनके सहयोग से **सिहांड** में इस मंदिर का निर्माण किया गया।
- वैष्णव सम्प्रदाय के मंदिरों को **हवेली** कहा जाता है तथा इसमें गाये जाने वाले संगीत को **हवेली संगीत** कहा जाता है।
- श्रीनाथ जी का मंदिर राष्ट्रीय **राजमार्ग-8** पर स्थित है।
- **श्रीनाथ जी** के स्वरूप के पीछे कृष्णलीला विषयक चित्रावली युक्त जो पट लगाया जाता है उसे **पिछवाई** कहा जाता है।

रसिया बालम का मंदिर - माउण्ट आबू

☞ यह मंदिर **अमर प्रणय कथा** का द्योतक है।

☞ इस मंदिर का अन्य नाम **कुंवारी कन्या** का मंदिर है।

श्री गोविंद देव जी मंदिर- जयपुर

- इसे **जयपुर के अधिपति** के नाम से भी जाना जाता है।
- यह **गौडीय सम्प्रदाय** का मंदिर है जिसमें वल्लभ सम्प्रदाय वाले कृष्ण से संबंधित मूर्ति स्थापित है।
- ऐसा मंदिर आमेर के **राजा मानसिंह** ने **वृंदावन** में बनवाया।

जगदीश मंदिर - उदयपुर

- यह मंदिर **जगन्नाथ राय का वैष्णव** मंदिर है।

  यहां **जगन्नाथ राय प्रशस्ति** उत्कीर्ण है।

  जगन्नाथ राय प्रशस्ति के रचयिता - **कृष्ण भट्ट**

एकलिंग जी का मंदिर - उदयपुर

- इसे **मेवाड के अधिपति** के नाम से जाना जाता है।
- मेवाड के शासक राज्य से बाहर जाते समय **एकलिंगजी का आशीर्वाद** प्राप्त करते थे जिसे **आंसकां लेना** कहा जाता है।
- इस मंदिर में स्थापित एकलिंग जी को उदयपुर के महाराणा अपने राज्य का अधिपति एवं **स्वयं को एकलिंग जी का दीवान** मानते थे।

हर्ष एवं जींण के मंदिर -रैवासा (सीकर)

- हर्ष और जींण भाई - बहिन थे।
- इन दोंनों की मूर्तियां रैवासा (सीकर) में **हर्षनाथ पहाडी** पर स्थित है।
- जींण माता को **चौहानों की कुल देवी** के रूप में पूजते थे।

आशापुरा/ महोदरी माता का मंदिर - जालौर

- इस देवी को **मोटे पेट वाली देवी** के रूप में पूजा/ जाना जाता है।
- यह **सोनगरा चौहानों की कुल देवी** है।

आमेर के देवालय - जयपुर

- **जगत शिरोमणि मंदिर** -इस मंदिर का निर्माण आमेर के शासक **मानसिंह** ने करवाया

  इस मंदिर में वही मूर्ति स्थापित है जिसकी पूजा **मीरा** किया करती थी इसे **मानसिंह चित्तौड से** लाया था।
- **शिलामाता का मंदिर**-यह देवी **आमेर** राजघराने की **कुल देवी** के रूप में पूजी जाती है। इस मूर्ति को राजा मानसिंह **बंगाल से** लाये थे।
  - **नृसिंह मंदिर**
  - **लक्ष्मीनारायण मंदिर**
  - **आम्बिकेश्वर मंदिर**
  - **सूर्य मंदिर**
  - **कल्याणराय जी मंदिर** (प्रतिहार कालीन)

नीलकण्ड महादेव का मंदिर

☞ पाली एवं बाडमेर की सीमा पर इस मंदिर का निर्माण **अलाउद्दीन खिलजी** ने करवाया।

☞ यह मंदिर **टिड्डियों के दल** से संबंधित कथा से जुडा हुआ है

शाहपुरा का राम द्वारा

☞ **शाहपुरा (भीलवाडा) रामस्नेही सम्प्रदाय** के मंदिरों को **राम द्वारा** कहा जाता है।

रामस्नेही सम्प्रदाय की प्रमुख पीठ **शाहपुरा (भीलवाडा)** में स्थित है।

फूल ढोल उत्सव - शाहपुरा (भीलवाडा)

अन्य प्रमुख मंदिर

सालासर हनुमान जी मंदिर	- चूरू
मुच्छाला महावीर मंदिर	- पाली।
कालका माता का मंदिर	- चित्तौडगढ
समधेश्वर मंदिर	- चित्तौड
सोमेश्वर मंदिर	- किराडु (बाडमेर)
देव सोमनाथ का मंदिर	- डूगरपुर
चार भुजा नाथ का मंदिर	- गडबोर (राजसमंद)
कनेर की पुतलियां	- भीलवाडा
सुण्डा माता का मंदिर	- सिरोही, जालौर
नाकोडा के जैन मंदिर	- बाडमेर
खाटू श्याम जी मंदिर	- सीकर
आपेश्वर महादेव	- रामसिंह जालौर
काचरिया मंदिर	- किशनगढ (अजमेर)
त्रिपुरा सुंदरी मंदिर	- तलवाडा (बांसवाडा)
ऊषा मंदिर	- बयाना (भरतपुर)
लक्ष्मण मंदिर	- भरतपुर एवं डीग

☞ कालका मंदिर प्राचीन काल में सूर्यमंदिर था।

☞ दाढी-मूंछ वाले हनुमानजी की मूर्ति स्थापित है - **सालासर (चूरू)**

☞ कृष्ण के केवल शीश रूप की पूजा की जाती है - **खाटूश्याम जी मंदिर (सीकर)**

☞ आपेश्वर मंदिर में शिवजी की मूर्त रूप में पूजा की जाती है।

☞ निम्बार्क सम्प्रादय की पीठ - **काचरिया मंदिर**

☞ उड्डेश्वर महादेव मंदिर किस शैली में बना है -**भूमिज शैली में**

- **धुलैवा के धणी** कहा जाता है - **ऋषभदेव**
- **ऋषभदेव जी का मंदिर** स्थित है। - **धूलैव (उदयपुर)**
- जैन संस्कृति के उन्नयन का प्रमुख केन्द्र रहा है -**जैसलमेर**
- नाकोडा जैन मंदिर - **बालोतरा (बाडमेर)**
- **'हाथ का हजूर'** और **'जागती जोत'** माना जाता है -**पार्श्वनाथ और देव भैरव(नाकोडा)**
- **श्री महावीर जी** का मंदिर है - **गम्भीर नदी के किनारे**
- किराडू का प्राचीन नाम - **किरात कूप**
- गुरूद्वारा बुढा जोहड - **रायसिंह नगर (गंगानगर)**
- **सपने से बना मंदिर** कहा जाता है -**जगदीश मंदिर (उदयपुर)**
- श्री गणपति के मात्र **मुख की पूजा** की जाती है - **रणथम्भौर**
- **रणतभंवर के गजानन** कहा जाता है - **रणथम्भौर**
- **हाडौती का खजुराहो** कहा जाता है - **भण्डदेवरा शिवमंदिर (कोटा)**
- **भण्डदेवरा** का अर्थ है -**टूटा-फूटा देवालय**
- **कोटा** क्षेत्र का प्राचीनतम सूर्य मंदिर - **बूढादीत का समानार्थक मंदिर**
- **त्रिपुर सुंदरी मंदिर** - **बांसवाडा**
- **त्रिपुर सुंदरी का मंदिर** स्थानीय लोगों मे **''तरताई माता''** नाम से जाना जाता है।
- **दधिमति माता** का मंदिर - **नागौर**
- **झालरापाटन** के **शिव मंदिर** को **कर्नल जेम्स टॉड** ने **चार भुजा का मंदिर** कहा है।
- झालरापाटन के शिव मंदिर में **सूर्य और विष्णु** के सम्मलित **भाव की प्रतिमा** लगी हुई है।
- नागणेची माता की **अठारह भुजाओं वाली प्रतिमा** बीकानेर के संस्थापक **राव बीकाजी** ने स्थापित करवाई।
- कैवाया माता का मंदिर -**किणसरिया गांव परबतसर (नागौर)**

राज. से संबंधित अन्य तथ्य

18 नवम्बर, 1727	-	जयपुर की स्थापना
15 अगस्त, 1949	-	विजय स्तम्भ पर डाक टिकट (1 रुपया)
1973	-	बणी-ठणी पर डाक टिकिट (20 पैसे)
1980	-	गौडावण पर डाक टिकिट (2.30 रुपये)
1988	-	खेजड़ी पर डाक टिकिट (60 पैसे)
1992	-	देवनारायण जी की फाड़ पर डाक टिकिट (5 रु.)
दूध बावड़ी	-	माउंट आबू (सिरोही)
दूध तलाई	-	उदयपुर
मोती मगरी	-	उदयपुर
गुलाम कलंद का मकबरा	-	जोधपुर
हर्षद माता मंदिर	-	आभानेरी (दौसा)
गुलाब खां का मकबरा	-	जोधपुर
मोती डूँगरी	-	जयपुर व अलवर
राजस्थान का राजकोट	-	लूणकरणसर (बीकानेर)
बावड़ियों का शहर	-	बूँदी
स्तंभों का नगर	-	रणकपुर (पाली)
वराह नगरी	-	बारां
पहाडों की नगरी	-	डूंगरपुर

18. मूर्तिकला

- विश्व में सर्वप्रथम मूर्ति बनायी गयी – **महात्मा बुद्ध**
- भारत में मूर्ति कला के प्राचीनतम अवशेष प्राप्त हुये है – **हडप्पा सभ्यता (मोहनजोदडो)**
- राजस्थान में मूर्तिकला के प्राचीनतम अवशेष – **कालीबंगा, आहड**
- भारत तथा राजस्थान में मूर्तिकला का प्राचीनतम रूप दिखाई देता है – **मृण मूर्तियां**
- मृण मूर्तियों का प्रारंभिक स्वरूप दिखाई देता है – **मृदु भांडों पर**
- एतिहासिक युग में भारत में मूर्तिकला विकसित हुई – **पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत**
- पश्मिोत्तर सीमा प्रांत में विकसित हुई मूर्तिकला – **गांधार शैली**
- गांधार शैली को **इण्डो ग्रीक (हिन्दु यूनानी) शैली भी** कहा जाता है।
- भारत तथा राजस्थान में मूर्तिकला का प्रारंभ माना जाता है – **मौर्य युग**
- गांधार शैली में सर्वाधिक मूर्तियां बनायी गयी है – **महात्मा बुद्ध की**
- उत्तर या मध्य भारत में विकसित मूर्तिकला की शैली – **मथुरा शैली**
- मथुरा शैली में सर्वाधिक मूर्तियां बनायी गयी – **महावीर स्वामी**
- वैदिक धर्म के अन्तर्गत मूर्तिकला का चर्मोत्कर्ष काल – **गुप्त काल**
- भारतीय इतिहास में गुप्त युग को मंदिर निर्माण तथा **मूर्तिकला का स्वर्ण युग** कहा जाता है।
- राजस्थान में मूर्तिकला का सर्वाधिक विकास हुआ – **पूर्वी राजस्थान**
- पूर्वी राजस्थान में मूर्तिकला के विकास का प्रमुख कारण – **यह क्षेत्र ब्रज के अन्तर्गत आता है।**

राजस्थान की प्राचीनतम मूर्तियां

1. जाख बाबा की मूर्ति

– नोंह, भरतपुर – शुंग काल /कुषाण

2. गोवर्धन धारण कृष्णमूर्ति – रंगमहल, हनुमानगढ– कुषाणवंश

3. सिंह वाहिनी दुर्गा

– मालव नगर टोंक – गुप्तकाल

4. चक्रधर द्विभुजी विष्णु

– रूपवास, भरतपुर – गुप्तकाल

5. हर्षमाता की मूर्ति

– आभानेरी, दौसा – गुप्तकाल

6. महिषासुर मर्दिनी

– औंसियां, जोधपुर – गुप्तकाल

7. लिंगोद्भव मूर्ति

– हर्षनाथ , सीकर – गुप्त काल

- 17वीं, 18वीं शताब्दी में मूर्तिकला के विकास में सर्वाधिक भूमिका निभाई – **वल्लभ सम्प्रदाय (वैष्णव)**
- वल्लभ सम्प्रदाय के उद्भव का प्रमुख कारण माना जाता है– **भक्ति आंदोलन**
- राजस्थान में मूर्तिकला के विकास में विशेष योगदान – **जैन समुदाय**
- ♦ राजस्थान में ऐसा स्थल जहां **वैष्णव, शैव, जैन** के साथ–साथ **बौद्ध धर्म** की मूर्ति भी पायी गयी है –**औसिंया (जोधपुर)**
- राजस्थान में मध्यकाल में मूर्ति कला का प्रमुख केन्द्र था – **अर्थूना (बांसवाडा)**
- मध्यकाल में औरंगजेब ने जब मूर्तियों को तोडा तो ब्रज क्षेत्र में राजस्थान में लायी गयी **प्रमुख मूर्तियां** –

श्रीनाथ जी	–	**नाथद्वारा**
द्वारिकाधीश	–	**कांकरौली**
मथुरेश जी	–	**कोटा**
रतनबिहारी या दाऊजी	–	**बीकानेर**
मदन मोहन जी	–	**करौली**
गोविंद देवजी	–	**जयपुर**

वर्तमान में राजस्थान के मूर्तिकला केन्द्र –

काष्ठ मूर्ति	–	**बस्सी (चित्तौड)**
मिट्टी की मूर्ति	–	**मोलेला (राजसमंद)**
जस्ते की मूर्ति	–	**जोधपुर**
संगमरमर	–	**जयपुर**
अन्य प्रमुख धातु	–	**जयपुर**

- प्रभात जी सुथार का संबंध है – **काष्ठ कला**
- मिट्टी की मूर्ति कला को कहा जाता है – **टेराकोटा**

हुनरी मदरसा

– जयपुर में स्थित राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट को हुनरी मदरसा कहा जाता है।

– हुनरी मदरसा की स्थापना **रामसिंह द्वितीय** ने जयपुर में की थी।

- **काले पत्थर की मूर्तियां** प्रमुख रूप से बनायी जाती है – **तलवाडा (बांसवाडा), डूंगरपुर**
- राजस्थान के प्रमुख मूर्तिकार – **ऊषारानी हूजा, अर्जुन प्रजापति, मातुराम वर्मा**
- गजमुखी यक्षी की मूर्ति कहां पाई गयी है – **रैंड (टोंक)**
- गुप्तकाल की मूर्तियों का विशालसंग्रह किस शहर के संग्रहालय में है – **डूंगरपुर**

राजस्थान में गणेश से चर्चित प्रमुख मूर्तियां –

त्रिनेत्र गणेश	–	**सवाई माधोपुर**
खडे गणेश	–	**कोटा**
गण गणेश	–	**नाहरगढ, जयपुर**
नृत्य गणेश	–	**अलवर**
बाजना गणेश	–	**सिरोही**

19. अन्य स्थापत्य

1.	हवा महल	जयपुर (महाराजा प्रतापसिंह)
2.	शीश महल	आमेर (मानसिंह)
3.	नारायण निवास	जयपुर (नारायणसिंह)
4.	मुबारक महल	जयपुर (महाराजा जोधासिंह)
5.	राम बाग पैलेस	जयपुर (महाराजा रामसिंह)
6.	मोतीडूंगरी महल	जयपुर (मोतीसिंह जी)
7.	सिसोदिया रानी का बाग महल	जयपुर (सवाई जयसिंह)
8.	दीवान-ए-आम	जयपुर
9.	दीवान-ए-खास	जयपुर
10.	सिटी पैलेस -चन्द्रमहल	जयपुर (सवाई जयसिंह)
11.	जल महल	जयपुर (सवाई जयसिंह)
12.	जगमन्दिर महल	उदयपुर (महाराणा जगतसिंह प्रथम)
13.	जगनिवास महल	उदयपुर (महाराणा जगतसिंह II)
14.	खुश महल	उदयपुर (महाराणा सज्जनसिंह)
15.	जूना महल	डूंगरपुर
16.	फूल महल	उदयपुर (राणा अभयसिंह)
17.	राणा कुंभा महल	चित्तौडगढ
18.	विनय विलास महल	अलवर (महाराजा विजयसिंह)
19.	सरिस्का पैलेस	सरिस्का (अलवर)
20.	सिटी पैलेस	अलवर
21.	विजय मन्दिर पैलेस	अलवर (महाराजा जयसिंह)
22.	खेतडी महल	झूंझनूं (महाराजा भोपालसिंह)
23.	लालगढ महल	बीकानेर (महाराजा गंगासिंह)
24.	अनूप महल	बीकानेर (महाराजा अनूपसिंह)
25.	बादल महल	जैसलमेर (राव बारीसाल)
26.	जवाहर महल	जैसलमेर (महाराजा जवाहरसिंह)
27.	उम्मेद भवन पैलेस	जोधपुर (महाराजा उम्मेदसिंह)
28.	मोती महल	जोधपुर
29.	गोपाल भवन महल	(डीग-भरतपुर) महाराजा सूरजमल
30.	सिलीसेढ	महल अलवर (महाराजा विनयसिंह)
31.	एक थाम्बिया महल	डूंगरपुर (महारावल शिवसिंह)
32.	फूल महल	जोधपुर
33.	छत्रमहल	बूंदी (राजा छत्रसाल)
34.	सुख निवास	बूंदी (राजा विशनसिंह)
35.	गढ-भवन पैलेस	झालावाड (झाला राजामदन सिंह)

समाधियाँ व छतरियाँ

1.	आहड की छतरियां	आहड (उदयपुर)
2.	मण्डौर की छतरियां	मण्डोर (जोधपुर)
3.	गैटोर की छतरियां	नाहरगढ (जयपुर)
4.	देवकुण्ड की छतरियां	देवकुण्ड (बीकानेर)
5.	राजा बख्तावरसिंह की छतरी	अलवर
6.	राणा प्रताप की छतरी	बाण्डोली (उदयपुर)
7.	राव कल्याणमल की छतरी	बीकानेर
8.	बदनोर की छतरी	भीलवाडा
9.	मूसी महारानी की छतरी	अलवर
10.	84 खम्भों की छतरी	देवपुरा (बूंदी)
11.	नैडा की छतरियां	सरिस्का (अलवर)
12.	32 खम्भों की छतरी	रणथम्भौर (सवाई माधोपुर)
13.	जसवंत थडा	जोधपुर
14.	छत्रविलास बाग	कोटा
15.	सांगा की छतरी	माण्डलगढ (भीलवाडा)
16.	गोपालसिंह की छतरी	करौली
17.	क्षारबाग की छतरियां	कोटा एवं बूंदी
18.	बडा बाग की छतरी	जैसलमेर
19.	रैदास की छतरी	चित्तौडगढ
20.	राजा मानसिंह (प्रथम) की छतरी	आमेर (जयपुर)
21.	गंगाबाई की छतरी	गंगापुर (भीलवाडा)
22.	जगन्नाथ कछवाह की 32 खम्भों की छतरी	माण्डल भीलवाडा
23.	राव अमरसिंह राठौड की छतरी	नागौर

मस्जिदें और मकबरे

1. ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह-अजमेर
2. गुलाम कलंदर का मकबरा — जोधपुर
3. अकबर की मस्जिद — आमेर (जयपुर)
4. संत फखरूद्दीन की मस्जिद -गलियाकोट (डूंगरपुर)
5. अलाउद्दीन की मस्जिद -जालोर
6. गुलाम खां का मकबरा -जोधपुर
7. ईदगाह - जयपुर
8. जामा मस्जिद (औरंगजेब) -शाहबाद (बारां)
9. इकमीनार मस्जिद -जोधपुर
10. नालियासर मस्जिद - सांभर (जयपुर)
11. हमीदुद्दीन की दरगाह - नागौर
12. मेडता मस्जिद - मेडता (नागौर)
13. ढाई दिन का झोंपडा - अजमेर
14. मिट्ठेशाह की दरगाह - गागरोन (झालावाड)
15. शक्कर बाबा शाह की दरगाह - नरहड (झुंझनु)
16. पीर दुल्हेशाह की दरगाह -केरला (पाली)
17. शाहपीर की मजार - जालौर
18. कबीर शाह की दरगाह - करौली
19. जामा मस्जिद - भरतपुर
20. नरहड शरीफ की दरगाह - चिडावा (झुंझनू)
21. मीरा साहब की दरगाह - तारागढ (अजमेर)
22. ख्वाजा फखरूद्दीन की दरगाह- सरवाड (अजमेर)
23. हजरत दीवान शाह की दरगाह- कपासन (चित्तौडगढ)
24. काकाजी की दरगाह - (कांठल) प्रतापगढ
25. सैयद बादशाह की दरगाह - शिवगंज (सिरोही)
26. संत तारेकीन शाह की दरगाह - नागौर

स्तम्भ एवं मीनारें

1. विजय स्तम्भ : चित्तौडगढ
2. कीर्ति स्तम्भ : चित्तौडगढ
3. ईसरलाट (सारगा सूली) : जयपुर
4. घण्टाघर (सरदार क्लॉक टॉवर) जोधपुर
5. घण्टाघर : अजमेर
6. गूलर कालूदान की मीनार: जोधपुर
7. नेहर खां की मीनार : कोटा
8. सफदरजंग मीनार : अलवर
9. गमता गाजी : जोधपुर
10. घण्टाघर (निहाल टावर): धौलपुर

गुरुद्वारे

1. साहवा का गुरूद्वारा : साहवा (चूरू)
2. बुड्ढा जोहड गुरूद्वारा : रायसिंह नगर (श्रीगंगानगर)
3. गुरूद्वारा : नरैना (जयपुर)

बाग/बगीचे – उद्यान

1. जल महल उद्यान : डीग (भरतपुर)
2. प्रताप फुलवाडी : वैर (भरतपुर)
3. रामबाग : जयपुर (वर्तमान में होटल परिसर)
4. मांजी का बाग : (वर्तमान में राजमहल होटल परिसर) जयपुर
5. नाटाणी का बाग : (वर्तमान में राजमहल होटल परिसर) जयपुर
6. विश्व वृक्ष उद्यान : झालाना डूंगरी (जयपुर)
7. अशोक विहार : जयपुर
8. सहेलियों की बाडी : उदयपुर
9. हरसुख विलास उद्यान : करौली
10. मंडोर उद्यान : जोधपुर
11. उम्मेद उद्यान : जोधपुर
12. महिला बाग झालरा : जोधपुर

राज. से संबंधित अन्य तथ्य

- राणा हम्मीर – मेवाड़ का उद्धारक
- राव लूणकरण – कलियुग का कर्ण
- महाराजा गंगासिंह – आधुनिक भारत का भागीरथ
- ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती – गरीब नबाज
- राजस्थान का लौह पुरुष – दामोदर व्यास
- प्रथम फ्लाइंग क्लब – जोधपुर
- प्रथम सरकारी डाकघर – जोधपुर
- प्रथम मिट्टी परीक्षण नाट्यशाला – रामप्रकाश थियेटर (जयपुर)
- प्रथम रेल-बस का प्रारंभ – मेड़ता सिटी (नागौर)
- प्रथम कोयला आधारित बिजलीघर – बाप (जोधपुर)

20. प्रमुख त्योहार

हिन्दुओं के 12 महीनों के नाम –

1. चैत्र,	2. बैसाख	3. ज्यैष्ठ
4. आषाण	5. श्रावण	6. भाद्रपद
7. आश्विनी	8. कार्तिक	9. मार्गशीर्ष
10. पौष	11. माघ	12. फाल्गुन

माह

कृष्ण पक्ष (प्रथमा से अमावस्या)

शुक्ल पक्ष (प्रथमा से पूर्णिमा)

- **ग्रिगेरियन कलैण्डर** – ईस्वी सन् को **ग्रिगेरियन कलैण्डर** कहा जाता है। यह विश्व में सर्वाधिक प्रचलित कलैण्डर हैं।
- **शक् संवत्** – **शक् संवत्** भारत में **78 ई.** में शुरू हुआ था।
- इसकी शुरूआत **कनिष्क** ने की थी
- शक् संवत् को भारत का राष्ट्रीय पंचाग घोषित किय गया – 1957
- **राजकीय छुट्टियों** की घोषणा **शक् संवत्** के आधार पर की जाती है।

विक्रम संवत् – विक्रम संवत् की शुरूआत **57 ई पूर्व** में हुई।
- भारत में व्यावहारिक तौर पर सर्वाधिक प्रचलित **कलैण्डर।**
- विक्रम संवत, शक संवत से **135 वर्ष** आगे है।
- राजस्थान में त्यौहारों की शुरूआत **हरियाली तीज** से मानी जाती है।
- राजस्थान में त्यौहारों का समापन **गणगौर** से माना जाता है।
- नव वर्ष का प्रारंभ – **चैत्र शुक्ल प्रथमा**
- वर्ष का अंत – **चैत्र कृष्ण अमावस्या**

प्रमुख त्यौहार

1. हरियाली तीज	2. रक्षा बन्धन
3. कृष्ण जन्माष्टमी	4. गोगानवमी
5. गणेश चतुर्थी	6. ऋषि पंचमी
7. राधाष्टमी	8. श्राद्ध पक्ष
9. नवरात्रा स्थापना	10. दुर्गाष्टमी
11. दशहरा	12. शरद पूर्णिमा
13. करवा चौथ	14. धनतेरस
15. रूप चतुर्दशी	16. दीपावली
17. गोवर्धन पूजा	18. भाई दूज
19. देवष्ठान	20. बसंत पंचमी
21. महाशिवरात्री	22. होली
23. धुलण्डी	24. शीतलाष्टमी
25. नवसंवत् सर	26. गणगौर
27. नवरात्रा	28. रामनवमी

हरियाली तीज / छोटी तीज – श्रावण शुक्ल तृतीया

- जयपुर में इस दिन **तीज माता की सवारी** निकाली जाती है।
- तीज के साथ ही मुख्यत: **त्यौहारों का आगमन**
- तीज के दिन **पार्वती की पूजा** की जाती है।

रक्षाबन्धन – श्रावण पूर्णिमा

- श्रावण पूर्णिमा को **नारियल पूर्णिमा** भी कहा जाता है।
- इस दिन घर के प्रमुख द्वार पर **श्रवण कुमार** के चित्र बनाकर पूजे जाते हैं।
- इस दिन **ब्राह्मण** नया **यज्ञोपवीत (जनेऊ)** धारण करते हैं।

बड़ी/ सातुडी/ कजली तीज – भाद्रपद कृष्ण तृतीया

- **कजली तीज** के दिन **बूंदी** में कजली तीज की संवारी प्रसिद्ध है।
- इस दिन स्त्रियां **नीम की पूजा** करती है।

कृष्ण जन्माष्टमी – भाद्रपद कृष्ण अष्टमी

- इस दिन भगवान श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया जाता है।

गोगानवमी – भाद्र कृष्ण नवमी

- इस दिन **हनुमानगढ** जिले की **नोहर** तहसील में **गोगामेडी का मेला** लगता है।

गणेश चतुर्थी – भाद्र शुक्ल चतुर्थी

- गणेश चतुर्थी का सबसे बडा महोत्सव **महाराष्ट्र** में मनाया जाता है।
- राजस्थान में **गणेशजी** का प्रसिद्ध मन्दिर **रणथम्भौर** में **त्रिनेत्र गणेश जी** का है।

ऋषि पंचमी – भाद्र शुक्ल पंचमी

- इस दिन **गंगा स्नान** का महत्व है।
- इस दिन **सप्त ऋषि एवं सूर्य की पूजा** की जाती है।
- माहेश्वरी समाज में इस दिन **राखी** मनायी जाता है।

राधा अष्टमी – भाद्र शुक्ल अष्टमी

- इस दिन **सलेमाबाद** अजमेर में **निम्बार्क** समुदाय का मेला लगता है।

देव झूलनी एकादशी/ जल झूलनी एकादशी – भाद्र शुक्ल एकादशी

श्राद्ध पक्ष – भाद्र पूर्णिमा से **अश्विन अमावस्या** तक

नवरात्रा –आश्विन शुक्ल प्रथमा से नवमीं

- इन दिनों **आमेर** में **शिलामाता का मेला** लगता है।

दुर्गाष्टमी –आश्विन शुक्ल अष्टमी

- इस दिन **दुर्गा की पूजा** की जाती है। यह पर्व मुख्यत: **पश्चिमी बंगाल** में हर्षोल्लास से मनाया जाता है।

रावण दशहरा – आश्विन शुक्ल दसवीं

- राजस्थान में **कोटा** का दशहरा प्रसिद्ध है।
- भारत में **मैसूर** (कर्नाटक) का **दशहरा** प्रसिद्ध है।
- दशहरा के दिन **खेजडी/ शमी** की पूजा की जाती है।

शरद पूर्णिमा –आश्विन पूर्णिमा

- इसे **रास पूर्णिमा** भी कहते हैं।
- पूरे वर्ष में केवल इस दिन **चन्द्रमा 16 कलाओं** से परिपूर्ण होता है।

करवाचौथ – कार्तिक कृष्ण चतुर्थ

तुलसी एकादशी –कार्तिक कृष्ण एकादशी

- इस दिन **तुलसी की पूजा** की जाती है।
- तुलसी को **भगवान विष्णु की प्रिया** माना गया है।

धनतेरस – कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी

- इस दिन **धन्वन्तरि वैद्य** की पूजा की जाती है तथा **यमराज** की भी पूजा की जाती है।

रूप चतुर्दशी – कार्तिक कृष्ण चौदस

- इसे **छोटी दीपावली** के रूप में मनाया जाता है।

दीपावली – कार्तिक अमावस्या

- विक्रम **संवत् का प्रारंभ** इसी दिन से माना जाता है।
- इस दिन **भगवान राम 14 वर्ष** का **वनवास** पूरा करके **अयोध्या** लौटे थे।
- इस दिन **आर्य** समाज के संस्थापक **महर्षि दयानन्द** भगवान **महावीर का निर्वाण** दिवस मनाया जाता है।

गोवर्धन पूजा – कार्तिक शुक्ल प्रथमा

भाई दूज – कार्तिक शुक्ल द्वितीय

- इसे **यम द्वितीया** भी कहा जाता है।

आंवला नवमी (अक्षय नवमीं)– कार्तिक शुक्ल नवमीं

- इस दिन **आंवले के वृक्ष** की पूजा की जाती है।

देव उठनी एकादशी/ देव उष्ठान – कार्तिक शुक्ल एकादशी

- इसे **प्रबोधनी एकादश** कहते हैं।
- इस दिन से **मांगलिक कार्य** प्रारंभ हो जाते हैं।
- नये **धान की पूजा** की जाती है।
- भगवान विष्णु की **तुलसी** तथा **कदम्ब के पुष्पों** से पूजा की जाती है।

कार्तिक पूर्णिमा –कार्तिक माह की पूर्णिमा

- इसे **त्रिपुर पूर्णिमा** भी कहते हैं।
- इस दिन **पुष्कर व कोलायत** में मेला लगता है।

मौनी अमावस्या –माघ अमावस्या

- इस दिन **मनु** का जन्म हुआ था

बसंत पंचमी – माघ शुक्ल पंचमी

- इस दिन **पीले वस्त्र** पहनने की परंपरा है।
- इस दिन **सरस्वती की पूजा** की जाती है।

महाशिवरात्रि – फाल्गुन शुक्ल त्रयोदशी

- **भगवान शिव का जन्म** इसी तिथि को हुआ था लेकिन **शिवजी का जन्मोत्सव व्रत चतुर्दशी** को मनाया जाता है।
- इस दिन **शिव पुराण** की पूजा की जाती है।

होली – फाल्गुन पूर्णिमा

- होली के अवसर पर **अलवर व भरतपुर** में बम नृत्य होता है।
- लठ्ठमार होली – **महावीर जी**
- पत्थर मार होली – **बाडमेर**
- कोडे मार होली – **मिनाय (अजमेर)**

धुलण्डी – चैत्र कृष्ण प्रथमा

शीतलाष्टमी –चैत्र कृष्ण अष्टमी

इसे **बास्योडा** भी कहा जाता है।

इस दिन शीतलामाता की पूजा की जाती है जो कि **चेचक** से बचाती है।

नव संवत् सर – चैत्र शुक्ल प्रथमा

हिन्दुओं का नववर्ष इसी दिन प्रारंभ होता है।

घरों में **केसरिया** और **लाल पताका** फहराया जाता है।

गणगौर – चैत्र शुक्ल तृतीया

इसे **अंतिम त्यौहार** माना जाता है।

गण का अर्थ – **महादेव** और **गौर** का अर्थ– **पार्वती**

यह त्यौहार शिव और **पार्वती** के **अखण्ड प्रेम** का प्रतीक है।

गणगौर की सवारी जयपुर की प्रसिद्ध है।

अन्य त्यौहार

- **राम नवमी** – चैत्र शुक्ल नवमीं
- **अखतीज** – बैशाख शुक्ल तृतीया
- इसे **अक्षय तृतीया** भी कहा जाता है।
- राजस्थान में सर्वाधिक **बाल विवाह** इसी दिन होते हैं।
- किसान **7 अन्नों की पूजा** करके शीघ्र वर्षा की कामना करते हैं।

बढ़ अमावस्या – ज्येष्ठ अमावस्या

- इस दिन **सावित्री का व्रत** रखा जाता है और **वट वृक्ष की पूजा** की जाती है।

गंगा दशहरा – ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी

निर्जला एकादशी – ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी

देव शयनी एकादशी – आषाढ़ शुक्ल एकादशी

गुरू पूर्णिमा – आषाढ़ पूर्णिमा

नाग पंचमी – श्रावण कृष्ण पंचमी

हरियाली अमावस्या – श्रावण अमावस्या

ऊब छट – भाद्र कृष्ण षष्टी

इस दिन रखे जाने वाले व्रत को **चंदन षष्टी** व्रत कहते हैं।

बछ बारस – भाद्र कृष्ण द्वादशी

गाय बछडों की पूजा की जाती है तथा **पुत्र की कामना** की जाती है।

सांझी – भाद्र पूर्णिमा से आश्विन **अमावस्या** (15 दिन)

सकट चौथ/ तिल चौथ – माघ कृष्ण चतुर्थ

अशोकाष्टमी – **चैत्र शुक्ल अष्टमी**

मुसलमानों के त्यौहार

मोहर्रम –

- हजरत मोहम्मद साहब के पौत्र **हुसैन** के **बलिदान** की याद में यह त्यौहार मातम के रूप में मनाया जाता है।
  इस दिन **ताजिये** निकाले जाते हैं तथा उन्हें **जलाशय में दफनाया** जाता है।

बरा वफात

- रबी उल अत्वल महीने की 12वीं तारीख **पैगम्बर मौहम्मद साहब** के **जन्म और मृत्यु** के रूप में यह त्यौहार मनाया जाता है।

इद–उल–फितर :-

- **शब्बाल** माह की पहली तारीख इसे **मीठी ईद** और **सिवैयों की ईद** भी कहते हैं।
  मुसलमान लोग **रमजान** के **पवित्र** महीने में **30 दिन तक रोजे** रखते हैं।

इदुलजुहा

- जिल्हिज की 10वीं तारीख
- इसे **बकरा ईद** भी कहते हैं।
- इस दिन **मुसलमान** लोग **कुर्बानी** के रूप में **बकरे की बलि** देते हैं।

चैहल्लुम

- मोहर्रम के **चालीस दिन** तक चलने वाला **शोक**

हजरत ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्मी

- उल्सानी माह की 8 तारीख

विभिन्न उर्स

1. **उर्स गरीब नबाज (अजमेर)**
2. **गलिया कोट का उर्स (डूंगरपुर)** – माही नदी के निकट स्थित **गलियाकोट** दाऊदी बोंहरों का प्रमुख तीर्थ स्थान है। यहां **फखरूद्दीन पीर की मजार** है।
3. **तारकीन उर्स (नागौर)** –नागौर में **सूफियों की चिश्ती** शाखा के **संत** काजी **हमीदुद्दीन नागौरी** की दरगाह है जहां अजमेर के बाद सबसे बडा **उर्स** लगता है।
4. **नरहड की दरगाह (झुंझुनू)** –हजरत हाजिब शक्कर बादशाह की दरगाह पर **कृष्ण जन्माष्टमी** के दिन **विशाल** मेला लगता है।

जैन पर्व

महावीर जयंती – चैत्र शुक्ल द्वादशी

इसे **महावीर जयंती** भी कहा जाता है।

महावीर जी (करौली) में इस दिन **विशाल** मेला भरता है।

पर्युष्ण पर्व – भाद्र पद कृष्ण 12 से शुक्ल पंचमी तक इसे श्वेताम्बर सम्प्रदाय के लोग मानते हैं।

दशलक्षण पर्व – **दिगम्बर** सम्प्रदाय के लोग मनाते हैं।

ऋवम जयंती – भाद्र शुक्ल दसवीं

रूठी तीज/ रोट तीज – भाद्र शुक्ल तृतीया

रत्न त्रया – भाद्र शुक्ल त्रयोदशी से पूर्णिमा

क्षमावाणी पर्व – आश्विनी कृष्ण प्रथमा

सिक्खों के पर्व

1. **बैसाखी** -13 अप्रैल 1699 को **गुरू गोविन्द** ने **आनंदपुर साहिब,** रोपड (पंजाब) में खालसा पंथ की स्थापना की तभी से **वैशाखी 13 अप्रैल** को मनाई जाती है।
2. **गुरू नानक जयंती** - कार्तिक माह की पूर्णिमा
   गुरूनानक सिख धर्म के प्रवर्तक थे।
   इनका जन्म **लरकाना** में हुआ था।
3. **गुरू गोविंद जयंती** -पौष शुक्ल सप्तमी
   गुरू गोविंद सिखों के 10वें व अतिंम गुरू थे।
   इन्होंने उत्तराधिकार की परंपरा को समाप्त कर **''गुरू ग्रंथ साहिब'** को गुरू घोषित किया।
4. **लोहिणी** - **मकर संक्रांति** पर यह त्यौहार मनाया जाता है (13-14 जनवरी)

सिंधियों के पर्व

1. **चेंटीचण्ड या झूलेलाल की जयंती** -सिंध के थट्टा नगर में झूलेलाल का जन्म हुआ
   झूलेलाल को **वरूण का अवतार** माना जाता है।
   यह त्यौहार **चैत्र माह शुक्ल द्वितीया** को मनाया जाता है।
2. **चालीहा महोत्सव** - **सिंधी समाज** में यह त्यौहार **16 जुलाई से 24 अगस्त** तक मनाया जाता है।
3. **धढंडी या बडी सातम** - **भाद्र कृष्ण सप्तमी**
   इस दिन सिंधी समाज में बास्योडा मनाया जाता है।

ईसाईयों के त्यौहार

क्रिसमस

- 25 दिसम्बर को ईसामसीह का जन्मदिन क्रिसमस के रूप में मनाया जाता है।

ईस्टर

- ईसाईयों की मान्यता है कि इस दिन ईसा मसीह पुनर्जीवित हुये थे।
- ईस्टर प्रतिवर्ष अप्रैल माह में रविवार को मनाया जाता है।

गुड फ्राइडे

- ईस्टर के रविवार से पूर्व के शुक्रवार को यह त्यौहार मनाया जाता है। इस दिन ईसा मसीहा को सूली पर लटकाया गया था।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- जैसलमेर में गणगौर पर केवल **गवर की पूजा** की जाती है तथा यहां **गणगौर की सवारी चैत्र शुक्ल तृतीया** के स्थान पर **चैत्र शुक्ल चतुर्थी** को निकाली जाती है।
- **ब्यावर** में होली पर **बादशाह की सवारी** निकाली जाती है।
  नवरोज - पारसियों का नववर्ष
- जयपुर में तीज **गणगौर** को तालकटोरा में विसर्जित किया जाता है।
- **देवरे** - राज्य के **ग्रामीण** अंचलों में **चबूतरेनुमा** बने हुये लोक देवों के पूजा स्थल।
- **लंगर** - सिक्ख धर्मगुरूओं द्वारा प्रारंभ की गई **सामूहिक निःशुल्क भोज प्रथा।**
  पल्ला - **झूलेलाल की सवारी** को **पल्ला** कहा जाता है।
  पीपल पूर्णिमा - ज्येष्ठ माह की पूर्णिमा

21. प्रमुख मेले

जयपुर संभाग के मेले

1. **छोटी तीज का मेला - जयपुर**
- यह मेला **श्रावण** शुक्ल तृतीया को **जयपुर** में भरता है।
- इस दिन **त्रिपोलिया गेट** से **चौगान स्टेडियम** तक **तीज की सवारी** निकलती है।
2. **शीतलामाता का मेला- चाकसू (जयपुर)**
- यह मेला **जयपुर** की **चाकसू** तहसील में **शील की पहाडी** पर लगाता है।
- इन्हें **सेंढल माता** भी कहा जाता है।
- यह मेला **चैत्र** कृष्ण सप्तमी को लगता है।
3. **बाणगंगा मेला -बैराठ (जयपुर)**
- यह मेला प्रतिवर्ष **वैशाख** पूर्णिमा को बैराठ कस्बे में **बाणगंगा नदी** के किनारे भरता है।
4. **राणी समी का मेला- झुंझुंनू**
- यह मेला **झुंझुनूं** में **राणी सती के मंदिर** स्थल पर प्रतिवर्ष भाद्रपद मास की **अमावस्या** को भरता है।
5. **जीणमाता का मेला** -सीकर
- यह **हर्ष की पहाडी** पर भरता है।
- यहां **हर्ष व जींण** नामक भाई बहिनों ने कठोर तपस्या की जिससे **खुश होकर** देवी ने उन्हें दर्शन दिये और वहीं स्थापित हो गयी।
6. **खाटूश्याम जी मेला - खाटूश्याम (सीकर)**
- यह मेला **फाल्गुन** शुक्ल 11-12 को खाटूश्याम में लगता है।

भरतपुर संभाग के मेले

1. **गणेश मेला - रणथम्भौर (सवाई माधोपुर)**
- यह मेला प्रतिवर्ष भाद्रपद **गणेश चतुर्थी** को रणथम्भौर (सवाई माधोपुर) में भरता है।
- यह मेला **रणथम्भौर मेला** के नाम से प्रसिद्ध है।
2. **शिवाड मेला - शिवाड (सवाई माधोपुर)**
- ईसरदा से 3 किमी दूर शिवाड को **12वें ज्योर्तिलिंग** का स्थान माना जाता है।
3. **कैलादेवी का मेला- करौली**
- कैलादेवी को **यदुवंशी समाज** की **कुल देवी** के रूप में पूजा जाता है।
- इस मेले को **लक्खी मेला** भी कहते हैं।
- यह मेला **त्रिकूट पर्वत** पर भरता है।
- यह मेला **चैत्र शुक्ल अष्टमी** को भरता है।
4. **श्री महावीर जी मेला** - श्री महावीर जी (करौली)
- श्री महावीर जी **जैन** धर्म के **24वें तीर्थंकर** थे।
- इस **लक्खी मेले** का आयोजन प्रतिवर्ष **चैत्र शुक्ल त्रयोदशी** से **वैशाख कृष्ण प्रतिपदा** के बीच होता है।
- इस में में **मीणा, गुर्जर, अहीर** भी भाग लेते हैं।
- यह जैनियों का सबसे **बडा** मेला है।

अजमेर संभाग के मेले

1. **पुष्कर (अजमेर)**
- यह मेला **कार्तिक पूर्णिमा** को भरता है।
- यह मेला **ब्रह्माजी** एवं **सावित्री माता** की याद में भरता है।
- इस में में बडी संख्या में विदेशी पर्यटक भी भाग लेते हैं।
- यह राजस्थान का सबसे **रंगीन मेला** है।
- यह मेरवाडा का **सबसे बडा मेला** है।
- राजस्थान में सर्वाधिक **विदेशी** इसी मेले में आते है।

2. **ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती का उर्स - अजमेर**
- यह मेला ख्वाजा **मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह** पर प्रतिवर्ष **पहली रजब से 9 रजब** तक भरता है।
- इस मेले में मुसलमानों के साथ - साथ हिन्दु भी भाग लेते हैं।
- यह मुसलमानों का सबसे बडा मेला है।

3. **डिग्गी कल्याण जी - डिग्गी (टोंक)**
- यहां कल्याण जी की याद में **श्रावण अमावस्या**, **वैशाख पूर्णिमा** एवं भाद्रपद एकादशी को मेला भरता है।
- कल्याण जी को कुष्ठ रोग निवारक एवं **भगवान विष्णु का अवतार** माना जाता है।

4. **तेजाजी का मेला - परबतसर (नागौर)**
- यह मेला लोकदेवता **तेजाजी** की याद में भाद्रपद वदी दसमीं से भाद्रपद सुदी एकादश तक भरता है।

बीकानेर संभाग के मेले

1. **करणी माता का मेला - देशनोक (बीकानेर)**
- करणीमाता बीकानेर क **राठौड** शासकों की कुल देवी है।
- करणी माता का मंदिर **चूहों का मंदिर** नाम से प्रसिद्ध है।
- यहां पाये जाने वाले **चूहों को काबा** कहा जाता है।
- यहां प्रतिवर्ष **दो मेले** भरते हैं एक चैत्र के नवरात्रों में तथा दूसरा आश्विन माह में।

2. **कपिल मुनि का मेला - कोलायत (बीकानेर)**
- यह मेला सांख्य दर्शन के प्रवर्तक **कपिल मुनि** की याद में प्रतिवर्ष **कार्तिक पूर्णिमा** को भरता है।
- यह मेला **कोलायत झील** के किनारे भरता है इस मेले का **दीपदान** महोत्सव प्रसिद्ध है।

3. **जाम्भेश्वर मेला - मुकाम नोखा (बीकानेर)**
- जाम्भेश्वर जी **विश्नोई सम्प्रदाय** के प्रवर्तक माने जाते हैं।
- इनकी स्मृति में **बीकानेर** जिले की **नोखा तहसील** के मुकाम गांव में वर्ष में दो बार फाल्गुन मास व अश्विन मास में मेला भरता है।

4. **गोगाजी का मेला - गोगामेडी (हनुमानगढ)**
- यह मेला वीर **गोगाजी की याद** में भरता है।
- यह मेला **पशु मेले** के रूप में प्रसिद्ध है।
- यह प्रतिवर्ष **भाद्रपद** माह मे भरता है।

5. **बुड्ढा जोहड मेला - श्री गंगानगर**
- सिक्ख सम्प्रदाय का यह मेला प्रतिवर्ष **श्रावण अमावस्या** को भरता है।

6. **सालासर हनुमान मेला - सालासर, सुजानगढ (चूरू)**
- यह मेला चैत्र **कार्तिक पूर्णिमा** को **सालासर** में भरता है।

7. **गोगाजी का मेला - ददेरवा (चूरू)**
- **ददेरवा** गोगाजी का जन्म स्थान है।
- यहां भाद्रपद मास में कृष्ण नवमी (गोगानवमीं) को मेला भरता है।

8. **साहवा का मेला- साहवा (चूरू)**
- यह **सिक्ख सम्प्रदाय** का सबसे बडा मेला है।
- यह **कार्तिक पूर्णिमा** को भरता है।

जोधपुर संभाग के मेले

1. **रामदेव जी का मेला - रामदेवरा (जैसलमेर)**
- यह मेला जैसलमेर जिले के **पोकरण तहसील** के पास **रामदेवरा** में भरता है।
- रामदेवरा का प्राचीन नाम **रूणेचा** है।
- इस मेले को **रूणेचा मेला** भी कहते हैं।
- इस मेले में **हिन्दुओं** के साथ-साथ **मुसलमान** भी बडी संख्या में भाग लेते हैं।
- मुसलमान **रामदेव** जी को **रामसापी** के रूप में पूजते हैं।
- रामदेव बाबा **कोढ व अन्य कष्ट दायक** रोगों से **मुक्ति** दिलवाते हैं।
- मेले में तीर्थयात्री **तेरहताली नृत्य** करते हैं।
- यह मेला **भाद्रपद** मास में भरता है।
- यह **साम्प्रदायिक सद्भाव** का सबसे बडा मेला है।
- यह मेला **मारवाड का कुंभ** भी कहलाता है।

2. **तिलवाडा मेला -तिलवाडा (बाडमेर)**
- यह मेला लोकदेवता, **मल्लीनाथ** जी की याद में भरता है।
- यह मेला **पशु मेले** के रूप में प्रसिद्ध है।
- यह मेला **चैत्र कृष्ण एकादशी** से चैत्र शुक्ल एकादशी तक भरता है।

3. **सुईयां मेला - चौहटन (बाडमेर)**
- यह मेला **बाडमेर** में **पाकिस्तान की सीमा** से लगे **चौहटन** में प्रति **चार वर्ष बाद** भरता है।
- यह **पौष** मास की **सोमवती अमावस्या** को भरता है।
- इस मेले को **अर्द्ध कुंभ** की मान्यता प्राप्त है।

उदयपुर संभाग के मेले

1. **केसरिया नाथ जी का मेला - धुलैव (उदयपुर)**
- यह मेला **चैत्र कृष्णाष्टमी** को भरता है।
- यहां जैन तीर्थकर **ऋषभदेव** की **काले संगम की मूर्ति** स्थापित है।

2. **बेणेश्वर का मेला- नवाटापरा (डूंगरपुर)**
- वेणेश्वर का मेला **डूंगरपुर** की **आसपुर** तहसील के **नवाटापरा** स्थान पर भरता है।
- यह **बागड** प्रदेश के **आदिवासियों का सबसे बडा मेला** है।
- इसे **आदिवासियों का कुंभ** भी कहा जाता है।
- यहां **शिव** की **खंडित लिंग** की पूजा की जाती है।
- यह मेला **माघ** मास में भरता है।

3. **बोहरा समाज उर्स -गलियाकोट (डूंगरपुर)**
- बोहरा **मुसलमानों** में एक अलग **धार्मिक सम्प्रदाय** है।
- बोहरा समाज का प्रमुख तीर्थ **डूंगरपुर** जिले की **सांगवाडा** तहसील में **गलियाकोट** नामक स्थान है।
- यहां प्रतिवर्ष **मोहर्रम से 27 वें** दिन उर्स भरता है।

4. **माता कुंडालिनी का मेला - राशमी (चित्तौडगढ)**
- यह मेला **वैशाख पूर्णिमा** के दिन भरता है।
- इसे **मातृकुण्डिया का मेला** भी कहते हैं।
- **चन्द्रभागा नदी** के किनोर स्थित इस तीर्थ को **राजस्थान का हरिद्वार** कहा जाता है।

5. **चारभुजा का मेला- गडबोर (राजसमंद)**
- यह मेला **भाद्रपद** माह में **शुक्ल एकादशी** को भरता है।

राजस्थान के प्रमुख पशु मेले

1. मल्लीनाथ पशुमेला	-	**तिलवाडा (बाडमेर)**
2. वीर तेजाजी पशु मेला	-	**परबतसर (नागौर)**
3. शिवरात्रि पशु मेला	-	**करौली**
4. जसवंत पशु मेला	-	**भरतपुर**
5. चन्द्रभागा पशु मेला	-	**झालरापाटन**
6. गोगामेडी पशु मेला	-	**गोगामेडी (हनुमानगढ)**
7. गोमती सागर पशु मेला	-	**झालरापाटन**
8. मुण्डवा पशु मेला	-	**नागौर**
9. रामदेव पशु मेला	-	**नागौर**
10. बलदेव पशु मेला	-	**मेडता सिटी (नागौर)**
11. पुष्कर मेला	-	**पुष्कर (अजमेर)**
12. बहरोड पशु मेला	-	**बहरोड (अलवर)**

आदिवासियों के मेले

1. बेणेश्वर मेला	-	**नवाटापरा (डूंगरपुर)**
2. गौतमेश्वर का मेला	-	**गौतमेश्वर (चित्तौड)**
3. गौरिया गणगौर	-	**गौरिया**
4. बोरेश्वर मेला	-	**बोरेश्वर**
5. सीताबाडी का मेला	-	**सीताबाडी (बारा)**
6. गौतम जी का मेला	-	**शिवगंज (सिरोही)**
7. मानगढ मेला	-	**मानगढ धाम (बांसवाडा)**
8. घोटिया अम्बा मेला	-	**घोटिया (बांसवाडा)**
9. मारकण्डेश्वर मेला	-	**अंजारी (सिरोही)**

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- **आय** की दृष्टि से राजस्थान का सबसे बडा पशु मेला - **वीर तेजाजी पशु मेला** (परबतस)
- **वृक्षों** से संबंधित विश्व का एकमात्र मेला- **खेजडली मेला (जोधपुर)**
- राजस्थान का सबसे **रंगीन** मेला - **पुष्कर मेला (अजमेर)**
- **जैनियों** का सबसे बडा मेला - **महावीर जी मेला (करौली)**
- **मुस्लिमों** का सबसे बडा उर्स- **ख्वाजा साहब का उर्स**
- **सिक्खों** का सबसे बडा मेला - **साहवा (चूरू)**
- **आदिवासियों** का सबसे बडा मेला-**वेणेश्वर (डूंगरपुर)**
- **मेरवाडा** का सबसे बडा मेला- **पुष्कर मेला (अजमेर)**
- **जांगल** प्रदेश का सबसे बडा मेला-**कोलायत (बीकानेर)**
- **हाडौती** का सबसे बडा मेला -**सीताबाडी (बारा)**
- **हिन्दू जैन** सद्भावना मेला -**ऋषभदेव जी (उदयपुर)**
- **हिन्दु मुस्लिम** सद्भावना का सबसे बडा मेला -**रामदेव मेला**
- हिन्दु मुस्लिम सद्भाव के अन्य मेले -
  1. **ख्वाजा साहब का उर्स (अजमेर)**
  2. **गोगामेडी (हनुमानगढ)**
  3. **पीर का उर्स (जालौर)**
  4. **लालदासजी मेला (अलवर)**
- गधों का मेला -**लूणियावास (जयपुर)**
- सर्वाधिक पशु मेलों का आयोजन- **नागौर जिले में**
- **डूंगरपुर** में **सोम-माही-जाखम** नदियों के **संगम** पर स्थित वेणेश्वर मेले को '**आदिवासियों का कुंभ** तथा **बागड प्रदेश का हरिद्धार**' कहा जाता है।
- **बांरा** जिले में लगने वाले '**सीताबाडी मेले** को '**सहरिया जनजाति का कुंभ**' कहा जाता है।
- **देवताओं की नगरी**, **तीर्थराज पुष्कर** को **तीर्थस्थलों का मामा** कहा जाता है।
- **धौलपुर** जिले में स्थित **मचकुण्ड** को **तीर्थों का भांजा** कहा जाता है।
- मचकुण्ड में **नहाने** से **चर्म रोग** दूर हो जाते हैं।
- पुष्कर मेले एवं **कोलायत मेले** का **दीपदान** महोत्सव प्रसिद्ध है।
- कैलादेवी मेले में आयोजित **लांगुरिया नृत्य** में **सुहागिन स्त्रियां** भाग लेना शुभ मानती है।
- राजस्थान **सती निवारक अधिनियम 1987** के लागू होने के बाद **राणी सती का मेला, झुंझुनूं** के **महिमा मण्डन** पर **रोक** लगायी गयी।
- **सियावा का गौर** मेला **सिरोही** में आयोजित होता है।
- बूंदी का कजली तीज मेला **सिरोही** में आयोजित होता है।
- **वीरपुरी का मेला** श्रावण माह के अन्तिम **सोमवार** को **मंडोर (जोधपुर)** में भरता है।
- **श्री बलदेव पशु मेला** मेडता सिटी **नागौरी बैलों** के लिये प्रसिद्ध है।

अन्य मेले

मेला	स्थान	समय
गणगौर मेला	जयपुर	चैत्र शुक्ल तृतीया व चतुर्थी
चामुण्डा माता मेला	जोधपुर	आश्विन नवरात्रा
जसनाथ जी मेला	बीकानेर	चैत्र शुक्ल सप्तमी
खेजडली मेला	खेजडली	भाद्रपद शुक्ल दसवीं
श्री गणेश मेला	रणथम्भौर	भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी
तीज मेला	जयपुर	श्रावण शुक्ल तृतीया एवं चतु.
दादू जी का मेला	नारायणा	फाल्गुन शुक्ल पंचमी से एका.
बूढा जोहड मेला	बूढा जोहड	श्रावण अमावस्या
केसरियानाथ जी मेला	उदयपुर	चैत्रमास
जीणमाता मेला	रैवासा	चैत्र व आश्विन नवरात्र
शीतला माता मेला	चाकसू	चैत्र कृष्ण सप्तमी
कल्याणजी मेला	डिग्गी	भाद्रपद शुक्ल एकादशी
भृर्तहरि मेला	भृर्तहरि	भाद्रपद शुक्ल अष्टमी
राणीसती मेला	झुंझुनूं	भाद्रपद अमावस्या
बादशाह का मेला	ब्यावर	होली के अवसर पर

22. वेशभूषा

पुरूषों की वेशभूषा:-

पगडी

- पगडी **प्रतिष्ठा एवं इज्जत** का **प्रतीक** मानी जाती है। **पिता की मृत्यु** के उपरांत बडे बेटे के सिर पर पगडी बांध कर **उत्तराधिकारी** घोषित किया जाता है, इसे **पाग प्रथा** कहते हैं।
- **राजाशाही पगडी** - जयपुर की **लहरियावार** पगडी को **राजशाही पगडी** कहा जाता है।
- **पेचा पगडी** - **पांच रंगों** वाली पगडी जिसे **शुभ अवसरों** पर पहना जाता था।
- **केसरिया पगडी** -प्रमुख रूप से **युद्ध** में पहनी जाती थी।
- **विवाह के विशेष अवसर** पर पहनी जाने वाली हल्के **गुलाबी रंग** की पगडी को **मावटे की** पगडी कहा जाता है।
- **होली के विशेष अवसर** पर पहनी जाने वाली पगडी की छपाई **फूल पत्तियों** युक्त होती है।
- **श्रावण माह** मे पहनी जाने वाली पगडी - **लहरिया की पगडी**
- **दशहरे के अवसर पर** पहनी जाने वाली पगडी को कहा जाता था - **मदील पगडी**

सामंतों की पगडी -

- **चुडावत शाही पगडी** - सलूम्बर के सामंत की पगडी
- **जसवंत शाही पगडी** - देवगढ के सामंत की पगडी
- **राठौडी पगडी** - बदनौर के सामंत की पगडी
- **मानशाही पगडी** - भेंसरोडगढ के सामंत की पगडी

रियासतों की पगडी -

- **जयपुर की पगडी** -**खूंटेदार (तुर्राकलंगी)**
- **मारवाड की पगडी** - **छज्जेदार (मुगलों से प्रभावित)**
- **मेवाड की पगडी** - **तपडी**
- मेवाड में पगडी को **उदयशाही पगडी** कहा जाता है क्योंकि इस प्रकार की पगडी का चलन **उदयसिंह** के समय हुआ था।
- मेवाड के महाराणा को **पगडी बांधने वाला** पुरूष कहलाता था - **छाबदार**
- मेवाड में **बंधेज की पगडी** की शुरूआत **भीमसिंह** के समय हुयी।

शरीर पर पहने जाने वाले वस्त्र -

(अ) अंगरखी -राजस्थान में राजशाही अंगरखियों पर **बनारस** की **मीनाकारी** प्रसिद्ध है।
गले, कंधे एवं पीठ पर कढाई वाली अंगरखियों को **फरूक्खा** शाही अंगरखी कहा जाता था।
पश्चिमी राजस्थान में अंगरखी को **बुगतरी** भी कहा जाता है।

(ब) चोगा - अंगरखी के **ऊपर** पहने जाने वाला **लम्बे कोट** के समान **लबादे** के प्रकार का वस्त्र।

- इन पर **शिकार गाह, फूलपत्तियां तथा पशु पक्षियों की आकृतियों** का अलंकरण होता है।
- कढाई किये हुये चोगे राजस्थान में मुख्यत: **अमृतसर** से मंगाये जाते हैं।

स. आतमसुख - यह प्राय: तेज **सर्दी से बचने** के लिये पहना जाता था।
आतम सुख की तुलना **कश्मीरी फिरन** से की गयी है।
राजस्थान में सबसे पुराना **आतम सुख** जयपुर के **सिटी पैलेस** (चन्द्रमहल) में सुरक्षित है जो कि **माधोसिंह** का है।

द. बिरजस/ ब्रिचेश - चूडीदार पायजामा के स्थान पर पहने जाने वाला वस्त्र।
इसे **पोलो खेलते समय** पहना जाता था।

य. पिछेवडा - सदियों में **चादर नुमा** वस्त्र।

व. पटका - पायजामा या अंगरखी के ऊपर **कमर वाले हिस्से** में बांधा जाने वाला वस्त्र।

- इसमें **तलवार या कटार** बांधी जाती थी।
- **अहमदाबाद** और **बनारस** के पटके राजस्थान में सर्वाधिक मंगाये जाते थे।

र. घूघी - सर्दियों में पहना जाने वाला विशेष प्रकार का वस्त्र।

ल. जोधपुरी सूट - यह भारत की **राष्ट्रीय पोशाक** है जिसमें बंद गले का कोट होता है जो जोधपुर रियासत की देन है।

म. पोतिया - भील पुरूषों द्वारा पगडी के स्थान पर बांधा जाने वाला मोटा वस्त्र।

महिलाओं की वेशभूषा:-

ओढनी/ लूगडी/ चूनडी -

- कुर्ती और कांचली तथा घाघरे के ऊपर शरीर पर पहना जाने वाला वस्त्र अर्थात स्त्रियों द्वारा **सिर ढंकने** के लिये प्रयुक्त वस्त्र ओढनी/ लूगडी/ चूनडी कहलाता है।
- **पोमचा** -**प्रसूता स्त्री** द्वारा पहना जाने वाला **पीले रंग का** वस्त्र जिसे महिला के लिये उसके **मायके** पक्ष द्वारा लाया जाता है।
- **लहरिया** -**श्रावण** माह में विशेषत: **तीज के अवसर पर** पहने जाने वाला वस्त्र।
- **कटकी** - आदिवासी अविवाहित युवतियों द्वारा ओढी जाने वाली ओढनी।
- इसकी पृष्ठ भूमि **लाल/काले** रंग की होती है।
- इसे **पावली भांत की ओढनी** भी कहते हैं।
- **चूनड- भीलों की ओढनी** चूनड कहलाती है। जिस पर सफेद रंग की बिंदिया होती है तथा रंग कत्थई लाल होता है।
- **गोटेदार ओढनी** - मुख्यत: सिंधी समाज की महिलाओं द्वारा पहनी जाती है।
- इस पर लगे गोटों को **लप्पा झप्पा** कहा जाता है।
- **मोठडा** -जब लहरिया की धारियां एक दूसरे को काटते हुये होती हैं उस ओढनी को मोठडा कहा जाता है।
- **चीड का पोमचा** - विधवा महिलाओं द्वारा ओढी जाने वाली **काले रंग की ओढनी।**
- **सिन्दूरी** - भील स्त्रियों द्वारा विवाह के अवसर पर जो **लाल रंग की ओढनी** पहनी जाती है सिन्दूरी कहलाती है।

फाल्गुनी, धनक, मोठडा क्या है - ओढनी के प्रकार

आदिवासी स्त्रियों की ओढनी:-

- **जामशाही साडी** -विवाह के समय पहने जाने वाले लाल रंग का वस्त्र जिस पर फूलपत्ती और बेल का अलंकरण होता है।
- **नांदडा** - यह **नीली छींट** का आदिवासी वस्त्र है इसे **तितली भांति की ओढनी** कहा जाता है।
- नांदडा आदिवासी महिलााओं द्वारा पहने जाने वाला प्राचीनतम वस्त्र है।
- **भीलवाडा के नांदडे प्रसिद्ध** हैं।
- **लूंगडा** - इसे **अंगोछा साडी** भी कहते हैं।
- इसमें सफेद सतह पर लाल बूटे छपे होते हैं।
- **रैनसाई साडी** -यह **आदिवासी महिलाओं की ओढनी** है।
- इसमें लंहगे जैसी छींट का प्रयोग ओढनी में किया जाता है तथा काली सतह पर लाल व भूरी बूटियां बनी होती है।
- **ज्वार भांत की ओढनी** -इसमें सफेद सतह पर ज्वार जैसी बिंदियों से बेल बूटे बनाये जाते हैं।
- **लहरभांत की ओढनी** - इसमें ज्वार भांत जैसी **छोटी बिंदियों का प्रयोग** लहरिया बनाने में होता है इसकी सतह **काली** होती है।
- **ताराभांत की ओढनी** - यह आदिवासी महिलाओं की प्रसिद्ध ओढनी है।
- इसकी किनारी का रंग काला होता है तथा सफेद सतह पर तारे जैसी आकृति बनी होती है।
- **कैरी भांत की ओढनी** - किनारे तथा पल्लू में कैरी जैसी आकृतियां बनी होती है।
- इसकी सतह पर ज्वार जैसी बिंदियां भी होती है तथा इसकी सतह का रंग लाल होता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- **तिलका** - राजस्थान (मुख्यत: शेखावाटी और मेवाती क्षेत्र) में **मुस्लिम महिलाओं** द्वारा पहने जाने वाला वस्त्र।
- **जामा** -पुरूषों का वस्त्र जिसमें ऊपरी भाग **अंगरखी** जैसा तथा नीचे का भाग **घाघरेनुमा** होता है।
- **रेशमी घाघरों** के लिये प्रसिद्ध स्थान - **जयपुर**
- **काले रंग के दुपट्टे** प्रसिद्ध हैं - **सवाई माधोपुर**
- सवाई माधोपुर में बनने वाली **पक्के काले रंग की साडियों** को कहा जाता है - **सूंठ की साडियां**
- **पिरिया** - **भील स्त्रियों** द्वारा विवाह के अवसर पर पहने जाने वाला **पीले रंग का घाघरा।**
- **सूथना** - बच्चों द्वारा **लंगोटीनुमा वस्त्र** पहना जाता था जिसे राजस्थान में **सूथना** कहा जाता था।
- **पंवरी** - राजस्थान मे **दुल्हन की ओढनी** को **पंवरी** कहा जाता है। इसका रंग **लाल या गुलाबी** होता है।
- **दामणी** - **मध्यम वर्ग** की स्त्रियां रियासत काल में जो **लाल रंग की ओढनी** पहनती थीं।
- **भीलों की चूनड** सर्वाधिक बनाई जाती हैं - **आहड (उदयपुर)**
- आदिवासी महिला-पुरूषों का सबसे पसंदीदा रंग - **काला और लाल**

- राजस्थान में **सूती वस्त्र** उपयोग के सबसे प्राचीनतम साक्ष्य कहां मिले हैं -
  (1) बालाथल (2) आहड़ (3) कालीबंगा
- जयपुर में **पगडी बांधने** वाले को कहा जाता है - **खास बंधेरा**
- जयपुर का **अंतिम** खास बंधेरा - **सूरज बक्श**
- राजस्थान में सामान्यत: **पगडी** या **साफे** की लम्बाई - **10 गज**
- प्रारंभ में **मेवाड की पगडी** का प्रकार - **खिडकीदार**
- **कबीर बस्ती** प्रसिद्ध है - **ऊनी और सूती वस्त्र निर्माण का केन्द्र (जैसलमेर)**
- **टेरीकोट** खादी के लिये प्रसिद्ध स्थान - **मांगरोल (बारां)**
- पगडी बांधने से संबंधित प्रसिद्ध कहावत - **''राग रसोइया पागडी''**
- मांडपशाही - **कानोड के सामंतों की पगडी**
- हमीरशाही - **बनेडा के सामंतों की पगडी**
- मेवाड की प्रारंभिक पगडी का स्वरूप - **खिडकीदार**

राज. से संबंधित अन्य तथ्य

- पिंक सिटी- जयपुर
- जिंक सिटी- उदयपुर
- ब्लू सिटी- जोधपुर
- यलो सिटी- जैसलमेर
- व्हाइट सिटी- उदयपुर
- हरा सोना- बाँस
- पीला सोना- जोजोबा /होहोबा
- काला सोना- अफीम
- जयपुर फुट - कृत्रिम पैर
- बेयर फुट - कॉलेज, तिलोनिया
- सांभर झील- फुलेरा (जयपुर)
- पन्नालाल शाह तालाब-खेतडी

राज. में प्रथम

- प्रथम विश्वविद्यालय- राजस्थान विश्वविद्यालय (जयपुर)
- प्रथम खुला विश्वविद्यालय- वर्द्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय (कोटा)
- प्रथम पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय- बीकानेर
- प्रथम निजी क्षेत्र का मेडिकल कॉलेज- महात्मा गांधी (सीतापुरा, जयपुर)
- प्रथम आयुर्वेद विश्वविद्यालय- जोधपुर

राज. में प्रमुख उपनाम

- चित्तौडगढ - राजस्थान का गौरव
- रावतभाटा (चित्तौडगढ) - राजस्थान की अणुनगरी
- विजय स्तंभ (चित्तौडगढ) - मूर्तियों का शब्दकोष
- धौलपुर - रैड डायमण्ड
- बांसवाडा - राज. का चेरापूँजी, आदिवासियों का देश

23. आभूषण

बोर

- स्त्रियों द्वारा **मस्तक** पर पहने जाने वाला आभूषण जो कि **सुहाग का प्रतीक** होता है।
- यह आभूषण **सफेद रंग के सीपी** या **कोदीनुमा पदार्थ** का बना होता है।

तिमडियां

- कीमती नगों से बना हुआ आभूषण जो कि महिलाओ द्वारा **गले में** पहना जाता है।

हालरो

- आदिवासी महिलाओं द्वारा पहना जाने वाला **चांदी का हार**।

रमझौल

- **पैरों मे** पहना जाने वाला आभूषण जिसमें **चमडे की एक पट्टी** पर छोटे-छोटे **घुंघरू** जडे होते हैं।

रखडी

- **माथे पर** बांधा जाने वाला **आभूषण।**

गोखरू

- **कलाई** का एक विशेष प्रकार का **नुकीला कडा।**

पुंछि

- **गोखरू** के साथ पहना जाने वाला **आभूषण**

कुडक, नथडी, भवरकडी

- छोटी लडकियों द्वारा **अंगुली** के पहना जाने वाला **छल्लनुमा** आभूषण।

हाथीदांत का चूडा

- राजस्थान में स्त्रियां अपने **सुहाग** के लिये पहनती है।

लाख का चूडा

- **मोली** - मोतियों से निर्मित **लडी** जो **सिर पर** पहनी जाती हैं।
- **मोकडी** - लाख की चूडियां
- **आरसी** - **अंगूठे में** पहना जाने वाला आभूषण
- **मुरकिया** -पुरूषों द्वारा **कान में** पहना जाने वाला आभूषण
- **बंगडी** - **सोने की** बनी हुई **चूडियां**
- **लूमझूम** -**बाजू में** पहना जाने वाला आभूषण
- **तगडी** - **कमर में** पहना जाने वाला आभूषण
- **कांठला** -छोटे बच्चे के **गले में** पहने जाने वाला आभूषण
- **चौकी** - **गले में** पहने जाने वाला आभूषण जिस पर **देवी देवताओं के चित्र** अंकित होते हैं।
- **आंवला** - महिलाओं द्वारा **पैरों में** पहना जाने वाला आभूषण
- **मोरूवर** - मोर रूपी आभूषण जो **कान में** पहना जाता है।

पुरूषों के प्रमुख आभूषण

कान -	लोंग, मुरकिया, एवं छैलकडी
गला -	बलेवडा, चेन
बाजू -	बाजू बंध

स्त्रियों के आभूषण

- **सिर व मस्तष्क** शीशफूल, मेमन्द, बोरला , बोर, रखडी, टीका, फीणी, सांकली, सूरमांग, वामणी, तावित।
- **नाक** - नथ, लोंग, लटकन, कांटा, बारी।
- **कान**- झुनका, बाली, सुरलिया मोरबफर, टॉप्स, बारेठ, ऐरन, पत्ती।
- **गला** - हार, कण्ठी, मटर माला, ठुस्सी, झालर, जंजीर, हसली, पंचलडी, तिमडिया, चम्पाकली, मोहरन, मण्डली, मोहनमाला हालरो, खुंगाली गुलीबंद, जंतर, रानीहार।
- **बाजू** - लूमझूम, ठड्डा, तकमा, बट्टा, हारपान, नवरतन पट, फूंदना।
- **कलाई** - दस्तबंद, चूडियां, पट्टेख पूंचिया, बगडी, गोखरन, मोखडी, कंगन, कांकनी, हथफूल, पूंछियां
- **अंगुली** - छल्ला, अंगूठी, मूंदडी, आरसी (अंगूठे में)
- **कमर** - तगडी, करधनी, कणकती, कंडोर (कंडोरा)
- **पैर** - पायजेब, क्षण, पायल, जोधपुरी जोड, नेवरी, आंवला, हिरनामेन
- **दांत** - **रखन** व **चोंप**

नवरत्न आभूषण

- **माणक, नीलम, पुखराज, तांमडा, हरीक, फिरोजा, तुरमली, दानाफिरंग, चन्द्रमणि।**
- माणक सर्वश्रेष्ठ रत्न हैं इसके नाम पर जयपुर के बडी चौपड का नाम **माणक चौक** रखा गया है।
- रत्न एवं आभूषण प्रशिक्षण के लिये भारत सरकार ने **झालाना महल, जयपुर** में एक संस्थान खोला है - **रत्नशिल्प प्रशिक्षण स्कूल**

स्त्री-पुरूष दोंनों के आभूषण -

सिर	-	**मुकुट**
हाथ	-	**कडा**
दांतों में	-	**रखन व चौंप**
हाथ के अंगूठे में	-	**आरसी**
गले में	-	**मांदलिया**

राज. से संबंधित अन्य तथ्य

चिकारा	-	वाद्य यंत्र (तत्)
लूर	-	गरासिया स्त्रियों का नृत्य
ल्हूर	-	शेखावाटी क्षेत्र में किया जाने वाला अश्लील नृत्य
साहिबद्दीन	-	मेवाड़ शैली चित्रकार
चिंकारा	-	राज्य पशु (वन्य जीव श्रेणी)
लूर	-	घूमर में राजपूत महिलाओं द्वारा नृत्य
मंशा माता	-	आमेर (जयपुर) व उदयपुरवाटी (झुंझुनूं)
मंशा देवी	-	चूरू
लकड़ी का फर्नीचर	-	शेखावाटी क्षेत्र
लकड़ी का नक्काशी वाला फर्नीचर	-	बाड़मेर
तारागढ का किला	-	अजमेर
तारागढ का किला	-	बूँदी

24. प्रथाऐं

सती प्रथा

- राजस्थान में इस प्रथा का प्रचलन सर्वाधिक रहा है – **राजपूत जाति में**
- राजस्थान में **सती प्रथा** को सर्वप्रथम **बंद** कराने का **प्रयास** किया – **जयपुर रियासत**
- सती प्रथा को सर्वप्रथम **प्रतिबन्धित** करने वाली रियासत – **कोटा रियासत**
- भारत में सती प्रथा को **प्रतिबन्धित** करने का प्रयास करने वाला प्रथम व्यक्ति –**राजा राममोहन राय**
- भारत में सती प्रथा को प्रतिबन्धित करने का श्रेय – **लार्ड विलियम बैटिंक (1829)**
- राजस्थान में सती प्रथा को कहा जाता है – **सहगमन**
- राजस्थान में सती प्रथा से संबंधित सबसे चर्चित मामला– **दिवराला (सीकर)**

☞ **4 सित.** 1987 को अपने पति **मालसिंह शेखावत** की मृत्यु पर **रूपकंवर** नामक स्त्री सती हो गयी थी।

☞ **अनुमरण** –पति की अन्यत्र **मृत्यु** होने पर पति के किसी **चिन्ह के साथ** सती होना।

☞ **केसरिया** –युद्ध भूमि में राजपूत योद्धाओं का **वीरगति प्राप्त होना**।

☞ **जौहर** –युद्ध हारने जैसी स्थिति में किले की महिलायें सामूहिक रूप से **आत्महत्या** करती थीं।

☞ **शाका** – **जौहर तथा केसरिया** मिलकर के **शाका** कहलाता है।

☞ **अर्द्धशाका** –इसमें केसरिया होता है किन्तु **जौहर** नहीं होता है।

बाल विवाह

- राजस्थान मे बाल विवाह रोकने के लिये ने आंदोलन चलाया – **हर विलास शारदा**
- **हर विलास शारदा** के निवासी थे – **अजमेर**
- **हर विलास शारदा** के प्रयासों से 1929 में बाल विवाह निरोधक अधिनियम प्रस्तावित किया गया।
- यह अधिनियम **सम्पूर्ण देश** में लागू हुआ – **1930 में**
- बाल विवाह अधिनियम को कहा जाता है – **शारदा एक्ट**
- विधवा पुर्नविवाह के लिये प्रयास करने वाले प्रमुख व्यक्ति– **ईश्वर चंद विद्या सागर**
- **1856** में **विधवा पुर्नविवाह** अधिनियम लागू किया गया – **डलहौजी के समय**

दहेज प्रथा

- आधुनिक समय में महिलाओं से जुडी सबसे प्रमुख कुप्रथा – **दहेज प्रथा**
- भारत में दहेज प्रथा निवारक **अधिनियम** पारित हुआ – **1961 में**

बेगार प्रथा

- **बिना मेहनताना** दिये काम करवाना
- यह प्रथा स्वतंत्रता प्राप्ति के **पश्चात्** स्वत: ही समाप्त हो गयी।

बंधुआ मजदूर

- बंधुआ मजदूर प्रथा को अन्य नाम से भी जाना जाता है – **सागडी प्रथा/ हाली प्रथा**
- **पूंजीपति** या **महाजन** साधन हीन व्यक्ति को उधार दी गयी राशि के रूप में उसके परिवार के किसी सदस्य को अपने यहां **नौकर** रखते थे, ये नौकर **बंधुआ मजदूर** कहलाते थे।
- बन्धुआ मजदूरी रोकने के लिये **1961 में** अधिनियम पारित हुआ इसे ''**सागडी निवारण अधिनियम**'' कहते हैं।

दास प्रथा

- युद्ध जीतने के बाद **बंदी** बनाये गये **सैनिकों** को तथा खरीद कर लाये गये व्यक्ति को नौकर के रूप में **दास** बनाया जाता था इन्हें आजीवन **दास** रखा जाता था।
- सर्वप्रथम **कोटा, बूंदी** रियासत में **1815 में** दास प्रथा को बंद किया।

डाकन प्रथा

- यह प्रथा मुख्य रूप से **भील एवं मीणा** समाज में प्रचलित थी।
- इसे सर्वप्रथम **उदयपुर** रियासत में **1853** में गैर कानूनी घोषित किया।

कन्यावध प्रथा

- कन्यावध प्रथा सर्वाधिक **राजपूतों में** प्रचलित थी।
- इसे सर्वप्रथम **कोटा** रियासत ने **1833** में प्रतिबंधित किया।

मानव व्यापार

- मानव व्यापार पर सर्वप्रथम **रोक** लगाने का श्रेय – **कोटा** रियासत **1831** मे
- **मानव व्यापार** को सर्वप्रथम **जयपुर** रियासत ने **अवैध** घोषित किया–**जयपुर**

समाधि प्रथा

- इसे **जयपुर** रियासत ने सर्वप्रथम **1844** में **गैर कानूनी** घोषित किया गया।

पर्दा प्रथा

- **समाज सुधार आंदोलन** के दौरान इसका सर्वाधिक **विरोध** किया गया।
- पर्दा प्रथा **मुस्लिम समाज** की देन है।

आदिवासियों से जुडी प्रथायें

डाबरिया प्रथा

- राजा **महाराजाओं** तथा **जागीरदारों** को विवाह समय **दासियां** भेंट की जाती थीं, जिन्हें **डावरिया** कहा जाता था।

डाम प्रथा

- यह **भीलों** में सर्वाधिक प्रचलित प्रथा है।
- इसके अन्तर्गत गरम **ठीकरी हाथों पर रखकर उसे दागा** जाता था जिसे आदिवासियों में **बीमारियों को भगाने** का प्रतीक माना जाता था।

हाथी पैडी

- आदिवासी लोग **वृक्ष को साक्षी** मानकर विवाह करते थे यह प्रथा **हाथी पैंडो** कहलाती थी।

हाथीमना प्रथा

- भील पुरूष **तलवारों** को घुमाते हुये **घुटने टेक** कर **नृत्य** करते थे।

पाती मांगना

- कंजर जाति के लोग **अपराध** करने से पूर्व **ईश्वर का आशीर्वाद** प्राप्त करते थे, इसे **पाती मांगना** कहते हैं।

लोकायी या कांदिया

- आदिवादियों में **मृत्यु भोज की प्रथा** को **कांदिया या लोकायी प्रथा** कहा जाता है।

नातरा प्रथा

- आदिवासियों में विधवा स्त्री के **पुनर्विवाह** को **नातरा** कहा जाता है।

दापा प्रथा

- जनजातीय क्षेत्रों में **स्त्री को भगाकर** ले जाने पर **पंचायत** के समक्ष **स्त्री का मूल्य चुकाने की परंपरा**।

बढालिया

- आदिवासियों में विवाह की मध्यस्थता करने वाले व्यक्ति को **बढालिया** कहा जाता था।

पासवान

- जो दासियां **उप पत्नि** के रूप में रखीं जाती थीं उन्हें **पासवान** कहा जाता था। इन्हें **पडदायल** भी कहा जाता था।

नाता प्रथा

- **पति को छोडकर** या पति की मृत्यु होने पर दूसरे पुरूष के साथ **वैवाहिक जीवन** जीने की परंपरा।

चारी प्रथा

- राजस्थान में जनजातियों में वर पक्ष द्वारा वधू पक्ष को **पैसे (धन) देने की परंपरा**।

कूकडी की रस्म

- **सांसी जनजाति** में विवाह के पश्चात् वधू द्वारा अपने **चरित्र की परीक्षा** देने की रस्म।

अन्य रीति–रिवाज

रियाण (मनुहार)

- पश्चिमी राजस्थान में महत्वपूर्ण अवसरों पर सभी व्यक्तियों के लिये **अफीम पिलाने** की परंपरा **रियाण या मनुहार** कहलाती है।
- इस परंपरा पर भारत **सरकार द्वारा रोक** लगायी गयी है।

संथारा

- जैन धर्म में जब कोई साधारण व्यक्ति **अन्न जल त्याग** करके निर्वाण (मोक्ष) प्राप्त करने को **प्राणोत्सर्ग** करता है तो उसे **संथारा** कहा जाता है।

संलेखना

- जैन धर्म के आचार्य या साधु संतों द्वारा निर्वाण प्राप्त करने के लिये जब **देह त्यागी** जाती है तो उसे **संलेखना** कहते हैं।

25. रीति–रिवाज

- मानव जीवन में जन्म से लेकर महत्वपूर्ण अवसरों पर कुछ **परंपरायें** अपनाई जाती हैं।
- **सनातन धर्म** (हिन्दु धर्म) में मानव जीवन में **16 संस्कार** संपादित किये जाते हैं –

1.	**गर्भाधान**	2.	**पुंसवन**
3.	**सीमन्तोन्नयन**	4.	**जातकर्म**
5.	**नामकरण**	6.	**निष्क्रमण**
7.	**अन्नप्राशन**	8.	**चूडाकर्म या जडूला**
9.	**कर्णवेद्य**	10.	**विद्यारम्भ**
11.	**उपनयन**	12.	**वेदारम्भ**
13.	**केशान्त या गोदान**	14.	**समावर्तन (दीक्षान्त)**
15.	**विवाह (पाणिग्रहण)**	16.	**अंत्येष्टि**

जन्म संबंधी रीति रिवाज

- ☞ **आख्या पूजन**–बच्चे के जन्म के **आठवें दिन** परिवार की **बहिन बेटियों को बुलाकर** कुछ भेंट प्रदान की जाती हैं।
- ☞ **कुआँ पूजन** – इसे **जलवा पूजन** भी कहा जाता है।
- ☞ **नामकरण** –बच्चे के जन्म के **11वें या 10वें** दिन बच्चे का **नामकरण** किया जाता है।
- ☞ **चूणाकर्म**/ –बच्चे के **5 महीने** के होने पर उसके **बालों को कटवाया** जाता है।

झडूला/मुण्डन

- ☞ **पछ/जामणा** – **कुआ पूजन** के समय **जच्चा-बच्चा को मामा द्वारा दी जाने वाली भेंट**।

विवाह संवंधी रीति-रिवाज

- ☞ **सगाई** – लडके को **रिश्ता पक्का** करने कीप्रक्रिया।
- ☞ **टीका** – लडकी वाला लडका पक्ष को कुछ **राशि व वस्त्र** भेंट करता है।
- ☞ **लग्न पत्रिका** – कन्या पक्ष द्वारा **विवाह कार्यक्रम** पण्डित द्वारा **लिखवाकर** लडके पक्ष को भेजा जाता है।
- ☞ **कुमकुम पत्रिका** – वर तथा वधु दोंनों पक्षों द्वारा अपने–अपने **संबंधियों को** विवाह में **आमंत्रित** करने हेतु **विवाह कार्यक्रम** लिखवाकर भिजवायी जाती है।
- ☞ **विनायक पूजा** – विवाह **सकुशल संपन्न** होने की प्रार्थना के साथ विवाह के तीन दिन पूर्व **गणेश जी की पूजा** की जाती है।

6. **बरी-पाडला (बारौठी)**:–वर पक्ष द्वारा वधू के लिये **मेंहदी, वस्त्र, आभूषण** आदि खरीदकर लाये जाते हैं।
7. **बत्तीसी नूतना (भात नौतना)**–विवाह के पूर्व **वर एवं वधू** की माताओं द्वारा अपने **मायके** वालों को विवाह में आमंत्रित करने हेतु **पीहर जाना**।
8. **मोड बांधना** –विवाह के दिन **कन्या पक्ष** के यहां जाने से पहले सुसज्जित होकर वर द्वारा अपनी **मां का आंचल पीने की परम्परा**।

9. **टूटियों की रस्म** (खोइया) :- बारात के जाने के **पश्चात्** वर पक्ष की महिलाओ द्वारा **वर के घर पर** मनोरंजन पूर्ण कार्यक्रम।

10. **सामेला/मधुपर्क/** :- वर के वधु पक्ष के **घर पहुंचने** पर अपने संबंधी **ठुमाव/भांग का नेग** के साथ वधू के पिता **बारातियों का स्वागत** करता है जिसमें बारात के मुख्य व्यक्तियों को **कुछ भेंट** प्रदान की जाती है।

11. **चंवरी छाना :- मण्डप छाना,** विवाह स्थल पर **बांसों का मण्डप** बनाया जाता है।

12. **तोरण मारना :- लकडी** का बना **मांगलिक चिन्ह** जिसे कन्या पक्ष के दरवाजे पर **लटकाया** जाता है एवं विवाह के दिन उसे वर द्वारा **तीन बार छूने की परंपरा** है।

13. **बढ़ार :-**विवाह के **एक दिन बाद** दिया जाने वाला **सामूहिक भोज**।

14. **जौंनार (माड्या)** - विवाह के एक दिन पूर्व दिया जाने वाला **सामूहिक भोज**।

15. **मायरा (भात)-मामा पक्ष** द्वारा लडकी तथा लडके के यहां **वस्त्र तथा आभूषण भेंट करना**।

16. **बिंदोली** - विवाह से एक दिन पूर्व **घूरा पूजने** की परंपरा।

17. **रंगवरी/ सिमटावड़ी/** - बारात की **विदा के सयम** वधू पक्ष द्वारा प्रत्येक **बाराती** को **समठडी** दी जाने वाली भेंट **(मिलनई) भात या पछ** के समय की जाने वाली **मिलना** को **पहरावणी** कहा जाता है।

18. **मुकलावा** - विवाह के बाद जब पहली बार वर वधू को **लेने** जाता है उस समय वर के लिये कुछ भेंट प्रदान की जाती है उसे **मुकलावा** कहा जाता है । **(मांडा झांकना)**

19. **गौना** - बाल विवाह की स्थिति में **5 या 7 साल बाद** वर वधू को लेने जाता है, उसे **गौना** कहा जाता है।

दु:खद अवसरों के रीति रिवाज

☞ **बैकण्ठी (काठी)**- मृतक को शमशान तक ले जाने के लिये **बांस एवं लकडी** की बनायी जाता है।

☞ **बखेर** - शव को शमशान ले जाते समय **पैसे बखेरने की परंपरा**।

☞ **पिण्डदान** -शमशान ले जाते समय प्रथम चौराहे पर **आटे के बने पिण्ड को गाय को खिलाने** की परंपरा।

☞ **आघेटा** - शव को श्मशान ले जाते समय मध्य रास्ते में **बैकुण्ठी** में लगे व्यक्तियों की **दिशा बदलने** की परंपरा।

☞ **अंत्येष्टि** - शव को श्मशान में चिता पर चिनकर बडे पुत्र द्वारा **चिता की तीन परिक्रमा** कर मुखाग्नि देने की परंपरा।

☞ **सांतर वाड़ा** - दांह संस्कार में शामिल होने वाले व्यक्ति **स्नान करने के बाद** शोक संतृप्त परिजनों को ढांढस बधाने के लिये उनके घर जाते हैं, जिसे **सांतर वाडा** कहा जाता है।

☞ **तीया/ तीजा** - मृत्यु के तीसरे दिन मृतक के घर पर **तीये की बैठक** होती है।

☞ **लोकायी/ कांदिया** - तीजे के एक दिन **पात्र में जल** रखा जाता है तथा कौओं को खाने के लिये चावल रखे जाते हैं तथा तीये की बैठक में आने वाले व्यक्तियों को चावल खिलाये जाते हैं जिसे **कांदिया या लोकायी** कहा जाता है।

☞ **फूल चुनना** - मृत्यु के तीसरे दिन शमशान से मृतक की **दाड, दांत व हड्डियों को चुनकर** लाते हैं जिसे **गंगा विसर्जन** हेतु ले जाया जाता है। इसे चुनकर लाने की परंपरा को **फूल चुनना** कहते हैं।

☞ **मौसर - मृत्युभोज** (मृत्यु के 12वें दिन)

☞ **जौसर** - व्यक्ति के **जीवित रहने** पर **स्वयं द्वारा मृत्यु भोज** आयोजित करना **जौसर** कहलाता है।

☞ **पगडी** - मृतक के सबसे बडे पुत्र को मौसर के दिन **उत्तराधिकारी** घोषित करने के लिये पगडी पहनाई जाती है जिसे पगडी रस्म कहा जाता है।

☞ **मौताणा** - आदिवासियों में किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाने पर जिस से मृत्यु हुयी है उससे पैसे लेने की परंपरा।

☞ **बरसी - 12 माह के ब्राह्मण भोज**।

☞ पहली बरसी **मौसर** के **साढे ग्यारह माह बाद** आयोजित की जाती है।

☞ **श्राद्ध** - मृत्यु वाले दिन **आश्विन माह के कृष्ण पक्ष** में **श्राद्ध** मनाये जाते हैं।

राज. से संबंधित अन्य तथ्य

● लकड़ी की मूर्ति वाला मंदिर	- नागणेची माता का मंदिर (बाडमेर)
● लकड़ी का बना महल	- काठ का रेन बसेरा (झालावाड़)
● एक जैसे नौ महल	- नाहरगढ़ (जयपुर)
● एक जैसे सात महल	- सामोद महल (चौमूं- सामौद, जयपुर)
● मुबारक महल	- टोंक (ऊँट की कुर्बानी हेतु प्रसिद्ध)
● मुबारक महल	- जयपुर (मेहमानवाजी हेतु प्रसि)
● सबसे बडा उद्यान	- छत्र विलास (कोटा)
● सबसे बडा जन्तुआलय	- जयपुर जन्तुआलय
● सबसे बडी रियासत	- जोधपुर
● सबसे छोटी रियासत	- शाहपुरा (भीलवाडा)
● सबसे बडा पशु मेला	- श्री वीर तेजाजी पशु मेला (नागौर)
● सबसे बडा विश्वविद्यालय	- राजस्थान विश्वविद्यालय (जयपुर)
● प्रथम राजस्थानी लोकप्रिय फिल्म	- बाबासा री लाडली
● प्रथम राजस्थानी रंगीन फिल्म	- लाज राखो राणी सती
● प्रथम राजस्थानी बाल फिल्म	- डूंगर रो भेद
● एवरेस्ट की चोटी पर चढने वाला प्रथम राजस्थानी	- सौरभ शेखावत (अलवर)
● इंग्लिश चैनल तैरकर पार करने वाली प्रथम राजस्थानी महिला	- भक्ति शर्मा (उदयपुर)
● विदेश में प्रदर्शित और पुरस्कृत प्रथम राजस्थानी फिल्म	- बवंडर

26. बोलियाँ

- **1800 ई.** में **सर जार्ज थामस** ने सर्वप्रथम **राजपूताना** शब्द का उल्लेख किया।
- **1829 ई.** में **कर्नल जेम्स टॉड** ने अपनी कृति **एनाज्स एण्ड एण्टीक्यूटीज ऑफ राजस्थान'**' में राजस्थान शब्द का उल्लेख किया है।
- इन्हीं शब्दो के नाम पर **राजस्थान प्रदेश** की भाषा का नाम **राजस्थानी** पडा है।
- राजस्थानी भाषा का सर्वप्रथम वैज्ञानिक वर्गीकरण विदेशी विद्वान **ग्रियर्सन** ने अपनी कृति **'लिंग्वीस्टिक सर्वे ऑफ वर्नाकुलेचर लिर्टेचर ऑफ हिन्दुस्तान'** नामक कृति में वर्णन किया है।
- 1961 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में **73** बोलियां प्रचलित थीं।
- पश्चिमी राजस्थान की बोलियां – **मारवाडी, मेवाडी, बागडी और शेखावाटी।**
- पूर्वी राजस्थानी की बोलियां – **ढूंढाडी (जयपुरी), हाडौती, मेवाडी और अहीरवाटी।**
- राजस्थानी भाषा सामान्यत: **देवनागरी लिपि में लिखी जाती है।**
- राजस्थानी भाषा का उद्‌भव शौरसैनी अपभ्रंश से हुआ है।
- राजस्थानी भाषा को **बही खाते** में लिखी जाने वाली लिपि – **महाजनी लिपि।**
- प्राचीन समय में राजस्थानी भाषा को **मरूभाषा** के नाम से जाना जाता है।
- राजस्थानी भाषा भारत की प्राचीन भाषाओं में से एक है।
- पश्चिमी राजस्थानी का साहित्यिक रूप – **ड्रिंगल भाषा**
- पूर्वी राजस्थान का साहित्यिक रूप – **पिंगल भाषा।**

मारवाडी

- राजस्थान में बोलने वालो की संख्या की **दृष्टि** से व **क्षेत्रफल** की दृष्टि से **मारवाडी बोली** का प्रथम स्थान है।
- **क्षेत्र** – जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, पाली, नागौर, जालौर, एवं सिरोही।
- मारवाडी को राजस्थान की **मानक बोली** माना गया है।
- सर्वाधिक **जैन साहित्य** मारवाडी में ही लिखा गया है।
- विशुद्ध मारवाडी **जोधपुर** में बोली जाती है।

मेवाडी

- **क्षेत्र** – उदयपुर, चित्तौडगढ, भीलवाडा।
- कुम्भा ने अपने नाटकों में मेवाडी का ही प्रयोग किया है।

ढूंढाडी (झाडशाही बोली)

- **क्षेत्र – जयपुर, किशनगढ, टोंक, दौसा, अजमेर।**
- **दांदू पंथ** का अधिकांश साहित्य एवं उपदेश **ढूंढाणी** बोली में ही मिलते हैं।
- बाइबिल का अनुवाद भी **ढूंढाणी** में किया गया है।
- **ढूंढाणी की उपबोलियां** – हाडौती, किशनगढी, तोरावाटी राजावाटी, अजमेरी, चौरासी,नागरचोल।

हाडौती

- **क्षेत्र – कोटा, बूंदी**

बागडी

- **क्षेत्र – डूंगरपुर, बांसवाडा**
- इस बोली को **भीलों की भापर** नाम से जाना जाता है।
- ग्रियर्सन ने बागडी बोली को **भीली** नाम दिया है।

मालवी

- मालवी बोली **मालवा के पठार** से जुडे भू-भाग **कोटा, झालावाड, प्रतापगढ, चित्तौड** आदि के समीपवर्ती भागों में बोली जाती है।
- उपबोलियां – **निमाडी, रतलामी, उमठवाडी।**

रागडी

- राजपूतों में प्रचलित बोली।
- **रागडी मारवाडी और मालवी** के सम्मिश्रण से उत्पन्न बोली है।
- **क्षेत्र** – राजसमंद, भीलवाडा व अजमेर के आस पास का क्षेत्र।

मेवाती

- **मत्स्य क्षेत्र** (अलवर, भरतपुर का मेवाती क्षेत्र) में बोले जाने वाली बोली।
- मेवाती बोली पश्चिमी हिंदी (पूर्वी राजस्थानी) व राजस्थानी के बीच **सेतु** का कार्य करती है।

अहीरवटी

- अहीरवटी बोली मुख्यत: राजस्थान के **राठ क्षेत्र** (अलवर) में बोली जाती है।
- अहीरवटी का दूसरा नाम **राठी** बोली है।
- अहीरवटी हीरवाल क्षेत्र की प्रमुख बोली है।
- राजस्थान के प्रसिद्ध साहित्यकार **जोधराज** ने **हम्मीर रासो** की रचना सी हीरवाल क्षेत्र में की है।
- यह बोली **मेवाती व हरियाणा** के मध्य की बोली है।

तोरावटी

- तोरावाटी बोली राजस्थान के तोरावाटी क्षेत्र (**कांतली**) नदी का तटीय क्षेत्र) में बोली जाती है।

काठडी

- जयपुर जिले के **दक्षिणी भाग** में।

चौरासी

- जयपुर का दक्षिणी-पश्चिमी भाग व **टोंक का पश्चिमी भाग।**

राजावाटी

- **जयपुर जिले के पूर्वी भाग में।**

नागर चोल

- सवाई माधोपुर का पश्चिमी भाग व **टोंक का दक्षिणी पूर्वी भाग** (जयपुर का समीपवर्ती भाग)

♦ राजस्थानी साहित्य को मुख्यत: **तीन चरणों** में विभक्त किया जा सकता है –

(1) मारू साहित्य – 1050-1450 ई. तक

(2) जैन साहित्य – 1450-1857 ई. तक

(3) राष्ट्रीय भावना एवं जन भावना पर केन्द्रित साहित्य **-1857-आज तक।**

27. साहित्य की विधाऐं

1. **ख्यात साहित्य** – राजस्थान में देशी राजाओं ने अपनी **मान मर्यादा** को इतिहास के रूप में अपने दरबारी कवियों (चारण/भाट) द्वारा लिखवाया जाता था जो ख्यात साहित्य कहलाता है। जैसे – **मुहणौत नैणसी री ख्यात, दयाल दास री ख्यात।**
2. **वचनिका** – **अपभ्रंश** मिश्रित राजस्थानी साहित्य की **तुकान्त** ग़द्य पद्य रचना को वचनिका कहा जाता है जिसमें **अन्त्यानुप्रास अलंकार** मिलता है।
   उदाहरण **अचलदास खींची री वचनिका।**
3. **दवाबैंत साहित्य** – उर्दू फारसी मिश्रित राजस्थानी भाषा का कलात्मक गद्य रूप दवाबैंत साहित्य कहलाता है।
4. **वात साहित्य** – ऐतिहासिक, पौराणिक, काल्पनिक आदि **कथानकों** पर कहानी कहने एवं सुनने की एक विशेष प्रणाली जिसमें कथा कहने वाला कथा कहता है तथा सुनने वाला **हूंकारा** भरता है।
5. **वेलि साहित्य** – राजस्थान का डिंगल साहित्य जिसमें राजा महाराजाओं तथा सामंतों की एतिहासिक, वीरता, स्वामी भक्ति, उदारता प्रेम भावना का उल्लेख मिलता है।
   जैसे – **वेली किसन री रूक्मणी।**
6. **रासो साहित्य** –राजाओं की प्रशंसा में लिखे गये **काव्य ग्रंथ** जिनमें उनके राजवंश का भी वर्णन होता है जिसे **पृथ्वी राज रासो, खुमाण रासो, हम्मीर रासो।**
7. **विगत साहित्य** – इतिहास परख ग्रंथ लिखने की एक **लेखन शैली।**
   जैसे –**मारवाड रा परगना री विगत (मुंहणौत नैणसी)**
   मारवाड रा परगना री विगत को राजस्थान का **गजेटियर** कहा जाता है।

राजस्थानी साहित्य की महत्वपूर्ण कृतियाँ

1. **मारू गुर्जर प्रतिहार साहित्य – राजस्थान का सबसे प्राचीन साहित्य**
2. **जैन साहित्य – राजस्थानी भाषा का सबसे प्राचीन ग्रंथ-भरतेश्वर**
   कुवलम माला – **अद्योतन सूरी**
   धूर्ताख्यान – **हरिभद्र सूरी**
3. **चारण साहित्य –**

- **पृथ्वीराज रासो – चन्द्रबरदाई**
- पृथ्वी राज रासौ में अजमेर के शासक **पृथ्वीराज तृतीय** के जीवन काल का वर्णन है।
- पृथ्वीराज रासौ में **चन्द्रबरदाई** के द्वारा राजपूतों की उत्पत्ति **अग्नि कुण्ड** से बताई गयी है।
- काहन्ड देव प्रबन्ध – **पद्मनाभ**
- यह कृति **जालौर** के शासक **काहन्ड देव** से संबंधित ।
- **काहन्ड देव** प्रबंध में जालौर के **चौहान (सौनगरा) वंश** का वर्णन है।
- इस कृति में **काहन्ड देव** और **अलाउद्दीन खिलजी** के मध्य हुये युद्ध का वर्णन है।
- अचलदास खींची री वचनिका – **शिवदास गांगल**
- अचलदास खींची री वचनिका में **गागरौन के खींची राजवंश** का वर्णन मिलता है।
- राव जैतसी रो छंद – **बीठू सूजा**
- राव जैतसी रो **छंद** में **बीकानेर राज घराने** का इतिहास मिलता है।
- राव जैतसी को **राजस्थान का भागीरथ** कहा जाता है।
- बेलि किसन री रूक्मणी – **पृथ्वी राज राठौड**
- यह **डिंगल भाषा** की महत्वपूर्ण **कृति** है।
- बेलि किसन री रूक्मणी को **5 वां वेद** व **19वां पुराण** माना जाता है।
- पृथ्वीराज राठौर **बीकानेर** के **शासक रायसिंह** के भाई **कल्याण मल** का पुत्र था।
- चेतावनी री चूंगट्या – **केसरी सिंह वारहठ**
- **जैसलमेर का गुण्डाराज – सागर मल गोपा**
- **सागरमल गोपा** जैसलमेर राज्य के एक युवा क्रांतिकारी थे। जिनको कि **जेल में जिंदा** जला दिया गया।
- ढोला मारू रा दूहा – **कवि कल्लोल**
- कनक सुन्दर – **शिव चन्द्र भरतिया**
- **कनक सुंदर** राजस्थान का प्रथम उपन्यास है
- राजस्थानी भाषा का **शब्दकोष – सीताराम लालस**
- मुण्डियार री ख्यात – **मुण्डाय (चारण कवि)**
- यह कृति जोधपुर के **राठौर** राजवंश से संबंधित है।
- **मुण्डियार री ख्यात** में **जहांगीर** की पत्नि **जोधावाई** को **उदयसिंह की पुत्री** के बजाय बहिन बताया गया है।
- पद्मावत – **मलिक मोहम्मद जायसी**
- पद्मावत मेवाड राजघराने के **गुहिल** शासक **रतनसिंह** से संबंधित है।
- सूर्यमल मिश्रण – **सूर्यमल मिश्रण** बूंदी रियासत के **दरबारी कवि** थे।
- सूर्यमल मिश्रण बूंदी के शासक **भावसिंह** के दरबार में रहते थे।
- इनके द्वारा दो महत्वपूर्ण कृतियों की रचना की गयी
- **वंश भास्कर – पिंगल भाषा**
- **वीर सतसई – डिंगल भाषा**
- वंश भास्कर में बूंदी के शासक **भावसिंह** के इतिहास का वर्णन है (बूंदी राजवंश)
- **वीर सतसई** वीर रच से पूर्ण एक क्रांतिकारी रचना है जिसमें **राष्ट्रीय भावना** का उल्लेख मिलता है।
- **हरिकेली –ललित विग्रह राज चतुर्थ/बीसलदेव**
- हरिकेली में **अजमेर राजवंश** से संबंधित **चौहान वंश** का वर्णन है।
- ललित विग्रह राज – **सोम देव**
- सोमदेव बीसल देव के **दरबारी कवि** थे।
- वीर विनोद – **श्यामलदास**

- श्यामलदास को **अंग्रेजो** के द्वारा **केसर-ए-हिन्द** की उपाधि दी गयी।
- बीसलदेव रासो - **नरपति नाल्ह**
- इस कृति में अजमेर के चौहान शासक **बीसलदेव** एवं उनकी **3 पत्नियां** रामती की प्रेम गाथा का श्रेय रूप में वर्णन है।
- मुहणौत नैवसी री ख्यात - **मुहणौत नैणसी**
- इस कृति में **मारवाड का इतिहास** वर्णित है।
- मुहणौत नैंणसी **जोधपुर** के शासक **जसवंत सिंह** के दरबारी कवि थे।
- मुहणौत नैणसी को **राजस्थान का अबुल फजल** कहा जाता है।
- मुहणौत नैणसी को राजस्थान का अबुल फजल **मुंशी देवी प्रसाद** द्वारा कहा गया है।

मारवाड रा परगना री विगत - **मुहणौत नैणसीं**

- इस कृति में **मारवाड का इतिहास** लिखा हुआ है।
- यह अपने प्रकार की प्रथम कृति है जिसमें इतिहास लिखने का सर्वप्रथम प्रयास किया गया है।
- मारवाड रा परगना री विगत को **राजस्थान का गजेटियर** भी कहा जाता है।
- दयाल दास री ख्यात - **दयाल दास**
- इस कृति में **बीकानेर** के **राठौर शासकों** का वर्णन मिलता है।
- बांकी दास री ख्यात - **बांकी दास**
- इस ख्यात में **जोधपुर** के शासकों का वर्णन मिलता है।
- बांकी दास री ख्यात - **बांकी दास**
- इस ख्यात में **जोधपुर** के शासकों का वर्णन मिलता है।
- **बांकी दास मानसिंह** के दरबारी कवि है।
- विजयपाल रासौ - **नल्लसिंह**
- **विजयपाल रासौ** में **करौली** के **यादव राजवंश** का वर्णन है।
- नल्लसिंह के द्वारा इस कृति में **करौली** के शासक **विजयपाल** की **दिग्विजय** का वर्णन है।
- खुमाण रासौ - **दलपति विजय (जैन कवि)**
- खुमाण रासौ में **चित्तौड** के **खुमाण वंश** का वर्णन है।
- इस कृति में चित्तौड के शासक **खुमाण** से लेकर **संग्राम सेन** तक की जानकारी मिलती है।

अन्य महत्वपूर्ण कृतियां

कृति	रचनाकार
हम्मीर महाकाव्य	**नयन चन्द्र सूरी**
हम्मीर रासौ	जोधराज
हम्मीर रासौ	**सारंग धर**
एकलिंग महाकात्म्य	**कान्हण व्यास**
पृथ्वीराज विजय	**जयानक**
प्रबन्ध कोष	**भट्ट सदाशिव**
प्रबन्ध चिन्तामणि	**मेरूतंग**
सुर्जन चरित्र	**चन्द्रशेखर**
अमर सार	**जीवाधर**

- Travels and western Indians state -**कर्नल जेम्स टॉड**
- What are the Indian State- **विजयसिंह पथिक**
- **नरसी जी रो मायरौ** - **रतनाखाती**
- **शिशुपाल वद्य** - **माघ**
- माघ का संबंध भीनमाल जालौर से रहा है।
- राजस्थान के रणबांकुरे - **राजेन्द्रसिंह राठौड**
- इस कृति में **कारगिल युद्ध में हुये शहीदों** के बारे में उल्लेख मिलता है।
- **बृजराज** -उदयपुर के महाराजा **जबानसिंह** ब्रजराज उपनाम से ब्रज भाषा में साहित्य का **सृजन** करते थे।
- **ब्रजनिधी** - आमेर के शासक **सवाई प्रतापसिंह** ब्रजनिधि उपनाम से साहित्य लिखते थे।

राज. से संबंधित अन्य तथ्य

सबसे छोटा नगर	- बोरखेडा (बांसवाडा)
सबसे बडा रिहायशी महल	- उम्मेद भवन या छीतर पैलेस (जोधपुर)
सबसे ऊँचा पठार	- उडिया पठार (सिरोही)
सबसे बडी दुग्ध डेयरी	- रानीवाडा (जालौर)
सबसे बडा टायर ट्यूब कारखाना	- कांकरोली (राजसमंद)
12 भाईयों का मेला	- बाडी (धौलपुर)
12 भाईयों का चौराहा	- नाहरगढ चौराहा (जयपुर)
पानी वाले बाबा	- राजेन्द्र सिंह (अलवर)
पानी वाली बहनजी	- विमला कौशिक (बीकानेर)
मेवाड़ का भीष्म पितामह	- राणा चूड़ा
प्रथम राजस्थानी भाषा का उपन्यास	- कनक सुंदर
प्रथम राजस्थानी भाषा का नाटक	- केसर विलास
प्रथम राजस्थानी का हिन्दी उपन्यास	- अबलाओं का इंसाफ
प्रथम राजस्थानी फिल्म	- नजराना
प्रथम राजस्थानी अभ्निनेता	- महीपाल (नजराना)
प्रथम राजस्थानी अभिनेत्री	- सुनैना (नजराना)
प्रथम राजस्थानी निर्माता	- जी.पी.कपूर (नजराना)
गंभीरी नदी	- चित्तौडगढ
गंभीर नदी	- महावीर जी (करौली)
मणिहार	- लाख का काम करने वाली जाति
मांगणियार	- पश्चिम राजस्थान में गाने-बजाने वाली जाति

विषय-सूची

1. लोक नृत्य
2. लोक नाट्य
3. लोक वाद्य
4. चित्रशैली
5. लोक कला
6. लोक गीत
7. लोक संगीत
8. शास्त्रीय संगीत
9. हस्तकला
10. लोक सम्प्रदाय
11. लोक संत
12. लोक देवता
13. लोक देवी
14. प्रमुख धर्म
15. दुर्ग
16. हवेलियाँ
17. मंदिर
18. मूर्तिकला
19. अन्य स्थापत्य
20. प्रमुख त्योहार
21. प्रमुख मेले
22. वेशभूषा
23. आभूषण
24. प्रथाऐं
25. रीति-रिवाज
26. बोलियाँ
27. साहित्य की विधाऐं